CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

...वक्तव्य

...शी आंदोलन भारत के राष्ट्रीय विकास के चिरस्मरणीय मूलस्तंभ हैं। १९०५ में बंग-भंग के ... उत्तेजित होकर भारतीय आत्मा ने अपूर्व राष्ट्रीय भाव... नव-निर्माण की प्रवृत्ति को प्रकट किया था। १९०५ ... का समय था ही अत्यंत ओजस्वी यद्यपि हममेंसे बहुतों को उसकी आज सजीव स्मृति नहीं। उस आंदोलन में श्रीअरविन्द का क्या भाग था यह ठीक ठीक बतलाना इतिहासकार का काम है, परंतु इतना निश्चित है कि श्रीअरविन्द के दो अंग्रेजी पत्र 'बन्दे मातरम्' और 'कर्मयोगिन्' उस समय राष्ट्रीय भावना के अग्रिम संदेश-वाहक थे और वे सारे देश में बड़ी उत्सुकता से पढ़े जाते थे। आज के अनेक नेताओं ने अपनी प्रथम राष्ट्रीय प्रेरणा उन पत्रों से ही प्राप्त की थी। परंतु श्रीअरविन्द का राष्ट्रवाद एक मौलिक और आध्यात्मिक राष्ट्रवाद था।

ऐसे राष्ट्रवाद का सेवक और नेता कर्मयोगी ही हो सकता था। उसीके राष्ट्रीय नव-निर्माण के आदर्श का निरूपण श्रीअरविन्द ने 'The Ideal of the Karmayogin' नाम की एक लेखमाला में किया था। उन्होंने तब उद्घोषित किया था—"हमारा लक्ष्य होगा मानवता की खातिर भारतवर्ष के निर्माण किये जाने में सहायता करना—राष्ट्रवाद की यही भावना है जिसे हम मानते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं

जिसका हम ... उठाना
वह समय आ गया है जब तुझे ... च्चतर,
चाहिये और भौतिकताग्रस्त जीवन से ... ये
गंभीरतर और विस्तीर्णतर जीवन की ...
मनुष्य मात्र गति कर रहा है। जिन समस्याओं ने ... को पीड़ित कर रखा है उनका हल ... केवल अंदर का ... ने से ही किया जा सकता है,—प्रकृति की शक्तियों को आराम और विलास के काम में लाने से नहीं, परंतु बुद्धि और आत्मा की शक्तियों का स्वामी बनने से, मनुष्य की बाह्य तथा आंतरिक स्वतंत्रता को स्थापित करने से, और बाह्य प्रकृति पर अंदर से विजय पाने से'।" आधुनिक इतिहास हमारे सामने राष्ट्रवाद और विश्वबंधुत्व के सिद्धांतों को परस्परविरोधी क्रिया-प्रतिक्रिया के रूप में उपस्थित करता है। या तो हमें उग्र राष्ट्रवाद मिलता है और या फिर ढीला-ढाला विश्वबंधुत्ववाद। श्रीअरविन्द ने तभी कहा था, राष्ट्रवाद को अपने आपको "विश्वबंधुत्व में सुरक्षित रखना चाहिये कुछ वैसे ही ढंग से जैसे व्यक्ति अपने आपको परिवार में सुरक्षित रखता है, परिवार अपनेको वर्ग में, वर्ग राष्ट्र में—अपनेको अनावश्यक तौर पर नष्ट करते हुए नहीं बल्कि विशालतर हित को अंगीकार करते हुए।" यह लेखमाला १९०९-१० में Karmayogin पत्र में प्रकाशित हुई थी और उसे ही पहले 'अदिति' में धारावाही रूप में दिया जा चुका है और अब पुस्तक-रूप में उपस्थित किया जा रहा है। तब देश पराधीन था और स्वभावतः ही इसमें उस अवस्था का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वक्त

उल तत्व ... काम ... है ... ाजी और प्रेरण
है । ... आ ... है । हमारा लक्ष ... न रहेगी, क्य
इसका ... नुभ ... नहीं है, प्रत्युत ए ... निरूपण है, ज
सनातन ... ी त ... भी एक भाग

आज राष्ट्रीय ... प्र ... क्त राजनीति पर हो ... विशेष प्रबल हो
रही है और हम ... र या ब्रह्मविद्या या दर्शन
शैक्षणिक आदि आया ... आय ... इन सबको हम उस ए
होते देखते हैं । ... है जिसे ह ... ानते हैं ... है
निर्माण के मौलिक ... ता से यदि
रखें । तभी हम अपनी आयोजनाओं से वांछित तथा वास्तविक
नव-निर्माण लाभ कर सकेंगे ।

—इन्द्रसेन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योगी

...ारत

...ा है जब तुझे ...

...कताग्रस्त जीवन से ...

...विस्तीर्णतर जीवन की ...

...र मनुष्य मात्र गति कर रहा है। ...

...को पीड़ित कर रखा है उनके दल ...

...ने से ही किया जा सकता है, ...

... विलास के काम में लाने से नहीं, ...

१८३८६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर्मयोगी का

कर्मयोगी २५

दोनों अवस्थाओं में ३५

भारत की जागती हुई आत्मा ४५

बलिदान का सिद्धान्त ५७

विकास की प्रक्रिया ६९

शान्ति की शक्ति ८१

तीन पुरुष ८९

प्रच्छन्न आत्मा का दबाव १०१

व्यक्ति की महत्ता १०९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योगी

भारत

हैं जब तुझे

कतामग्रस्त जीवन से

वस्तीर्णतर जीवन की

मनुष्य मात्र गति कर रहा है।

को पीड़ित कर रखा है उन

ने से ही किया जा सकता है,

विलास के काम में लाने से नहीं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"हमारा विश्वास है कि योग को मानव जीवन का आदर्श बनाना ही वह प्रयोजन है जिसके लिये आज भारत का अभ्युदय हो रहा है; योग से ही वह अपनी स्वाधीनता, एकता और महत्ता को अधिगत करने की शक्ति प्राप्त करेगा, योग से ही वह इन्हें सुरक्षित रखने की शक्ति अपने में स्थिर रखेगा; ऐसी आध्यात्मिक क्रान्ति को ही हमारी भाविदृष्टि देख रही है और भौतिक क्रान्ति तो इसकी छाया एवं प्रतिबिम्ब मात्र है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योगी

है जब तुझे

ताग्रस्त जीवन से

रत्तीर्णतर जीवन की

मनुष्य मात्र गति कर ग्य है।

को पीड़ित कर रखा है उन

ने से ही किया जा सकता है,

लास के काम में लाने से नहीं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तव ... काम ... है
आ ... है। हमारा ल...
नुभ ... प्रत्युत ए...
ी त ... भी एक भाग
प्र... क्त राजनीति पर हा...

कर्म... या ब्रह्मविद्या या दर्शन
... इन सबको हम उस ए...

आज ... है जिसे ... ... मानते हैं इतनी शीघ्रता से, इतनी स्पष्टता ... राष्ट्र बन रहा है कि सब लोग इस क्रिया को होते हुए देख सकते हैं, और जिनमें सहानुभूति तथा प्रतिभा है वे इसमें काम करनेवाली शक्तियों, प्रयोग में लायी हुई सामग्री तथा दिव्य शिल्प-कला की प्रणाली को भी पहिचान सकते हैं। यह राष्ट्र प्रकृति के कारखाने में तैयार हुई कोई असंस्कृत नयी जाति नहीं है, न ही यह आधुनिक परिस्थितियों से बन रहा है। यह संसारभर की प्राचीनतम जातियों और बृहत्तम सभ्यताओं में से एक है, इसकी प्राणशक्ति अत्यन्त अदम्य है, इसकी विशालता अत्यन्त उर्वर है, इसका जीवन गम्भीरतम और इसकी संभाव्यशक्ति अतीव आश्चर्य-जनक है। और अब यह विदेशी वीर्य-रुधिर से तथा अन्य प्रकार की मानवीय सभ्यताओं से शक्ति के विविध स्रोतों को अपनेमें ग्रहण कर अपने आपको अन्तिम तौर से एक संगठित अखण्ड राष्ट्र के रूप में खड़ा करने की कोशिश कर रहा है। पहले यह ऐसे सजातीय राष्ट्रों का एक संघ था जिनका एक सा जीवन और एक ही संस्कृति थी। अपनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

...गी

ही एकता ...

भूत एकता के ... उर्वरता के कारण नय...

और सदा ही ... है जब तुझे ... हुआ, यह देश ...

...धांधताओं और वि... ताग्रस्त जीवन की अपनी लगभग दुस्त... ...ओं

महाद्वीप के रूप में सं... ...तीर्णतर जीवन ...क कभी समर्थ नहीं हो पाया है।

को स्थायी तौर ... मनुष्य मात्र गति कर बाधाएं दूर की जा सकती हैं।

अब वह समय ... पीड़ित कर रखा है ... में जिस उद्योग को करती रही

...ारी जाति अ... से ही किया जा सकता है, ... ोई भी प्रखर

है उसे अब वह ... काम में लाने से नहीं, ...

दृष्टि रखनेवाला यह भविष्यवाणी कर ... वह उद्योग सफल होगा क्योंकि जो जो भी बड़ी बड़ी बाधाएं थीं वे या तो दूर की जा चुकी हैं या की जा रही हैं। परन्तु हम इससे भी अधिक यह विश्वास रखते हैं कि उसका सफल होना निश्चित है क्योंकि भारत की स्वतंत्रता, एकता और महत्ता अब संसार के लिये अनिवार्य हो गयी हैं। यही विश्वास है जिसके साथ 'कर्मयोगी' अपने काम को अपने हाथ में लेता है और वह इसे अन्त तक जारी रखेगा, चाहे कितनी भी भारी और देखने में अलंघ्य कठिनाइयां क्यों न उपस्थित हों पर वह उनसे निरुत्साहित नहीं होगा। हमें विश्वास है कि परमेश्वर हमारे साथ है और उसी विश्वास के बल पर हम विजयी होंगे। हमें विश्वास है कि मानवजाति को हमारी आवश्यकता है और मानवजाति का, अपने देश का, अपनी जाति का तथा अपने धर्म का प्रेम और उनकी सेवा ही हमारे हृदय को पवित्र करेगी और संघर्ष के समय हमारे कार्य में अन्तःप्रेरणा का संचार करेगी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

...ने अपने सामने जो काम ... है वह यांत्रिक न... कि... आ...तिक और आध्यात्मिक है। हम...ा लक्ष्य किसी एक प्र... की...नुभ... ...से बदल डालना नहीं है, प्रत्युत एक राष्ट्र का निर्माण करना है। उस काम का राजनीति भी एक भाग है, परन्तु एक भाग मात्र है। हम अपनी सारी शक्ति राजनीति पर ही नहीं लगावेंगे, नाहीं केवल सामाजिक प्रश्नों पर या ब्रह्मविद्या या दर्शन या साहित्य या विज्ञान के विषयों पर, परन्तु इन सबको हम उस एक ही वस्तु के अन्तर्गत समझ... हैं जिसे ... ...नते हैं। वह वस्तु है धर्म, राष्ट्रीय धर्म जा, ...विश्वास है, सार्वभौम भी है। संसार में जीवन का एक शक्तिशाली नियम है, मानव विकास का एक बड़ा सिद्धान्त है, आध्यात्मिक ज्ञान और अनुभव की एक निधि है जिसका संरक्षक, आदर्शस्थापक तथा प्रचारक होना सदा भारतवर्ष की विधि-लिपि में लिखा है। यही 'सनातनधर्म' है। विदेशी संपर्क का दवाव पड़ने से भारत ने उस धर्म के बाह्य रूप को तो नहीं किन्तु उसके जीवित जागृत असली रूप को अधिकांश में खो दिया है। क्योंकि भारत का धर्म अगर जीवन में सजीव रूप से चरितार्थ न किया जाय तो यह किसी काम का नहीं। इसे केवल जीवन में ही नहीं अपितु जीवन के सभी अंगों में चरितार्थ करना होगा; इसकी आत्मा को हमारे समाज, हमारी राजनीति, हमारे साहित्य, हमारे भौतिक विज्ञान, हमारे वैयक्तिक चरित्र, प्रवृत्तियों और अभीप्साओं में प्रविष्ट होना और उनका पुन-र्निर्माण करना होगा। इस धर्म के हृदय को समझना, इसे सत्य के रूप में अनुभूति में लाना, जिन ऊंचे भावावेशों की ओर यह ऊपर उठाता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं उन्हें अनुभव करना और इसे जीवन द्वारा अभिव्यक्त एवं क्रि[illegible]वत करना—यही हम कर्मयोग का भावार्थ मानते हैं। हमारा वि[illegible] है कि योग को मानव जीवन का आदर्श बनाना ही वह प्रयो[illegible]को[illegible]के लिये आज भारत का अभ्युदय हो रहा है; योग से ही वह अप[illegible] स्वाधीनता, एकता और महत्ता को अधिगत करने की शक्ति प्राप्त करेगा, योग से ही वह इन्हें सुरक्षित रखने की शक्ति अपने में स्थिर रखेगा; ऐसी आध्यात्मिक क्रान्ति को ही हमारी भाविदृष्टि देख रही है और भौतिक क्रान्ति तो इसकी छाया एवं प्रतिबिम्ब मात्र है।

यूरोप का आदमी यंत्र-सामग्री का बहुत अधिक आदर करता है। वह समाजसंबन्धी योजनाओं और शासन करने की पद्धतियों से मानवता का पुनरुद्धार करना चाहता है; वह राष्ट्रव्यवस्थापिका परिषत् के कानूनों से पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य लाने की आशा रखता है। यंत्रसामग्री बेशक बड़े महत्त्व की वस्तु है, परन्तु अन्दर रहनेवाली आत्मा या पीछे रहनेवाली शक्ति के कार्यवाहक साधन के तौर पर ही। भारतवर्ष ने उन्नीसवीं सदी में राजनीतिक मुक्ति, सामाजिक पुनर्जागृति, धार्मिक दर्शन तथा धार्मिक पुनर्जन्म पाने की अभिकांक्षा की थी परन्तु वह असफल रहा चूंकि उसने पाश्चात्य प्रेरकभावों और तरीकों को अपनाया, हमारी जाति की आत्मा और भवितव्यता की तथा उसके इतिहास की अवहेलना की और यह सोचा कि यूरोपीय शिक्षा, यूरोपीय मशीनरी, यूरोपीय संगठनप्रणाली और साज-सामान को अपनाकर हम अपने लिये यूरोप जैसी समृद्धि, शक्ति और प्रगति को प्राप्त कर लेंगे। हम बीसवीं सदी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के भारतवासी अंग्रेजों की नकल करनेवाली उन्नीसवीं सदी के उद्देश्यों, आदर्शों और तरीकों का परित्याग करते हैं, क्योंकि हम इसके अनुभव को स्वीकार करते और ग्रहण करते हैं। हम वर्तमान को मूर्त्ति की तरह पूजने से इन्कार करते हैं; हम आगे और पीछे देखते हैं, पीछे अपनी जाति के शक्तिशाली इतिहास की ओर और आगे उस बृहत् इतिहास की ओर जिसके लिये उस भवितव्यता ने इस जाति को तैयार किया है।

हमारा ऐसा विश्वास नहीं कि कौंसिलों के विस्तार से, निर्वाचन-पद्धति के जारी होने से, औपनिवेशिक स्वराज्य या यूरोपीय राजनीति के अन्य किसी सूत्र से हम अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं। हम इस बात से इन्कार नहीं करते कि इनमेंसे कुछ चीजों का राजनीतिक संग्राम के उपकरणों और हथियारों के तौर पर प्रयोग किया जा सकता है, किन्तु हम इस बात से इन्कार करते हैं कि वे साधनों या आदर्शों के तौर पर पर्याप्त हो सकती हैं; और हम उस उद्देश्य की ओर परे तक देखते हैं जिसे वे पूरा नहीं कर सकतीं, यदि कुछ कर भी सकती हैं तो अतीव तुच्छ मात्रा में। वे चीजें भी पर्याप्त हो सकतीं यदि हमारी भवितव्यता अन्तिम तौर पर यही होती कि हमने ब्रिटिश साम्राज्य का एक दूरस्थ प्रान्त या यूरोपीय सभ्यता के अधीन उसका एक पुछल्ला बनकर रहना है। पर वह तो एक ऐसा भविष्य है जिसे हम इस योग्य नहीं पाते कि उसे पूरा हुआ देखने के लिये कोई बलिदान किया जा सके। इसके विपरीत हमारा तो ऐसा विश्वास है कि भारत के भाग्य में यह लिखा है कि वह अपने ही स्वतंत्र जीवन और सभ्यता का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है उन्हें अनुभव करना और इसे जीवन द्वारा अभिव्यक्त एवं क्रि[illegible]त करना—यही हम कर्मयोग का भावार्थ मानते हैं। हमारा नि[illegible] है कि योग को मानव जीवन का आदर्श बनाना ही वह प्रयो[illegible]को [illegible]के लिये आज भारत का अभ्युदय हो रहा है; योग से ही वह अपनी स्वाधीनता, एकता और महत्ता को अधिगत करने की शक्ति प्राप्त करेगा, योग से ही वह इन्हें सुरक्षित रखने की शक्ति अपने में स्थिर रखेगा; ऐसी आध्यात्मिक क्रान्ति को ही हमारी भाविदृष्टि देख रही है और भौतिक क्रान्ति तो इसकी छाया एवं प्रतिबिम्ब मात्र है।

यूरोप का आदमी यंत्र-सामग्री का बहुत अधिक आदर करता है। वह समाजसंबन्धी योजनाओं और शासन करने की पद्धतियों से मानवता का पुनरुद्धार करना चाहता है; वह राष्ट्रव्यवस्थापिका परिषत् के कानूनों से पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य लाने की आशा रखता है। यंत्रसामग्री बेशक बड़े महत्त्व की वस्तु है, परन्तु अन्दर रहनेवाली आत्मा या पीछे रहनेवाली शक्ति के कार्यवाहक साधन के तौर पर ही। भारतवर्ष ने उन्नीसवीं सदी में राजनीतिक मुक्ति, सामाजिक पुनर्जागृति, धार्मिक दर्शन तथा धार्मिक पुनर्जन्म पाने की अभिकांक्षा की थी परन्तु वह असफल रहा चूंकि उसने पाश्चात्य प्रेरकभावों और तरीकों को अपनाया, हमारी जाति की आत्मा और भवितव्यता की तथा उसके इतिहास की अवहेलना की और यह सोचा कि यूरोपीय शिक्षा, यूरोपीय मशीनरी, यूरोपीय संगठनप्रणाली और साज-सामान को अपनाकर हम अपने लिये यूरोप जैसी समृद्धि, शक्ति और प्रगति को प्राप्त कर लेंगे। हम बीसवीं सदी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के भारतवासी अंग्रेजों की नकल करनेवाली उन्नीसवीं सदी के उद्देश्यों, आदर्शों और तरीकों का परित्याग करते हैं, क्योंकि हम इसके अनुभव को स्वीकार करते और ग्रहण करते हैं। हम वर्तमान को मूर्त्ति की तरह पूजने से इन्कार करते हैं; हम आगे और पीछे देखते हैं, पीछे अपनी जाति के शक्तिशाली इतिहास की ओर और आगे उस बृहत् इतिहास की ओर जिसके लिये उस भवितव्यता ने इस जाति को तैयार किया है।

हमारा ऐसा विश्वास नहीं कि कौंसिलों के विस्तार से, निर्वाचन-पद्धति के जारी होने से, औपनिवेशिक स्वराज्य या यूरोपीय राजनीति के अन्य किसी सूत्र से हम अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं। हम इस बात से इन्कार नहीं करते कि इनमेंसे कुछ चीजों का राजनीतिक संग्राम के उपकरणों और हथियारों के तौर पर प्रयोग किया जा सकता है, किन्तु हम इस बात से इन्कार करते हैं कि वे साधनों या आदर्शों के तौर पर पर्याप्त हो सकती हैं; और हम उस उद्देश्य की ओर परे तक देखते हैं जिसे वे पूरा नहीं कर सकतीं, यदि कुछ कर भी सकती हैं तो अतीव तुच्छ मात्रा में। वे चीजें भी पर्याप्त हो सकतीं यदि हमारी भवितव्यता अन्तिम तौर पर यही होती कि हमने ब्रिटिश साम्राज्य का एक दूरस्थ प्रान्त या यूरोपीय सभ्यता के अधीन उसका एक पुछल्ला बनकर रहना है। पर वह तो एक ऐसा भविष्य है जिसे हम इस योग्य नहीं पाते कि उसे पूरा हुआ देखने के लिये कोई बलिदान किया जा सके। इसके विपरीत हमारा तो ऐसा विश्वास है कि भारत के भाग्य में यह लिखा है कि वह अपने ही स्वतंत्र जीवन और सभ्यता का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निर्माण करे, संसार का अग्रणी बनकर खड़ा हो और उन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा नैतिक समस्याओं को हल करे जिनका हल निकालने में यूरोप असफल रहा है, किन्तु जिनका हल निकालने की अपनी चेष्टा को तथा उस चेष्टा में एक परीक्षण से दूसरे परीक्षण तक, एक विफलता से दूसरी विफलता तक, पहुंचने के अपने आयासपूर्ण ज्वरमय मार्ग को ही वह अपनी प्रगति कहकर पुकार रहा है। हमारे साधन भी उतने ही महान् होने चाहियें जितने महान् हमारे उद्देश्य हैं। और उन उद्देश्यों को अधिगत करने के लिये साधनों को खोजने तथा प्रयोग में लाने की जो शक्ति है वह तो तभी प्राप्त हो सकती है जब हम अपने अन्दर शक्ति के सनातन स्रोत को ढूंढ़ निकालें।

अपने समाज को यूरोप की नकल बनाने की दृष्टि से उसके वर्तमान ढांचे को वदल देने से हम सामाजिक सुधार कर सकेंगे, ऐसा हमें विश्वास नहीं है। विधवाविवाह, जातपांत की जगह वर्गपद्धति की स्थापना, वालविवाह-निषेध, अन्तर्जातीय विवाह, अन्तर्जातीय भोज तथा समाजसुधारक के बताये हुए अन्य सस्ते इलाज तो ऐसे यांत्रिक परिवर्तन मात्र हैं जो, अच्छे या बुरे जैसे भी हों, केवल अपने बल पर राष्ट्र की आत्मा को जीवित नहीं रख सकते तथा अवनति और विनाश के प्रवाह को रोक नहीं सकते। जीवित रखनेवाली तो केवल आत्मा है और हृदय से महान् तथा स्वतंत्र बनने से ही हम सामाजिक और राजनीतिक तौर पर महान् और स्वतंत्र बन सकते हैं।

हमें इस वात में विश्वास नहीं है कि पश्चिम से लाये हुए धर्म-संबन्धी संकीर्ण और हीनतर विचारों में सीमित नये संप्रदायों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बढ़ाते चले जाने से या हिन्दू धर्म की केवल पोशाक और उसके शरीर को निरन्तर बनाये रखने के लिये संघ स्थापित करने से हम आध्यात्मिक स्वास्थ्य, शक्ति और महत्ता को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। संसार स्वतंत्र विचार और प्रकृतिवाद की अनिवार्य अराजकता में से गुजरता हुआ धार्मिक विचार तथा अनुभव के एक नवीन समन्वय की ओर तथा एक प्रकार के नये धर्मयुक्त ऐहलौकिक जीवन की ओर बढ़ रहा है। ऐसे जीवन की ओर जो असहिष्णुता से विमुक्त होता हुआ भी श्रद्धा और उत्साह से भरा हुआ हो, जो एकमेव ब्रह्म में अटल विश्वास रखने के कारण धर्म के सभी रूपों को स्वीकार करता हो। जो धर्म भौतिक विज्ञान और आस्तिक-बुद्धि का, प्राचीन ईश्वरवाद, ईसाइयत, मुहम्मदी मत और बौद्धधर्म का आलिंगन करता है परन्तु इनमेंसे कोई सा भी नहीं है, उसीकी ओर विश्व-आत्मा गति कर रहा है। हमारा अपना धर्म जो सब धर्मों से अधिक संदेहवादी और सबसे अधिक ही विश्वासी है—सबसे अधिक संदेहवादी तो इसलिये कि इसने सबसे अधिक प्रश्न उठाये और परीक्षण किये हैं, सबसे अधिक विश्वासी इसलिये कि इसके पास गम्भीरतम अनुभूति तथा सबसे अधिक विविधतापूर्ण एवं भावात्मक आध्यात्मिक ज्ञान है,—वह विशालतर हिन्दूधर्म जो कोई एक मतवाद या मतवादों का समुदाय नहीं है किन्तु जीवन का नियम है, जो कोई सामाजिक ढांचा नहीं है बल्कि अतीत और भावी सामाजिक विकास की आत्मा है, जो किसी चीज का निराकरण नहीं करता है परन्तु प्रत्येक चीज को परखने और आजमाने के लिये आग्रह करता है तथा परख

2

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निर्माण करे, संसार का अग्रणी बनकर खड़ा हो और उन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा नैतिक समस्याओं को हल करे जिनका हल निकालने में यूरोप असफल रहा है, किन्तु जिनका हल निकालने की अपनी चेष्टा को तथा उस चेष्टा में एक परीक्षण से दूसरे परीक्षण तक, एक विफलता से दूसरी विफलता तक, पहुंचने के अपने आयासपूर्ण ज्वरमय मार्ग को ही वह अपनी प्रगति कहकर पुकार रहा है। हमारे साधन भी उतने ही महान् होने चाहियें जितने महान् हमारे उद्देश्य हैं। और उन उद्देश्यों को अधिगत करने के लिये साधनों को खोजने तथा प्रयोग में लाने की जो शक्ति है वह तो तभी प्राप्त हो सकती है जब हम अपने अन्दर शक्ति के सनातन स्रोत को ढूंढ़ निकालें।

अपने समाज को यूरोप की नकल बनाने की दृष्टि से उसके वर्तमान ढांचे को बदल देने से हम सामाजिक सुधार कर सकेंगे, ऐसा हमें विश्वास नहीं है। विधवाविवाह, जातपांत की जगह वर्गपद्धति की स्थापना, बालविवाह-निषेध, अन्तर्जातीय विवाह, अन्तर्जातीय भोज तथा समाजसुधारक के बताये हुए अन्य सस्ते इलाज तो ऐसे यांत्रिक परिवर्तन मात्र हैं जो, अच्छे या बुरे जैसे भी हों, केवल अपने बल पर राष्ट्र की आत्मा को जीवित नहीं रख सकते तथा अवनति और विनाश के प्रवाह को रोक नहीं सकते। जीवित रखनेवाली तो केवल आत्मा है और हृदय से महान् तथा स्वतंत्र बनने से ही हम सामाजिक और राजनीतिक तौर पर महान् और स्वतंत्र बन सकते हैं।

हमें इस बात में विश्वास नहीं है कि पश्चिम से लाये हुए धर्मसंबन्धी संकीर्ण और हीनतर विचारों में सीमित नये संप्रदायों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बढ़ाते चले जाने से या हिन्दू धर्म की केवल पोशाक और उसके शरीर को निरन्तर बनाये रखने के लिये संघ स्थापित करने से हम आध्यात्मिक स्वास्थ्य, शक्ति और महत्ता को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। संसार स्वतंत्र विचार और प्रकृतिवाद की अनिवार्य अराजकता में से गुजरता हुआ धार्मिक विचार तथा अनुभव के एक नवीन समन्वय की ओर तथा एक प्रकार के नये धर्मयुक्त ऐहलौकिक जीवन की ओर बढ़ रहा है। ऐसे जीवन की ओर जो असहिष्णुता से विमुक्त होता हुआ भी श्रद्धा और उत्साह से भरा हुआ हो, जो एकमेव ब्रह्म में अटल विश्वास रखने के कारण धर्म के सभी रूपों को स्वीकार करता हो। जो धर्म भौतिक विज्ञान और आस्तिक-बुद्धि का, प्राचीन ईश्वर-वाद, ईसाइयत, मुहम्मदी मत और बौद्धधर्म का आलिंगन करता है परन्तु इनमेंसे कोई सा भी नहीं है, उसीकी ओर विश्व-आत्मा गति कर रहा है। हमारा अपना धर्म जो सब धर्मों से अधिक संदेहवादी और सबसे अधिक ही विश्वासी है—सबसे अधिक संदेहवादी तो इसलिये कि इसने सबसे अधिक प्रश्न उठाये और परीक्षण किये हैं, सबसे अधिक विश्वासी इसलिये कि इसके पास गम्भीरतम अनुभूति तथा सबसे अधिक विविधतापूर्ण एवं भावात्मक आध्यात्मिक ज्ञान है,—वह विशालतर हिन्दूधर्म जो कोई एक मतवाद या मतवादों का समुदाय नहीं है किन्तु जीवन का नियम है, जो कोई सामाजिक ढांचा नहीं है बल्कि अतीत और भावी सामाजिक विकास की आत्मा है, जो किसी चीज का निराकरण नहीं करता है परन्तु प्रत्येक चीज को परखने और आजमाने के लिये आग्रह करता है तथा परख

2

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और आजमा चुकने के बाद उसे आत्मा के उपयोग में लाने का आग्रह करता है, उस हिन्दूधर्म में हम भावी विश्वधर्म का आधार पाते हैं। इस सनातनधर्म के अनेक धर्मशास्त्र हैं, वेद, वेदान्त, गीता, उपनिषद्, दर्शन, पुराण, तंत्र; और यह बाइबल या कुरान से भी इन्कार नहीं कर सकता है; पर इसका वास्तविक, सबसे अधिक प्रामाणिक धर्मशास्त्र तो उस हृदय में है जिसमें सनातन देव का वास है। अपनी आन्तरिक आध्यात्मिक अनुभूतियों में ही हम संसार के धर्मशास्त्रों की प्रामाणिकता और स्रोत को प्राप्त करेंगे, ज्ञान, प्रेम और आचार के नियम को एवं कर्मयोग की प्रेरणा और आधार को पावेंगे।

अतएव हमारा लक्ष्य होगा मानवता की खातिर भारतवर्ष के निर्माण किये जाने में सहायता करना—राष्ट्रवाद की यही भावना है जिसे हम मानते और जिसका हम अनुसरण करते हैं। हम मानवता से कहते हैं, "वह समय आ गया है जब तुझे अवश्य ही बड़ा कदम उठाना चाहिये और भौतिकताग्रस्त जीवन से बाहर निकलकर उस उच्चतर, गम्भीरतर और विस्तीर्णतर जीवन की ओर उठ जाना चाहिये जिसकी ओर मनुष्यमात्र गति कर रहा है। जिन समस्याओं ने मानवजाति को पीड़ित किया है उनका हल तो केवल अन्दर का राज्य जीतने से ही किया जा सकता है,—प्रकृति की शक्तियों को आराम और विलास के काम में लाने से नहीं, परन्तु बुद्धि और आत्मा की शक्तियों का स्वामी बनने से, मनुष्य की बाह्य तथा आन्तरिक स्वतंत्रता को स्थापित करने से और बाह्य प्रकृति पर अन्दर से विजय पाने से। इस काम के लिये एशिया का पुनरुत्थान आवश्यक है, इसीलिये एशिया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्नत हो रहा है। इस काम के लिये भारत की स्वतंत्रता और महत्ता का होना अत्यावश्यक है, अतएव वह विधाता द्वारा नियत की गयी अपनी स्वतंत्रता और महत्ता का दावा करता है और यह इंग्लैण्ड समेत सारी मानवजाति के हित की बात है कि वह अपने इस दावे को पूरी तरह से स्थापित कर ले।"

हम भारत राष्ट्र से कहते हैं, "यह ईश्वर की ही इच्छा है कि हम भारतीय होकर रहें और यूरोपीय न बनें। हमने अपनी सत्ता से भिन्न किसी अन्य की सत्ता के नियम का अनुसरण करके जीवन को फिर से प्राप्त करने की चेष्टा की है। हमें इससे लौटना होगा और जीवन तथा शक्ति के स्रोतों को अपने अन्दर ढूंढ़ना होगा। हमें अपने अतीत का ज्ञान प्राप्त करना है और अपने भविष्य के उपयोग के लिये उसे पुनः प्राप्त करना है। हमारा कार्य है–सबसे पहले अपने आपको जानना और फिर भारत के सनातन जीवन तथा उसकी प्रकृति के नियम के अनुकूल प्रत्येक वस्तु को ढालना। अतः कर्मयोगी का उद्देश्य यह होगा कि वह हमारे धर्म, हमारे समाज, हमारे दर्शन, हमारी राजनीति, हमारे साहित्य, हमारी कला, हमारे स्मृतिशास्त्र, हमारे विज्ञान और विचार, प्रत्येक वस्तु जो हमारी थी और है उसके हृदय का अध्ययन करे ताकि हम अपने आपसे, अपने राष्ट्र से यह कहने में समर्थ हों, 'यह हमारा धर्म है'। हम सर्वथा भारतीय विचार और ज्ञान के दृष्टि-कोण से ही यूरोपीय सभ्यता की आलोचना करेंगे और पश्चिम की प्रभुत्व जमानेवाली मुहरछाप को अपने पर से मिटाने का यत्न करेंगे; हमें पश्चिम से जो कुछ लेना है उसे हम भारतीय रहते हुए लेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और धर्म का एक बार पता चल जाने पर हम उसे मानने का ही नहीं अपितु जीवनगत करने का, अपने वैयक्तिक कार्यों में, अपने सामाजिक जीवन में, अपने राजनीतिक उद्योगों में सजीव रूप से चरितार्थ करने का भरसक प्रयत्न करेंगे।"

हम प्रत्येक व्यक्ति से कहते हैं और विशेषतया उन युवकों से जो अब भारत का काम, संसार का काम, ईश्वर का काम करने के लिये उठ रहे हैं: "यदि तुम अपने मनों को यूरोपीय विचारों का गुलाम बना दोगे या जीवन को भौतिक वा जड़वादी दृष्टिकोण से देखोगे तो तुम इन आदर्शों को धारण नहीं कर सकोगे और इन्हें सफल करना तो तुम्हारे लिये और भी कठिन होगा। भौतिक दृष्टि से तुम कुछ नहीं हो, आध्यात्मिक दृष्टि से तुम सब कुछ हो। एकमात्र भारतीय ही प्रत्येक चीज पर विश्वास कर सकता है, प्रत्येक काम करने का साहस कर सकता है, प्रत्येक चीज का बलिदान कर सकता है। इसलिये सबसे पहले भारतीय बन जाओ। अपने पूर्वपुरुषों की पैतृक सम्पत्ति को फिर से प्राप्त करो। आर्य विचार, आर्य अनुशासन, आर्य चरित्र, आर्य जीवन को पुनः प्राप्त करो। वेदान्त, गीता और योग को फिर से प्राप्त करो। उन्हें केवल बुद्धि या भावना से ही नहीं अपितु जीवन द्वारा पुनः जीवित कर दो। उन्हें जीवन में लाओ और तुम महान्, दृढ़, शक्तिशाली, अजेय तथा निर्भय हो जाओगे। तब तुम्हें न तो जीवन भयभीत कर सकेगा और न मृत्यु। 'कठिन' और 'असंभव' शब्द तुम्हारे शब्दकोशों से विलुप्त हो जायंगे। क्योंकि एकमात्र आत्मा ही शाश्वत एवं अनन्त बल से युक्त है और पहले तुम्हें आत्म-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राज्य, आन्तरिक स्वराज्य को जीतकर वापिस ले लेना होगा, उसके बाद ही तुम बाह्य साम्राज्य को वापिस ले सकोगे। वहां (आत्मा में) ही माता विराजमान है और वह पूजा की प्रतीक्षा कर रही है ताकि वह शक्ति दे सके। उसमें विश्वास रखो, उसकी सेवा करो, अपनी इच्छाओं को उसकी इच्छा में, अपनी 'मैं' को देश की बड़ी 'मैं' में, अपनी पृथक् स्वार्थपरता को मानवता की सेवा में विलीन कर दो। संपूर्ण शक्ति के स्रोत को अपनेमें फिर से प्राप्त कर लो तो अन्य सब कुछ तुम्हें आ मिलेगा–सामाजिक स्वस्थता, बौद्धिक प्रमुखता, राजनीतिक स्वाधीनता, मानव-विचार पर प्रभुत्व और संसार का नेतृत्व।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर्मयोग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्वितीय अध्याय

कर्मयोग

हम कह चुके हैं कि वेदान्त और योग को जीवन में चरितार्थ करना कर्मयोग है। बहुतों को, जो हिन्दूधर्म का ज्ञान विदेशियों से प्राप्त करते हैं, यह परिभाषा संदिग्ध प्रतीत हो सकती है। "व्यावहारिक (बहिर्मुख)" मनवाले लोग साधारणतया यह मानते हैं कि वेदान्त जीवन के पथप्रदर्शक के तौर पर और योग आध्यात्मिक अन्तर्मिलन की विधि के तौर पर ऐसी खतरनाक चीजें हैं जो मनुष्यों को कर्म से हटाकर निवृत्ति की ओर ले जाती हैं। जो ऐसे सब विश्वासों को रहस्यवाद, आत्मवंचन या ढोंग करके समझते हैं उनकी तो हम चर्चा ही नहीं करते; परन्तु जो लोग हिन्दूधर्म की ऊंची चीजों का आदर करते हैं और उनमें विश्वास करते हैं उनमें भी यह संस्कार बैठा हुआ है कि आध्यात्मिक जीवन बिताने के लिये मनुष्य को संपूर्ण मानवीय चेष्टा से अपने आपको हटा लेना आवश्यक है। परन्तु तो भी आध्यात्मिक जीवन अपने अधिक से अधिक शक्तिशाली रूप में उसी पुरुष में प्रकट होता है जो मनुष्यों के सर्वसाधारण जीवन को योग के बल से और वेदान्त के नियम के अनुसार बिताता है। आन्तरिक और बाह्य जीवन के इस प्रकार के मेल के फलस्वरूप ही मनुष्यजाति उन्नत होगी और शक्तिशाली तथा दिव्य बन जायगी। यह समझना भूल

९८२५०६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है कि वेदान्त जीवन के लिये कोई प्रेरणा प्रदान नहीं करता, आचार व्यवहार का नियम नहीं बताता और शुद्धतया दार्शनिक तथा निवृत्ति-परक है। इसके विपरीत उपनिषदों और गीता की शिक्षाओं में उस उच्चतम नैतिकता का, जहांतक मानवजाति पहुंच सकती है, एक पूर्ण आधार और प्रमाण मिलता है। गीता के विशिष्ट सिद्धान्त और क्या हैं यदि वे जीवन का नियम तथा धर्म नहीं हैं। वेदान्त की परात्पर भगवान् के संबन्ध में अभीप्साएं भी यह मानकर चलती हैं कि मनुष्य अपने जीवन में उनके लिये आवश्यक तैयारी कर चुका है, क्योंकि जीवन में से गुजर करके ही मनुष्य अमरता को प्राप्त कर सकता है। इससे विपरीत सम्मति के प्रेरक कारण हैं वे विशेष प्रवृत्तियां जो हमारी जाति के इतिहास और स्वभाव में बहुत अधिक बढ़ चुकी हैं। हमारे धर्म का चरम लक्ष्य है भौतिक प्रकृति के बन्धन से मुक्ति और व्यक्ति का अपने पुनर्जन्म से छुटकारा। जिन ऊंची से ऊंची आत्माओं को हम जानते हैं उनमेंसे कुछ को चरम नीरवता और पवित्रता के आकर्षण ने ऐसा मोहित किया कि उन्होंने अपने आपको जीवन तथा शारीरिक कर्म से अलग कर लिया ताकि वे अधिक शीघ्रता और सुगमता से अपने लक्ष्य पर पहुंच सकें। पर्वतशिखरों की भांति सामान्य सतह से ऊपर खड़े होकर उन्होंने सबकी दृष्टि को अपनी ओर आकृष्ट किया और इस निवृत्ति को सर्वोच्च तथा सर्वप्रधान हिन्दू आदर्श के रूप में निश्चित कर दिया। इसी कारण श्रीकृष्ण ने इस बात पर इतना बल दिया कि जब पूर्णयोगी को अपने लिये जीवन और मानव कर्म की आवश्यकता न रहे तब भी उसे उनमें युक्त रहना चाहिये, जिससे ऐसा न हो कि लोग, श्रेष्ठ पुरुष के आचरण का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनुकरण करते हुए, जैसे कि सदा ही वे किया करते हैं, अपने धर्म से मुंह मोड़ लें और वर्णसंकर की अराजकता फैल जाय।* आदर्श योगी कोई निवृत्त या अवरुद्ध शक्ति नहीं होता किन्तु वह सदा सब भूतों का हित करने में रत रहता है—या तो उस दिव्य शक्ति के प्रवाह से जिसे वह संसार में प्रवाहित करता है या फिर स्वयं ही मानवता की अग्रपंक्ति में खड़ा होकर, प्रस्थान और युद्ध में इसका नेता बनकर किन्तु अपने कर्मों से बद्ध न होते हुए और अपने व्यक्तित्व से ऊपर रहते हुए।

इसके अतिरिक्त साधारणतया 'वेदान्त' शब्द को तथा कट्टर अद्वैत-वाद और माया के उस विशिष्ट सिद्धान्त को जिसे शंकर की उच्च

---

*यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।। गीता, ३-२१
न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ।। २२ ।।
यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ।। २३ ।।
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्।
संकरस्य च कर्त्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः ।। २४ ।।
सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत।
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ।। २५ ।।
न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसंगिनाम्।
जोषयेत् सर्वकर्माणि विद्वान् युक्तः समाचरन् ।। २६ ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और वैराग्यपूर्ण बुद्धि ने स्थापित किया था, एक ही समझ लिया जाता है। किन्तु वेदान्ती के प्रामाणिक धर्मग्रन्थ तो स्वयं उपनिषदें ही हैं न कि शंकर के ग्रन्थ, मूलग्रन्थ ही हैं न कि भाष्य। शंकर का भाष्य यद्यपि महान् और सामयिक तौर पर संतोषप्रद था तथापि वह उपनिषदों का एक प्रकार का समन्वय और व्याख्या मात्र है। भूतकाल में अन्य भी समन्वय और व्याख्याएं हुई हैं जिन्होंने देशवासियों के मन पर प्रवल प्रभाव डाला है और यह कोई नहीं कह सकता कि भविष्य में और भी अधिक पूर्ण समन्वय नहीं होगा। इस प्रकार के एक समन्वय को ही जो अपने क्षेत्र में संपूर्ण जीवन और कर्म का आलिंगन करता है श्री रामकृष्ण और विवेकानन्द की शिक्षाएं तैयार करती आ रही हैं। इस समय जो कुछ अस्पष्ट तौर पर शुरू हो रहा है वह उस चीज की अधिक विस्तृत क्षेत्र में पुनरावृत्ति है जो भारत में एक बार पहले, जब बुद्ध जीवित थे और आर्यजातियों को दर्शन तथा आचार-शास्त्र सिखाते थे, अधिक शीघ्रता से परन्तु छोटे उद्देश्यों के लिये हुई थी। इस समय की भांति तव भी एक शक्तिशाली आत्मा मनुष्यों के बीच अवतरित हुई,—इस बात का कुछ महत्त्व नहीं कि वह आत्मा अवतार थी या विभूति, मनुष्य में ईश्वर की पूर्ण अभिव्यक्ति थी या दिव्यशक्ति का महान् प्रवाह,—और उसने लोगों के दैनिक जीवन और नित्य कर्मों में पूर्ण आध्यात्मिकता की शक्ति और अन्तःप्रेरणा डाल दी। परन्तु इस बार अवतरित हो रही है पूर्ण ज्योति न कि उसका एक श्रेष्ठ भाग मात्र और यह चीज उस बौद्धधर्म से भिन्न है जिसने वेदान्त की नैतिकता को अभिव्यक्त करते हुए भी वेदान्त की मूलभूत सद्वस्तु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की उपेक्षा कर दी, अतएव जिसे अपने प्रधान पद तथा धाम से च्युत कर दिया गया। इसका भौतिक परिणाम तब भी वही हुआ जो अब होगा, एक महान् राजनीतिक, नैतिक और सामाजिक क्रान्ति जिसने भारत को राष्ट्रों का गुरु बना दिया और जो प्रकाश उसके पास देने के लिये था उसे संपूर्ण सभ्य संसार तक पहुंचा दिया—उन विचारों का निर्माण करते हुए और उन बाह्य रूपों की रचना करते हुए जो अवतक भी विद्यमान हैं और जीवित शक्ति हैं। वेदान्त और योग पहले से ही अपनी एशियाई सीमा को पार कर चुके हैं और अमरीका तथा यूरोप के जीवन तथा व्यवहार पर प्रभाव डालना शुरू कर रहे हैं; और वे बहुत समय से सैकड़ों अप्रत्यक्ष प्रणालिकाओं में से छन छनकर पाश्चात्य विचार में पहुंचते रहे हैं। परन्तु ये छोटी नदियां और भूमि के नीचे छिपी हुई धाराएं हैं। संसार दिव्य धारा को उसके अपने पूर्ण रूप में प्राप्त करने के लिये भारत के अभ्युदय की प्रतीक्षा कर रहा है।

योग का अर्थ है ज्ञान के लिये, प्रेम के लिये या कर्म के लिये परमात्मा से अन्तर्मिलन। योगी उससे अपना साक्षात् संबन्ध जोड़ता है जो मनुष्य के भीतर और उसके बाहर सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् है। वह अनन्त से अपना स्वर मिलाये रहता है, वह ईश्वर की शक्ति के लिये प्रणालिका बन जाता है जिससे वह शक्ति अपने आपको शान्त दया या सक्रिय परोपकार के द्वारा संसार में प्रवाहित कर सके। जब मनुष्य अपने पर से स्वार्थी 'स्व' की कैंचुली उतारकर ऊंचा उठता है और दूसरोंके लिये तथा दूसरोंके सुख-दुःख का साथी बनकर जीता है;—जब वह पूर्णता से तथा प्रेम और उत्साह से काम करता है, पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फल की चिन्ता छोड़ देता है और न तो विजय के लिये उत्सुक रहता है, न ही पराजय से भयभीत होता है;—जब वह अपने सब कामों को भगवान् के अर्पण कर देता है और प्रत्येक विचार, उच्चार और आचार को भगवान् की वेदी पर उत्सर्ग कर देता है;—जब वह भय और घृणा, द्वेष और ग्लानि और राग से मुक्त हो जाता है और प्रकृति की शक्तियों की भांति, उतावली न करते हुए, विश्राम न लेते हुए, अटल तौर पर तथा पूर्णता से काम करता है;—जब वह इस विचार से ऊंचा उठ जाता है कि वह शरीर या हृदय या मन है या इनका जोड़ है और अपने आपकी तथा सच्ची आत्मा को पा लेता है;—जब वह अपनी अमरता और मृत्यु की अवास्तविकता से अभिज्ञ हो जाता है;—जब वह ज्ञान के उदय को अनुभव करता है और अपने आपको स्थितिशील अनुभव करता है तथा दिव्य शक्ति को अपने मन, अपनी वाणी, अपनी इन्द्रियों और अपने सब अंगों द्वारा निर्बाध कार्य करते हुए अनुभव करता है;—वह जो कुछ स्वयं है और जो कुछ भी वह करता है या जो कुछ भी उसके पास है उस सबको इस प्रकार सबके स्वामी, मनुष्यजाति के प्रेमी और सहायक पर उत्सर्ग करके जब वह उसमें स्थिर रूप से निवास करता है और दुःख, विक्षोभ तथा मिथ्या उत्तेजन से चलायमान नहीं होता,—वह है योग। प्राणायाम और आसन, एकाग्रता, पूजा, विधिविधान, धार्मिक कर्तव्य—ये चीजें स्वयं योग नहीं हैं परन्तु योग के लिये केवल साधन हैं। योग का मार्ग कोई कठिन या भयानक मार्ग भी नहीं है। यह उन सबके लिये सुरक्षित और सुगम है जो आन्तरिक पथप्रदर्शक और गुरु की शरण ले लेते हैं। क्षमता की दृष्टि से सब लोग इसके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योग्य हैं क्योंकि ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसकी प्रकृति में शक्ति या विश्वास या प्रेम विकसित अथवा प्रसुप्त अवस्था में विद्यमान न हो, और इनमेंसे कोई एक भी योगी के लिये पर्याप्त अवलंबन है। निःसंदेह सब लोग एक जन्म में इस मार्ग में सर्वोच्च शिखर पर नहीं पहुंच सकते, परन्तु सब आगे बढ़ सकते हैं; और जितनी ही मनुष्य उन्नति करता है उतनी ही वह शान्ति, शक्ति और आनन्द पाता है। किन्तु इस धर्म का थोड़ा सा अंश भी मनुष्य या राष्ट्र का महान् भय से त्राण करता है।

"स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।"

हम फिर कहे देते हैं कि यह सोचना गलती है कि आध्यात्मिकता एक ऐसी वस्तु है जिसका जीवन से कोई नाता नहीं। ईशोपनिषद् में कहा है, "सब कुछ त्याग दो जिससे तुम सब कुछ का भोग कर सको। किसी मनुष्य के धन पर जी मत ललचाओ। परन्तु अवश्य ही इस संसार में अपने कर्म करो और अपनी सौ वर्ष की आयु जीने की इच्छा करो। अपने कर्मों के बंधन से मुक्त होने के लिये तेरे सामने इसके सिवाय और कोई मार्ग नहीं खुला है।"* यह सोचना भूल है कि धर्म के शिखर इस संसार के संघर्षों से ऊपर हैं। श्रीकृष्ण की अर्जुन के प्रति बार बार की गयी पुकार संघर्ष पर जोर देती है, "युद्ध कर और अपने शत्रुओं को परास्त कर दे।" "मेरा स्मरण करता जा और लड़ता जा।" "आध्या-

---

*...तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥
कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ ईशोपनिषद् १-२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्मिकता-पूर्ण हृदय से अपने सब कर्मों को मेरे अर्पण कर दे और कामना से रहित होकर, स्वार्थपूर्ण दावों से मुक्त होकर, युद्ध कर ! अपनी आत्मा के ज्वर को दूर कर दे।"* यह कल्पना करना भूल है कि चाहे धार्मिक आदमी अपने साधारण कामों को न भी छोड़े पर वह अत्यंत सात्त्विक, अत्यंत सन्त-स्वभाववाला, अत्यंत प्रेमी या अत्यंत वासनारहित हो जाता है जिससे वह संसार के विषम काम के लायक नहीं रहता। इसपर गीता का जो उत्तर है उसका भाव इससे ठीक विपरीत है और उससे अधिक अतिपूर्ण, समझौते से इन्कार करनेवाला उत्तर और कोई नहीं हो सकता—"जिसका स्वभाव 'अहं' से रहित हो गया है और जो अपनी आत्मा को कर्म के संस्कार से लिप्त नहीं होने देता, वह यदि सारे संसार का भी वध कर डाले तो भी वह वध नहीं करता और वन्धन में नहीं आता।"† संहार के उस मैदान में अर्जुन के रथ को हांकता हुआ कुरुक्षेत्र का सारथि कर्मयोग की मूर्त्ति है और उसका ज्वलन्त वर्णन है; क्योंकि शरीर रथ है और इन्द्रियां हांके जानेवाले घोड़े हैं और संसार के रक्तरंजित तथा पंकपूरित मार्गों में से ही श्रीकृष्ण मनुष्य की आत्मा को वैकुण्ठ की ओर ले जाते हैं।

---

*...युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्॥ गीता ११।३४
तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च....॥ गीता ८।७
मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः॥ गीता ३।३०

†यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते।
हत्वापि स इमांल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते॥ गीता १८।१७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दोनों अवस्थाओं में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तृतीय अध्याय

दोनों अवस्थाओं में

मानवसमाज की दो गतियां होती हैं, ऊर्ध्वमुखी और अधोमुखी, और ये दोनों ही अदम्य हैं। क्षणभर के लिये कभी ऐसा प्रतीत हो सकता है कि अधोमुखी गति रुक गयी है और ऊर्ध्वमुख उठाव थोड़े समय के लिये उन हृदयों को प्रसन्नता दे सकता है जो ईश्वर और दैव द्वारा त्यक्त कर्म में आसक्त हैं। किसी धर्म, विचार या राष्ट्र के शानदार और वेगशाली अभ्युदय को प्रवल शक्ति कुछ समय के लिये रोक सकती है और भयंकर तथा अपरिमित आयास से पहिया एक या दो इंचभर पीछे की ओर हट सकता है, परन्तु ईश्वर को धोखा नहीं दिया जा सकता और ईश्वर को जबर्दस्ती करके जीता नहीं जा सकता। जहां परमात्मा स्वयं सारथि है, वहां विजय निश्चित है और यदि वह पीछे हटता है, तो केवल इसलिये कि जो भूमि अब और आगे उसके लिये लाभदायक नहीं है उसे छोड़ दिया जाय और जिस प्रदेश पर विजय होनी पहले से निश्चित हो चुकी है वहां संघर्ष किया जाय। बहुधा ईश्वर अपने विरोधियों को बाधित करता है कि वे उसे विजित और अधिकृत भूमि से निकाल भगावें ताकि वे एक ऐसी स्थिति के लिये जिसका स्थिर रूप से कायम रहना कभी अभिप्रेत नहीं था, अपनी शक्ति को खत्म कर डालें और अपनी विजय से ही अपनी एक अधिक निर्णायक पराजय की तैयारी कर लें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बारीक छानबीन करनेवाले लोग ब्यौरे की बातों पर दृष्टि डालकर कहते हैं "इस इस बात में हम असफल रहे हैं, उस उसमें सफल हुए हैं"; और अगर पराजयों का पत्रक लंबा तथा संदिग्ध सफलताओं से अधिक वजनदार प्रतीत होता है, तो वे अनुत्साहित हो जाते हैं और अपने कार्य के नाश की आशंका करने लगते हैं। इस प्रकार मनुष्य अपने आपको घटनाओं के रुख के बारे में धोखे में रखते हैं क्योंकि वे अपनी दृष्टि उस अपरिहार्य प्रवृत्ति की महान् धारा पर नहीं डालते जो लौटते गौण प्रवाहों और क्षुद्र धाराओं पर विजय पाती है। और जहां थोड़े समय के लिये पराजय होनी नियत होती है, वहां श्रद्धा का अभाव उन्हें उसी मुसीबत में डाल देता है जिसकी वे आशंका करते थे।

श्रद्धा ज्ञान से भिन्न है। श्रद्धा विषय को सामूहिक और सामान्य रूप से भांप लेती है, ज्ञान उसे साफ और अलग अलग जानता है। परन्तु प्रधानतः श्रद्धा और ज्ञान एक ही हैं और ऋषि की प्रज्ञा प्रेमी की प्रज्ञा को उचित ठहराती है तथा उसका समर्थन करती है। श्रद्धा ईश्वर के लिये तब भी लड़ती है जब ज्ञान अभी पूरी जानकारी के लिये प्रतीक्षा कर रहा होता है, और जबतक ज्ञान अप्राप्त रहता है तबतक श्रद्धा की आवश्यकता रहती ही है। क्योंकि अदम्य श्रद्धा और अन्तःस्फुरित प्रज्ञा के विना कोई बड़ा उद्देश्य सफल नहीं हो सकता।

अतः हमें घटनाओं की महान् प्रवृत्ति को सावधानी से देखना चाहिये और उसके प्रकाश में उन सूक्ष्म घटनाओं का अर्थ लगाना चाहिये जो वर्तमान में घटित हो रही हैं। घटनाओं की मुख्य प्रवृत्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऊपर की ओर है या नीचे की ओर? यदि नीचे की ओर है तो भी हमें अवश्य प्रयत्न करना चाहिये, क्योंकि जो आदमी सच्चे ध्येय को इसलिये छोड़ देता है कि इसमें सफलता नहीं मिल रही, वह गर्हणीय है और वह वर्तमान तथा भविष्य में मनुष्यजाति को आघात पहुंचाता है। बड़े बड़े उद्देश्य, जिनके लिये लोग अन्त तक साहसपूर्वक लड़ मरते हैं, धैर्य और कष्ट से पवित्र हो जाते हैं और उनका पुनरुज्जीवन तथा विजय अनिवार्य होती है। केवल वही काम जिनका समर्थन कायर लोग करते हैं और जिन्हें वे नीचता से बीच में छोड़ देते हैं, भविष्य की पुस्तकों से मिट जाते हैं। मध्य युग में फ्रांस और इटली में नागरिक स्वाधीनता का आंदोलन असफल हुआ और उसने टयूटन लोगों की स्वेच्छाचारिता को स्थान दिया परन्तु फ्रांसीसी राज्यक्रांति के समय यह सौगुनी शक्ति से पुनरुज्जीवित हुआ और उन आत्माओं द्वारा, जो पहले सैकड़ों वर्षों तक इसके लिये लड़ी थीं, पृथ्वी की ओर वेगपूर्वक दौड़कर प्रदान किये गये सहयोग ने ही किसी समय की विजयशालिनी सामन्त-पद्धति को टुकड़े टुकड़े कर दिया। परन्तु यदि प्रवृत्ति ऊपर की ओर है,—जैसी हमारे विश्वास के अनुसार है ही,—तो हमें पूर्ण श्रद्धापूर्वक डटे रहना चाहिये यह निश्चय रखते हुए कि कुछ अंशों में हानि हो जाना तो केवल विजय के सच्चे मार्ग को तैयार करने और उसका निर्देश करने के लिये ही होता है।

डटे रहने का अभिप्राय यह नहीं है कि हम उन उपायों तथा विधियों पर डटे रहें जो निष्फल सिद्ध हुई हैं या ईश्वर ने जिनसे, चाहे वे कुछ समय के लिये फलदायी भी रही हों, अपनी अनुमति हटा ली है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हमें स्मरण रखना होगा कि हम एक ऐसी जाति हैं जिसने वर्तमान राजनीति की विस्तीर्णतर गतियों में शिक्षण अभीतक नहीं पाया है। हमारे सिपाहियों को ही नहीं बल्कि हमारे सेनापतियों और हमारे व्यूहरचना-विशारदों को भी, परिपक्व बनने के लिये, घटनाओं से सीखने की और अनुभव के ज्ञान की आवश्यकता है। तेज, उग्रता, आत्मबलिदान, बौद्धिक बल, सूक्ष्मता, विचारों की संपत्ति, अप्रत्याशित घटनाओं का सामना करने के लिये साधनों की उर्वरता—ये हमें बहुतायत से प्राप्त हैं। किन्तु महान् संग्रामों का चिरकाल का अनुभव रखनेवाले सिद्धहस्त का सा पूर्ण अनुभव, तीव्र राजनीतिक प्रतिभा जो महान् राजकार्यों को और राष्ट्रों के भाग्यों को संभालने के दीर्घकालिक परिचय से उत्पन्न होती है, ये चीजें हममें अभीतक अपरिपक्व हैं और बाल्यावस्था में हैं। परन्तु परमेश्वर स्वयं हमारे शिक्षक और गुरु हैं, वे अपने विशिष्ट राष्ट्र को त्रुटिरहित शिक्षण और पूर्ण सामर्थ्य देंगे। जरूरत केवल इस बात की है कि हम अपनी गलतियों को स्वीकार करने के लिये, अपने मार्ग को बदलने के लिये, सीखने के लिये तैयार रहें। तभी हम सब बाधाओं को सफलतापूर्वक पार कर सकेंगे और स्थिर तथा प्रचण्ड गति से किन्तु ठोकर खाये बिना और विचलित हुए बिना अपने उद्देश्य की ओर बढ़ेंगे।

इसके अतिरिक्त हममें कुछ ऐसी कमजोरियां हैं जो अभीतक चल रही हैं और दूर नहीं की गयी हैं। यह हमारा सर्वप्रथम कर्तव्य है कि हम निर्दय शल्यक्रिया से उन्हें अपने हृदयों से निकाल डालें। यदि बौद्धिक तैयारी की कमी है, तो आत्मिक तैयारी भी बहुत अधूरी है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नेताओं और अनुयायियों दोनोंको आवश्यकता है गम्भीरतर साधना की, हमारे आंदोलन के दिव्य गुरु और दिव्य सेनापति से—भगवान् से—अधिक साक्षात् संबन्ध की, आन्तरिक उत्थान की, विचार और कर्म के मूल में एक बृहत्तर तथा उच्चतर शक्ति की। एक के बाद एक अनुभव से हमें अब यह पता लग गया है कि अपरिपक्व, नैतिकताविहीन यूरोपीय उत्साह के बल पर हम विजयी नहीं होंगे। भारतीयो, भारत की आध्यात्मिकता, भारत की साधना, 'तपस्या', 'ज्ञान' और 'शक्ति' ही हमें अवश्य स्वतंत्र और महान् बनावेगी। परन्तु पूर्व के ये महान् भाव अंग्रेजी के घटिया पर्यायों discipline, Philosophy, Strength से ठीक ठीक प्रकट नहीं होते। 'तपस्या' डिसिप्लिन (discipline) से अधिक कुछ और भी है; यह है उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करनेवाली दिव्यशक्ति को आध्यात्मिक साधनों से अपनी दैहिक सत्ता में चरितार्थ करना। 'ज्ञान' फिलासफी (Philosophy) से कहीं बड़ी चीज है, यह अंतःस्फुरित और साक्षात् ज्ञान है जो उस शक्ति से उदित होता है जिसे हमारे पूर्वपुरुषों ने 'दृष्टि' अर्थात् 'अध्यात्मदृष्टि' शब्द से पुकारा है। 'शक्ति' स्ट्रेन्थ (Strength) से कहीं बड़ी चीज है; जो विश्वव्यापी (समष्टि) शक्ति ग्रह-नक्षत्रों को घुमाती है, उसीका व्यष्टिरूप है शक्ति। निश्चितरूपेण, पूर्व ही भारत के अभ्युदय में विजय लाभ करेगा। योगी को ही राजनीतिक नेता के पीछे स्थित होना होगा और उसके अन्दर व्यक्त होना होगा; रामदास को शिवाजी के साथ एक शरीर में जन्म लेना होगा; मेजिनी को केवर के साथ मिलना होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बुद्धि का आत्मा से, शक्ति का पवित्रता से विच्छेद यूरोपीय क्रांति में सहायक हो सकता है किन्तु यूरोपीय शक्ति से हम विजयी नहीं होंगे।

गत शताब्दी के आंदोलन इसलिये असफल रहे कि वे अत्यन्त विशुद्धतया बौद्धिक थे और उनके पीछे ज्ञानदीप्त हृदय नहीं था। राष्ट्रवाद ने इस न्यूनता को पूरा करने का प्रयत्न किया है; इसने हृदय की महत् प्रेरणाओं को द्रुततर और अधिक विवेकशील बौद्धिक चेष्टा में सम्मिश्रित किया है। परन्तु राष्ट्रवाद भी सदोष रहा है; यह भावना और अभिकांक्षा में भारतीय रहा है पर क्रिया और व्यवहार में यूरोपीय। इसने अपनी लघुता, स्पष्टता, यथार्थता और तीक्ष्ण अन्तर्दृष्टि में आनन्द लेती हुई बुद्धि से सहायता प्राप्त की है, परन्तु इसे अन्तःस्फुरित प्रज्ञा का पर्याप्त आश्रय नहीं मिला है। यह भव्य मानसिक दृश्यों और आदर्शवादों में आसक्त रहा है, परन्तु गम्भीरतर सत्य को देखना और ईश्वर की इच्छा को जानना इसने नहीं सीखा है। जोश और उत्साह भरे आवेगों ने इसे संचालित किया है, परन्तु इसमें कमी थी स्पष्ट इच्छाशक्ति और पवित्र बल की जो किसी भी आवेगमय अनुभव से कहीं अधिक महान् और अधिक तीव्र होते हैं। या तो राष्ट्रवाद अपने आपको पवित्र करेगा, एक अधिक पवित्र सत्य सीखेगा और दिव्यतर प्रेरणा को अपनावेगा या फिर इसे अपना पुराना शरीर सर्वथा छोड़ देना होगा और एक नया शरीर धारण करना होगा। घटनाओं का जोर दूसरी अवस्था का संकेत दे रहा प्रतीत होता है। परन्तु किसी भी अवस्था में पराजय परिणाम नहीं हो सकती, अन्त में विजय ही अवश्यंभावी है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दोनों अवस्थाओं में

पिछले डेढ़ साल की सब घटनाओं में भगवान् गुरु की आवाज हमें पुकार पुकारकर कहती हुई सुनायी दे सकती है, "त्याग करो ताकि तुम प्राप्त कर सको; मेरी इच्छा के अनुसार चलो और अपने आपको जानो, अपने आपको पवित्र करो, अपनी मानसिक तरंगों का अनुसरण करना बन्द कर दो।" जिसके कान हैं वह सुन ले,–आत्मा से संबन्ध जोड़े बिना, अन्तर से प्रकाश पाये बिना, ज्ञान प्राप्त नहीं होगा; उन क्रियात्मक कदमों का भी ज्ञान नहीं होगा जो सफलता तक पहुंचा सकते हैं। वह हर एक कदम जो निम्न ज्ञान के प्रकाश में उठाया जायगा तबतक असफल होता रहेगा जवतक यह सत्य हमारे अन्दर घर न कर लेगा।

दक्षिणेश्वर में जो काम शुरू हुआ था वह पूरा होने से अभी कोसों दूर है, वह समझा भी नहीं गया है। विवेकानन्द ने जो कुछ प्राप्त किया और जिसे अभिवर्द्धित करने का प्रयत्न किया वह अभीतक मूर्त्त रूप में चरितार्थ नहीं हुआ। विजय गोस्वामी ने भविष्य के जिस सत्य को अपने अन्दर निगूढ़ रखा वह अभीतक उसके शिष्यों के सामने पूरी तरह से प्रकट नहीं हुआ है। और अब अधिक खुले ईश्वरीय प्रकाश की तैयारी हो रही है, अधिक ठोस शक्ति प्रकट होने को है, परन्तु यह सब कहां होगा, कब होगा, यह कोई नहीं जानता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारत की जागती हुई आत्मा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चतुर्थ अध्याय

भारत की जागती हुई आत्मा

जो राष्ट्रीय जागृति अपने आपको एक ही क्षेत्र में सीमित रखती है वह विशेष महत्त्वशाली तथा स्थायी नहीं हो सकती। जब आत्मा जागती है तभी, वास्तव में, राष्ट्र जीवित होता है। तब जीवन अपने आपको कर्म और व्यवहार के उन विविध रूपों में प्रकट करेगा जिनमें मनुष्य अपने अन्तःस्थित विस्तारशील आत्मा की शक्ति और आनन्द को प्रकट करने का यत्न करता है। संसार का अस्तित्व आनन्द के लिये ही है, परम पुरुष (परम आत्मा) हर्ष के लिये ही अपने आपको जीवन की महान् और गम्भीर क्रीड़ा में लगाता है; और जिस आनन्द का वह अनुभव करता है वह है बहुविध आत्म-अभिव्यक्ति का आनन्द। इसी कारण कोई दो आदमी एक समान नहीं, कोई दो राष्ट्र भी एक जैसे नहीं हैं। प्रत्येक राष्ट्र की ही मानवजाति की सामान्य प्रकृति के अतिरिक्त अपनी पृथक् प्रकृति होती है। और वह केवल सामान्य मानवीय आवेगों और चेष्टाओं की पूर्ति ही नहीं चाहता, बल्कि अपने निजी स्वभाव और सामर्थ्यों की तृप्ति और अभिवृद्धि की भी मांग करता है। अगर उसकी वह तृप्ति एवं वृद्धि न हो तो वह नष्ट हो जाता है। अतः किसी राष्ट्रीय आंदोलन का बल दो लक्षणों से जांचा जा सकता है। अगर वह आंदोलन अनुकरणात्मक, विदेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से आया हुआ तथा कृत्रिम है, तो उसे अस्थायी सफलता चाहे जितनी प्राप्त हो, परन्तु राष्ट्र आत्मवन्ध्यता और मृत्यु की ओर जा रहा है। इसी तरह प्राचीन यूरोप के राष्ट्र भी नष्ट हो गये जब उन्होंने रोमन सभ्यता, रोमन शान्ति और रोमन समृद्धि की कीमत चुकाने के रूप में उसपर अपने व्यक्तित्व की बलि चढ़ा दी। दूसरी तरफ, अगर जाति का विशिष्ट निजी व्यक्तित्व आंदोलन के प्रत्येक भाग पर अपनी छाप लगाये हुए है और प्रत्येक नये कर्म और प्रेरणा को आत्म-अभिव्यक्ति के साधन के तौर पर ग्रहण करता है तो राष्ट्र जागता है, जीता है तथा बढ़ता है और चाहे राजनीतिक, सामाजिक या बौद्धिक बाह्य रूपों और संस्थाओं में कोई भी क्रान्तियां और परिवर्तन क्यों न हों, परन्तु उसका जीवित रहना और महान् बनना निश्चित है।

भारतवर्ष में उन्नीसवीं सदी अनुकरणपरायण, आत्म-विस्मृतिपूर्ण और कृत्रिम थी। उसने भारत में यूरोप के सफलतापूर्वक अनुकरण को अपना लक्ष्य बनाया। गीता के इस गम्भीर वचन को भुला दिया कि "अपनी सत्ता (स्वभाव) का धर्म चाहे खराब तरह से ही पालन किया जाय, किन्तु वह अच्छी तरह से पालन किये हुए परधर्म से अधिक अच्छा है; अपने धर्म में मर जाना अच्छा है, दूसरे की प्रकृति (स्वभाव) के धर्म का अनुकरण करना भयावह है।" क्योंकि अपने धर्म में हुई मृत्यु नया जन्म देती है और दूसरे के मार्ग में प्राप्त सफलता का अभिप्राय है केवल सफलतापूर्ण आत्मघात। यदि हम अपने आपको यूरोपीय बनाने में सफल हो जाते तो हम अपने आध्यात्मिक सामर्थ्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

या बौद्धिक बल, अपनी राष्ट्रीय क्षमता और अपने पुनरुज्जीवन की शक्ति को सदा के लिये खो बैठते। ऐसी दु:खद घटना इतिहास में अनेक बार घटित हो चुकी है, अब केवल उसमें सबसे अधिक निकृष्ट और शोचनीय उदाहरण एक और बढ़ जाता। अगर देश का संपूर्ण काम काज दूसरों की देखादेखी तथा विदेशी ढंग से चलता होता तो यह परिणाम हमारे ऊपर आ सवार होता। परन्तु राष्ट्र के प्राण बंगाल और पंजाब के धार्मिक आंदोलनों में, महाराष्ट्र की राजनीतिक अभिकांक्षाओं में तथा बंगाल की साहित्यिक प्रवृत्ति में अब-तक भी गति कर रहे थे। किन्तु यहां भी ये एक गुप्त धारा-रूप ही थे, मानो भारत की विशिष्ट प्रकृति और जीवनशक्ति, विदेशी विचारों और विदेशी रूपों के बोझ के नीचे दबी हुई, आत्मरक्षा के लिये कशमकश कर रही हों, और जब इन दो शक्तियों के संघर्ष में राष्ट्रीय धर्म का पलड़ा भारी हुआ तभी भारत का उद्धार निश्चित सत्य बना। हिन्दूधर्म का अनुदार अंश यद्यपि तामसिक, निष्क्रिय, अज्ञानपूर्ण और अनुत्पादक था तथापि उसके प्रतिरोध ने देश को बचा लिया। वह इस प्रकार कि उसने अधिक तीव्र तथा पूर्ण अंगभंग को रोक दिया,—नहीं तो जितना नाश हुआ उससे कहीं अधिक होता,—तथा राष्ट्रीय आत्मा को उदित होने और अपने आपको पहिचानने के लिये अवसर एवं समय दे दिया। पहले पहल भारत की आत्मा धर्म में ही जागी और विजयिनी हुई। संकेत तो सदा ही दीखते थे, सदा ही महान् पूर्व-चिह्न प्रकट होते रहे, परन्तु युद्ध तो तभी जीता गया जब कलकत्ता के शिक्षितशिरोमणि युवकगण एक अनपढ़ हिन्दू तपस्वी के, एक आत्म-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाश से प्रकाशित, आनन्दोन्मत्त और "गुह्यदर्शी" के, जिसे विदेशी विचार या शिक्षा के लवलेश ने भी स्पर्श नहीं किया था, चरणों पर नतमस्तक हो गये। उस वीर विवेकानन्द का प्रकट होना, जिसे लक्ष्य कर उसके गुरु ने कहा था कि यह एक ऐसा पुरुषसिंह है जो संसार को अपने दोनों हाथों में लेकर बदल डालेगा, इस बात का प्रथम प्रत्यक्ष चिह्न था कि भारत केवल जीता रहने के लिये नहीं अपितु विजय पाने के लिये सचेत है। कुछ समय बाद जब जागृति पूर्ण हो गयी तब राष्ट्रीय आन्दोलन का एक प्रवाह, अपनी कल्पना में, अंग्रेजों के आने से ठीक पहले के भूत का, सब बारीकियों सहित, पुनर्निर्माण करने की ओर झुका। यह वास्तव में संभव न था। जड़ता को, फैलने और बदलने की असमर्थता को ही हमारा दर्शन तमस् के नाम से पुकारता है, और तमस् की अधिकता उच्छेद और नाश करनेवाली होती है। आक्रमण आत्मरक्षा के लिये आवश्यक है, और जब कोई शक्ति विजय करना बन्द कर देती है, तो वह जीवित नहीं रहती—जो वस्तु स्थितिशील रहती है और केवल आत्मरक्षा का सहारा लेती है, अथवा अब बन्द हो गये "संध्या" पत्र की सजीव भाषा मं, जो वस्तु अपने 'कोट' (दुर्ग) या आधार की ओर पीछे लौटती तथा उसके अन्दर रहती है, वह निश्चयपूर्वक पराजय एवं ह्रास को प्राप्त होती है तथा अन्त मं संसार की जीवित वस्तुओं से निकाल दी जाती है। हिन्दूधर्म सदा ही सचल और आक्रमणकारी रहा है; इसने शत्रु के दल पर हमला किया है, उसके सेनास्थानों पर कब्जा किया है, उसके खजानों को लूट लिया है, उसके पास जो जो भी कीमती वस्तु थी उस उसको अपना बना लिया है और अन्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में या तो उसे पूरी तरह से अपने अधिकार में कर लिया है या फिर अधिक समय तक उसके ठहरने को निष्प्रयोजन अथच असंभव बना दिया है। जब कभी इसने केवल आत्मरक्षावृत्ति का अवलंबन लिया तब यह जरा तंग सीमाओं में सिमट गया और तभी क्षीणता के अस्थायी चिह्न भी दिखायी दिये।

एक बार जब राष्ट्र की आत्मा धर्म में जागृत हो उठी, तो उसके लिये राष्ट्रीय जीवन की आध्यात्मिक तथा बौद्धिक सभी प्रवृत्तियों को प्रभावित करना तथा उनपर अपना अधिकार कर लेना केवल समय और अवसर की बात थी। वंगभंग के बाद यूरोपवासियों के विरोध में जो भाव उमड़ा उसने अभीष्ट अवसर दे दिया। क्रोध, बदला लेने का भाव और विद्वेष अपने आपमें प्रशंसनीय भाव नहीं हैं; परन्तु ईश्वर उन्हें अपने प्रयोजनों के लिये प्रयुक्त करता है और बुराई में से भलाई पैदा करता है। उन्होंने उदासीनता और मानसिक जड़ता को निकाल फेंका और उनके स्थान पर शक्ति तथा शक्तिशाली भाव को जन्म दिया; और राष्ट्र की आत्मा ने उस शक्ति तथा भाव को पकड़ लिया तथा उन्हें भविष्य के काम में लगा दिया। यूरोपवासियों के प्रति द्वेषपूर्ण क्रोध तथा उनके व्यापार, व्यवसाय एवं वाणिज्य-सामग्री के प्रति बदले का भाव, उनसे संबद्ध प्रत्येक चीज के प्रति अरुचि—इस सबने एक ऐसी प्रवृत्ति की प्रबल धारा पैदा कर दी जिसने आंगल-भावापन्न निकट भूतकाल से मुंह मोड़ लिया, और जो भावना हमारे धार्मिक जीवन में अपने आपको पहले से घोषित कर चुकी थी वह इस खुले प्रवेशद्वार से राजनीति में प्रविष्ट हुई और उसने (आंगलभावापन्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाश से प्रकाशित, आनन्दोन्मत्त और "गुह्यदर्शी" के, जिसे विदेशी विचार या शिक्षा के लवलेश ने भी स्पर्श नहीं किया था, चरणों पर नतमस्तक हो गये। उस वीर विवेकानन्द का प्रकट होना, जिसे लक्ष्य कर उसके गुरु ने कहा था कि यह एक ऐसा पुरुषसिंह है जो संसार को अपने दोनों हाथों में लेकर बदल डालेगा, इस बात का प्रथम प्रत्यक्ष चिह्न था कि भारत केवल जीता रहने के लिये नहीं अपितु विजय पाने के लिये सचेत है। कुछ समय बाद जब जागृति पूर्ण हो गयी तब राष्ट्रीय आन्दोलन का एक प्रवाह, अपनी कल्पना में, अंग्रेजों के आने से ठीक पहले के भूत का, सब बारीकियों सहित, पुनर्निर्माण करने की ओर झुका। यह वास्तव में संभव न था। जड़ता को, फैलने और बदलने की असमर्थता को ही हमारा दर्शन तमस् के नाम से पुकारता है, और तमस् की अधिकता उच्छेद और नाश करनेवाली होती है। आक्रमण आत्मरक्षा के लिये आवश्यक है, और जब कोई शक्ति विजय करना बन्द कर देती है, तो वह जीवित नहीं रहती–जो वस्तु स्थितिशील रहती है और केवल आत्मरक्षा का सहारा लेती है, अथवा अब बन्द हो गये "संध्या" पत्र की सजीव भाषा मं, जो वस्तु अपने 'कोट' (दुर्ग) या आधार की ओर पीछे लौटती तथा उसके अन्दर रहती है, वह निश्चयपूर्वक पराजय एवं ह्रास को प्राप्त होती है तथा अन्त मं संसार की जीवित वस्तुओं से निकाल दी जाती है। हिन्दूधर्म सदा ही सचल और आक्रमणकारी रहा है; इसने शत्रु के दल पर हमला किया है, उसके सेनास्थानों पर कब्जा किया है, उसके खजानों को लूट लिया है, उसके पास जो जो भी कीमती वस्तु थी उस उसको अपना बना लिया है और अन्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में या तो उसे पूरी तरह से अपने अधिकार में कर लिया है या फिर अधिक समय तक उसके ठहरने को निष्प्रयोजन अथच असंभव बना दिया है। जब कभी इसने केवल आत्मरक्षावृत्ति का अवलंबन लिया तब यह जरा तंग सीमाओं में सिमट गया और तभी क्षीणता के अस्थायी चिह्न भी दिखायी दिये।

एक बार जब राष्ट्र की आत्मा धर्म में जागृत हो उठी, तो उसके लिये राष्ट्रीय जीवन की आध्यात्मिक तथा बौद्धिक सभी प्रवृत्तियों को प्रभावित करना तथा उनपर अपना अधिकार कर लेना केवल समय और अवसर की बात थी। वंगभंग के बाद यूरोपवासियों के विरोध में जो भाव उमड़ा उसने अभीष्ट अवसर दे दिया। क्रोध, बदला लेने का भाव और विद्वेष अपने आपमें प्रशंसनीय भाव नहीं हैं; परन्तु ईश्वर उन्हें अपने प्रयोजनों के लिये प्रयुक्त करता है और बुराई में से भलाई पैदा करता है। उन्होंने उदासीनता और मानसिक जड़ता को निकाल फेंका और उनके स्थान पर शक्ति तथा शक्तिशाली भाव को जन्म दिया; और राष्ट्र की आत्मा ने उस शक्ति तथा भाव को पकड़ लिया तथा उन्हें भविष्य के काम में लगा दिया। यूरोपवासियों के प्रति द्वेषपूर्ण क्रोध तथा उनके व्यापार, व्यवसाय एवं वाणिज्य-सामग्री के प्रति बदले का भाव, उनसे संबद्ध प्रत्येक चीज के प्रति अरुचि—इस सबने एक ऐसी प्रवृत्ति की प्रबल धारा पैदा कर दी जिसने आंगल-भावापन्न निकट भूतकाल से मुंह मोड़ लिया, और जो भावना हमारे धार्मिक जीवन में अपने आपको पहले से घोषित कर चुकी थी वह इस खुले प्रवेशद्वार से राजनीति में प्रविष्ट हुई और उसने (आंगलभावापन्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूतकाल के स्थान पर) राष्ट्रीय भूत के लिये भावात्मक शक्तिशाली उत्कण्ठा तथा एक सच्चे राष्ट्रीय भविष्य के लिये और भी अधिक प्रबल तथा क्रियाशील उत्कण्ठा को जन्म दिया। भारतीय भावना ने अबतक यथार्थ रूप में हमारी राजनीति का संपूर्ण क्षेत्र नहीं जीता है, परन्तु भाव में यह वहां विजयी होकर विद्यमान है; शेष सब तो समय की बात है, और वह प्रत्येक घटना जो अब राजनीति में घटित हो रही है, इस भावना की सच्ची और शक्तिशालिनी अभिव्यक्ति की तैयारी में सहायता दे रही है। अब भविष्य सुनिश्चित है। राष्ट्र की आत्मा की दो अत्यन्त प्रभावकारी और बलशाली अभिव्यक्तियों, धर्म और राजनीति, का जब राष्ट्रीयकरण हो लेगा तो शेष सब भी यथासमय हो जायगा। हमारे धार्मिक और राजनीतिक जीवन की आवश्यकताएं अब जीती जागती और वास्तविक शक्तियां हैं और यही आवश्यकताएं ही हमारे समाज का पुनर्निर्माण करेंगी, हमारे व्यावसायिक और व्यापारिक जीवन की पुनः सृष्टि करेंगी और उसे नये सांचे में ढालेंगी और उस नयी तथा विजयशालिनी कला, विजयशाली साहित्य, पदार्थविज्ञान और दर्शन की नींव रखेंगी जो यूरोपीय नहीं बल्कि भारतीय होंगे।

यह प्रवृत्ति बंगाली कला और साहित्य में पहले से ही काम कर रही है। राजनीति में राष्ट्रीय आत्मा की अभिव्यक्ति की आवश्यकता सहसा ही बंगाली साहित्य को उसकी तात्त्विक और नित्य आत्मा की ओर लौटा लायी और उसने अपनी इस आत्म-चरितार्थता को हमारे नये राष्ट्रीय गीतों में प्राप्त किया। भावना-प्रधान काव्य और उस काव्य के अनुरूप भावना; सरल, सीधे और सुतीव्र अभिव्यंजन की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भावना; गहरे अतिप्रबल सरलतापूर्ण आवेश की भावना; स्पष्ट और उदात्त उत्साह की भावना; माधुर्य और बल से मिश्रित प्रेम और भक्ति का प्रधान स्वर; आत्मप्रकाशयुक्त हृदय से शासित सामर्थ्य-पूर्ण बुद्धि; अनुभव और आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि का गूढ़ उदात्तीकरण जो स्पष्ट साकारता और क्रियात्मकता के साथ अपने को प्रकट करता है—यह है बंगाल की आत्मा। हमारा समस्त साहित्य, समग्रतया जीवित बनने के लिये, इसी आधार को लेकर चलेगा और चाहे यह किन्हीं भी परिवर्तनों में रस क्यों न लेता रहे किन्तु उस आधार के संपर्क को खो नहीं देगा। बंगाल में फिर से राष्ट्रीय भावना अपने आपको कला में तृप्त करने की चेष्टा कर रही है और मुगलों के पतन के बाद पहली बार राष्ट्रीय कला का एक नया संप्रदाय अपने आपको उन्नत कर रहा है—वह संप्रदाय जिसके संस्थापक और गुरु अवनीन्द्रनाथ ठाकुर हैं। यह अबतक भी उस विदेशीय यद्यपि एशि-याई प्रभाव से अभिभूत है जिससे इसके गुरु ने प्रारंभ किया था, और यह देखने में कुछ विदेशीय प्रतीत होता है, परन्तु इस अस्थायी प्रभुत्व से राष्ट्रीय आत्मा का मुक्त होना और उन्नत होना अभीसे दीख रहा है तथा समझ में आ रहा है। वहां भी बंगाल की ही भावना अपनेको प्रकट कर रही है। जो रूपरहित और सीमारहित है उसे यत्किंचित् रूप और सीमा में व्यक्त करने का प्रयत्न भारतीय कला का प्रयत्न है। यूनानियों ने एक अधिक छोटे और अधिक सुगमतया प्राप्तव्य लक्ष्य को दृष्टि में रखकर पूर्णतर सफलता प्राप्त की। भौतिक रूप के लिये उनकी सहज प्रेरणा हमारी अपेक्षा महान् थी, आन्तरा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्मिक आकृति और रंग के लिये हमारी सहज प्रेरणा अधिक उत्कृष्ट थी। हमारी भावी कला को पदार्थ में निहित आत्मा के व्यक्त करने की समस्या हल करनी होगी, जो एक महान् भारतीय लक्ष्य है; और साथ ही पूर्ण, भावबोधक रूप और रंग की विजयशालिनी संगति भी नये सिरे से प्राप्त करनी होगी। अन्य किसी भी भारतीय में रूप के लिये इतनी प्रबल सहज प्रेरणा नहीं है जितनी बंगाली में। सभी भारतीय जातियों के सहजात वेदान्तवाद के साथ ही, उसमें कोमलता, छवि और शक्ति के लिये अत्यन्त दृढ़ भावना है। और ठीक इन्हीं गुणों की ओर कला का नवीन संप्रदाय अपने प्रथम उपक्रम में ही सहज प्रेरणा से झुका है। प्राचीन भारतीय कला के अत्यल्प अवशेषों में पूर्ण आदर्श पा सकने में असमर्थ होने पर अवनीन्द्र-सम्प्रदाय को बाध्य होकर जापान की सहायता लेनी पड़ी है, क्योंकि वहां सूक्ष्मता और छवि विजयशालिनी हैं। परन्तु पदार्थ के अन्दर की गभीरतम आत्मा को व्यक्त करने का गुप्त रहस्य जापान को विदित नहीं है, वह उसका लक्ष्य ही नहीं है। फिर बंगाली भावना का अर्थ कोमलता, छवि और शक्ति के मेल से भी अधिक है; इसमें भावनाकाव्यात्मक गूढ़ प्रेरणा है; इसमें स्पष्टता और साकारता के प्रति गाढ़ अनुराग है और जैसे अपने साहित्य में वैसे अपनी कला में हम इन प्रवृत्तियों को उभरते देखते हैं—सौंदर्य के भाव को, नामरहित माधुर्य और आध्यात्मिकता को स्पष्ट रेखा और रूप में व्यापते हुए देखते हैं। यहां भी राष्ट्र की स्वतंत्र आत्मा ही अपने आपको विदेशीय सीमाबंधनों और शृंखलाओं से उन्मुक्त करने का यत्न कर रही है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हमारे जीवन का कोई भी विभाग इस महान् तथा संस्कार एवं पुनर्निर्माण करनेवाली शक्ति के प्रभाव से बचा नहीं रह सकता। इसमें संदेह नहीं कि हमारे समाज को ऐसे पुनर्निर्माण में से गुजरना होगा जो क्रान्ति की हद तक पहुंच सकता है, परन्तु यह यूरोपीयकरण के लिये नहीं होगा जैसे कि सामान्य सुधारक अज्ञानपूर्वक आशा करता है, बल्कि यह होगा समाज में राष्ट्रीय आत्मा की महत्तर और पूर्णतर उपलब्धि के लिये। व्यक्तिगत स्वार्थ और पारस्परिक क्षय करनेवाला संघर्ष नहीं, बल्कि प्रेम तथा एकीभूत अभेद्य जीवन में व्यक्तियों को बांध देना ही राष्ट्रीय प्रवृत्ति है। भूतकाल में इस प्रवृत्ति ने संयुक्त कुटुम्ब में रुधिर के वन्धन के द्वारा अपने आपको पूर्ण करने का यत्न किया, ग्राम-पद्धति में आंशिक समष्टिसत्तावाद के बन्धन के द्वारा, जातपांत में जन्म के तथा समाजगत प्रतिष्ठा के भाव के बन्धन द्वारा। भविष्य में यह प्रवृत्ति संभवतः अधिक पूर्ण तथा आध्यात्मिक संबन्ध को खोज निकालेगी। व्यापार में भी जबतक हम यूरोपीय भावना और यूरोपीय नमूने का अनुसरण करेंगे अर्थात् वैयक्तिक प्रतियोगितापूर्ण स्वार्थ, सम्मिलित पूंजी-कंपनी में केवल स्वार्थ के बन्धन या सहकारी पूंजीवाद की निकृष्ट-तम और सबसे अधिक भयानक प्रगति का, घोर, अष्टपाद-सदृश विकराल आकारवाले ट्रस्ट और व्यवसायसंघ का अनुसरण करेंगे तबतक हम स्वस्थ व्यावसायिक जीवन का पुनर्निर्माण करने में कभी सफल नहीं होंगे। ये बन्धन भारतीयों को कभी नहीं जोड़ सकते। भारत ऐसे गम्भीरतर और महत्तर जीवन की ओर जा रहा है जिसकी संसार ने कभी कल्पना भी नहीं की। परन्तु जब वह उन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विविध प्रवृत्तियों में अपने आपको व्यक्त करने के रहस्य को पा लेगा तभी उसका व्यावसायिक और सामाजिक जीवन दृढ़ और व्यापक बन सकेगा।

अबतक राष्ट्रवाद अधिकतर अपने आपको यूरोप के सांचे में ढालने की प्रवृत्ति के प्रति विद्रोहरूप ही रहा है; परन्तु उस प्रत्येक छोटी छोटी बात से जो भारतीय रह चुकी है चिमटने की जो प्रवृत्ति होती है उससे भी इसे सावधान रहना होगा। भूतकाल में हिन्दूधर्म की वैसी भावना नहीं रही है, अतः यह मानने का कोई कारण नहीं कि भविष्य में ऐसी होगी। जीवन मात्र में तीन तत्त्व हैं, नियत और स्थिर आत्मा, विकसित होती हुई पर तो भी शाश्वत अन्तरात्मा और भंगुर परिवर्तनशील शरीर। आत्मा को हम बदल नहीं सकते, उसे केवल आच्छादित कर सकते या खो सकते हैं। अवश्य ही, अन्तरात्मा में बिना विचारे दखल नहीं देना चाहिये, न तो इसे इससे विजातीय आकार में जकड़ना चाहिये, नाहीं इसके स्वतंत्र विस्तरण में बाधा पहुंचानी चाहिये। और शरीर को साधन के तौर पर ही प्रयुक्त करना चाहिये, इसका लालन पालन करने में इस तरह अति नहीं करनी चाहिये कि मानो यह कोई अपने लिये ही बहुमूल्य वस्तु हो। परिवर्तन करने के किसी अन्धे प्रेम पर हम अपने किसी प्राचीन रूप की बलि नहीं दे देंगे और न हम किसी ऐसे रूप को स्थिर ही रखेंगे जिसे राष्ट्रीय भावना किसी दूसरे रूप से बदल देना चाहती है जो राष्ट्र की अमर आत्मा की और भी अधिक अच्छी तथा अधिक सच्ची अभिव्यक्ति हो सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बलिदान का सिद्धान्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पञ्चम अध्याय

बलिदान का सिद्धान्त

आत्मबलिदान का भाव सब राष्ट्रों और सभी व्यक्तियों में आम नहीं है; यह दुर्लभ और अति उत्कृष्ट है, यह मनुष्यजाति की नैतिक उन्नति का पुष्पित रूप है, स्वार्थरत पशुत्व से स्वार्थरहित देवत्व की ओर हमारे क्रमिक उदय का प्रमाण है। जिस मनुष्य में आत्मबलिदान का सामर्थ्य है उसने पशुत्व को अपने से दूर तज दिया है, चाहे उसके अन्य प्रकार के पाप कितने भी क्यों न हों; उसमें भावी और उच्चतर मानवता के निर्माण की सामग्री है। जो राष्ट्र राष्ट्रीय तौर पर आत्मबलिदान करने का सामर्थ्य रखता है उसका भविष्य सुरक्षित है।

आत्मबलिदान चाहे अनैच्छिक हो या स्वार्थ के रूपों से आवृत, वह हमारे जीवन की शर्त्त है। मानवता में इसकी क्रमिक वृद्धि हुई है। प्रथम बलिदान सदा ही स्वार्थमय होते हैं—उनमें अपनी उन्नति के लिये दूसरोंका बलिदान समाविष्ट रहता है। एक माता में, जो अपने बच्चे के लिये अपना जीवन बलिदान करने के लिये तैयार है, पाशविक प्रेम की सहज प्रवृत्ति पहला कदम आगे बढ़ा लेती है, उसी प्रकार एक पुरुष में जो अपनी स्त्री के लिये अपने जीवन की बलि देने को तैयार है, रक्षा की सहजप्रवृत्ति पहला कदम आगे बढ़ा लेती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस प्रवृत्ति की वृद्धि इस बात का चिह्न है कि आत्मा के संबंध में हमारा मानसिक विचार विस्तृत हो गया है। जबतक मनुष्य अपने शरीर और उसकी इच्छाओं को ही अपनी "मैं" करके जानता है तबतक जीव की अवस्था अप्रगतिशील है और पाशविक है। जब "मैं" की परिधि विस्तृत होकर स्त्री-पुत्र को अपने अन्तर्गत कर लेती है तभी प्रगति संभव हो पाती है। यह मनुष्यता की सबसे पहली अवस्था है, किन्तु इसमें भी पशुत्व की कुछ मात्रा बची रहती है क्योंकि इसमें स्त्री और बच्चों के संवन्ध में कुछ इस प्रकार का विचार रहता है कि ये मनुष्य के अपने सुख, बल, शान, आराम के लिये अभिप्रेत चल व अचल संपत्ति-रूप हैं। पर परिवार इस दृष्टि से देखा जाने पर भी सभ्यता का आधार बनता है, क्योंकि यह सामाजिक जीवन को संभव बना देता है। परन्तु मनुष्य में देवत्व की वास्तविक उन्नति तबतक नहीं शुरू होती जबतक परिवार अपने शरीर के जीवन से इतना अधिक प्रियतर नहीं हो जाता कि मनुष्य इसके लिये अपने स्वार्थ का बलिदान करने और इसके हित अथवा इसके रक्षण के लिये अपने आराम वा अपने जीवन तक का उत्सर्ग कर देने के लिये तैयार हो जाय। परिवार के लिये अपने आराम को त्याग देना, यह एक ऐसी अवस्था है जिसे बहुत मनुष्य प्राप्त कर चुके हैं; स्त्री के सम्मान या घर की सुरक्षा के लिये अपने जीवन का उत्सर्ग कर देना, यह एक उच्चतर प्रकृति का कार्य है जिसमें मनुष्य व्यष्टि-रूप में तथा विशेष वर्गों के रूप में भी समर्थ होता है, परन्तु समष्टि-रूप में नहीं। परिवार के बाद समाज या जनसंघ आता है और इस प्रकार आत्मा के विस्तार में अगला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कदम तब उठाया जाता है जब शरीरस्थ आत्मा और परिवारनिष्ठ आत्मा के साथ तादात्म्य, समाजवर्ती या संघवर्ती आत्मा के साथ तादात्म्य के सामने झुक जाता है। यह स्वीकार करना कि मनुष्य पर अपने परिवार की अपेक्षा अपने जनसंघ का अधिक बड़ा दावा है, सामाजिक अवस्था की ओर प्रगति की सबसे पहली शर्त्त है। यह अवस्थाक्रम वैसा ही है जैसा पितृशासित परिवार में से जाति का विकास और उन सांघिक संस्थाओं की परिपक्वावस्था जिनका नमूना था हमारा ग्रामसंघ या पंचायत। यहां फिर, संघ के अधिक विस्तृत स्वार्थ पर पारिवारिक स्वार्थ की बलि चढ़ाने के लिये सदा उद्यत रहना, सांघिक जीवन की सर्वप्रथम आवश्यक अवस्था होनी चाहिये और संघ की सुरक्षा के लिये अपना जीवन दान कर देना एक दिव्यता का कार्य होना चाहिये, जो दिव्यता कि विस्तृत होती हुई आत्मा की सांघिक विचार में पूर्णता-प्राप्ति का चिह्न है। अगला विशालीकरण है राष्ट्रगत आत्मा। राष्ट्र का विकास एक ऐसी प्रगति है जो आधुनिक अवस्था में मानवता के लिये अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि मनुष्य के स्वार्थ को, परिवार के स्वार्थ को तथा वर्ग के स्वार्थ को जिनकी गहरी जड़ें आज तक भी अतीत में जमी हुई हैं, अब विशालतर राष्ट्रीय आत्मा में अपने आपको विलुप्त कर देना अवश्य सीखना होगा, जिससे कि मानवजाति में भगवान् का क्रमविकास हो सके। इसीलिये राष्ट्रवाद इस युग का धर्म है, और भगवान् हमारी सार्वजनीन भारतमाता के रूप में अपने आपको हमारे सामने व्यक्त कर रहा है। राष्ट्रीयता का निर्माण करने के लिये सर्वप्रथम प्रयत्न थे यूनानी नगर, सैमिटिक या मंगोलियन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एकराजतन्त्र, कैल्टिक गण, आर्य कुल या जाति। इन सब विचारों के संमिश्रण के ही फलस्वरूप, आगे चलकर मध्यकालीन राष्ट्र बने और आधुनिक जनताओं वा राष्ट्रीय प्रजाओं का विकास हुआ। यहां फिर, विशालतर राष्ट्रीय स्वार्थ पर अपने स्वार्थ, पारिवारिक स्वार्थ, वर्ग के स्वार्थ की बलि चढ़ाने के लिये उद्यत रहना ही मानवता की राष्ट्र के रूप में पूर्णताप्राप्ति की शर्त्त है और इसकी भलाई या सुरक्षा के लिये मर मिटना विशालतर राष्ट्रीय 'अहं' में आत्मा की पूर्णता-प्राप्ति का परम कार्य है। इससे भी अधिक ऊंची एक पूर्णता है जिसके लिये कुछ एक व्यक्तियों ने ही अपने को तैयार दिखलाया है, वह है सारी मानवता को अन्तर्गत कर लेने के लिये आत्मा का विस्तार। मानवतावाद के आदर्शों पर कुछ एक व्यक्तियों के निज स्वार्थ की बलि चढ़ा देने से इस दिशा में आगे कदम बढ़ाया जा चुका है, परन्तु राष्ट्र के हितों का मानवता के विशालतर हित पर बलिदान कर डालना एक ऐसा कार्य है जिसके लिये मानवता समष्टि-रूप में अभीतक तैयार व समर्थ नहीं हुई है। परमेश्वर तैयारी करता है, पर वह फल को उसकी ऋतु से पहले पकाने की जल्दी नहीं करता। एक समय आवेगा जब यह भी संभव होगा, परन्तु वह समय अभी नहीं है। न ही मानवता के लिये यह अच्छा होगा कि वह बृहत्तर अवस्था अपने से इतर तथा लघुतर एकमयता—आत्मा की राष्ट्रीय अहं के साथ एकमयता—के पूरा होने से पहले ही आ उपस्थित हो; क्योंकि ऐसा होने से फिर पीछे हटना आवश्यक हो जायगा ताकि जिस अवस्था को छोड़ दिया गया है उसे पीछे हटकर, ठहरकर सुरक्षित कर लिया जाय। मानवता का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आगे बढ़ना एक अविरत प्रगति है और दूर आगे की स्थितियों पर जल्दी से जा पहुंचने में कोई बड़ा लाभ नहीं है, जबतक कि पीछे के आवश्यक स्थान काबू में न लाये जा चुके हों।

राष्ट्रीय अहं का सहज ही में यह अर्थ हो सकता है कि यह सामूहिक स्वार्थपरता है, इससे अधिक कुछ नहीं। मैं देश के लिये धनदौलत और आराम का बलिदान करने को तैयार हो सकता हूं ताकि अपने धन, यश या स्थिति और संपत्ति को, जो उसकी सुरक्षा और महत्ता पर निर्भर हैं, सुरक्षित रख सकूं। मैं अपनी उस घर-गृहस्थी की रक्षा के हेतु, जिसे राष्ट्र की सुरक्षा दृढ़ कर देती है, इनका और इनसे भी अधिक चीजों का उसपर बलिदान करने को उद्यत हो सकता हूं। मैं उसके लिये बहुत कुछ बलिदान करने को तैयार हो सकता हूं क्योंकि उसकी महत्ता, ऐश्वर्य, आराम का अर्थ होता है मेरे संघ या मेरे वर्ग की महत्ता, ऐश्वर्य, आराम। या उसमें मेरा स्वाभिमान निहित होने के कारण और अपने राष्ट्र को बलशाली तथा साम्राज्यशाली देखने की मेरी इच्छा होने के कारण, उसकी महत्ता को अधिगत करने के लिये मैं प्रत्येक चीज का उत्सर्ग करने को उद्यत हो सकता हूं। ये सब स्वार्थ के रूप हैं जो मनुष्य का उस विशालतर जीवन में पीछा करते हैं जो उसे स्वार्थ से मुक्त करने में सहायता करने के लिये अभिप्रेत है। पूंजीवाद एवं साम्राज्यवाद प्रभृति जो महारोग आधुनिक राष्ट्रों को पीड़ित कर रहे हैं उनका मूल यह दृढ़ स्वार्थपरता ही है। यह उस अभिमान, मद और अन्याय का उद्गम है जो किसी राष्ट्र की समृद्धि पर आघात पहुंचाते हैं और, उस घातक प्रगति के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्वारा जिसकी यूनानियों ने (इन चीजों के लिये तीव्र संवेदन-शक्ति होने के कारण) स्पष्टतया सीमा निर्धारित की थी, यह स्वार्थपरता उस समृद्धि से मद और क्रोधावेश की ओर ले जाती है और मद तथा क्रोधावेश से उस अन्धसंमोह की ओर जो मनुष्यों और राष्ट्रों के संहार के लिये ईश्वर का साधन है। इस पीछा करनेवाली बुराई का एक ही इलाज है और वह है राष्ट्र को सर्वसमान मानवता में एक आवश्यक इकाई मात्र समझना पर इससे अधिक कुछ नहीं।

किसी राष्ट्र के जीवन में दो अवस्थाएं आती हैं, पहली तब जब यह अपना निर्माण या नव-निर्माण कर रहा होता है, दूसरी, जब यह निर्मित, गठित और शक्तिशाली हो जाता है। पहली वह अवस्था है जब राष्ट्रवाद व्यक्ति के सामने अपनी बड़ी से बड़ी मांगें उचिततया ही पेश करता है, दूसरी में इसे अपनी मांगों को न्यून कर देना चाहिये और, अपनेको तृप्त करके, विश्वबन्धुत्व में सुरक्षित रखना चाहिये कुछ वैसे ही ढंग से जैसे व्यक्ति अपने आपको परिवार में सुरक्षित रखता है, परिवार अपनेको वर्ग में, वर्ग राष्ट्र में—अपनेको अनावश्यक तौर पर नष्ट करते हुए नहीं बल्कि विशालतर हित को अंगीकार करते हुए। किसी पराधीन राष्ट्र के अपने पृथक् अस्तित्व को उपलब्ध करने के लिये किये गये संघर्षों में इस विशालतर हित को एक आगे आनेवाली दूर की वस्तु के तौर पर ही सामने रखा जा सकता है, और विशालमनयुक्त तथा उदार देशभक्ति के एक उच्चतर प्रेरक के तौर पर ही अपनाया जा सकता है। ऐसे राष्ट्र का विशालतर हित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर कोई वलिदान संभव नहीं है, क्योंकि उच्चतर भलाई के लिये अपने हितों की बलि दे सकने के पूर्व उस राष्ट्र को अपना अस्तित्व अवश्य सुस्थिर कर लेना होगा।

इस समय हमारी अवस्था प्राथमिक या निर्माणोन्मुखी है और इस अवस्था में राष्ट्रवाद की मांग पूरी करना अनिवार्य है। राष्ट्र का निर्माण करने के परम ध्येय पर व्यक्ति, परिवार और वर्ग के बलिदानों से ही यह संभव होगा कि ऐसी विरोधी परिस्थितियों में भी राष्ट्रवाद अपनी सत्ता के लिये आवश्यक सर्वप्रथम अवस्थाओं को सुरक्षित तौर पर दृढ़ कर सके। नवीन राष्ट्रीयता का प्रत्येक कार्य कष्ट-सहन और आत्मत्याग के लिये पुकार-रूप होकर उपस्थित होता रहा है। स्वदेशी एक ऐसी ही पुकार थी, पंचायत एक ऐसी ही पुकार थी, राष्ट्रीय शिक्षा एक ऐसी ही पुकार थी; इन सबसे बढ़कर, निष्क्रिय प्रतिरोध एक ऐसी ही पुकार थी। व्यक्ति और परिवार का राष्ट्र के हितों पर उत्सर्ग करने की आम तैयारी के बिना इनमेंसे कोई भी चीज उपलब्ध नहीं की जा सकती। आजकल एक नयी पुकार स्पष्ट रूप धारण कर रही है,—उच्चतर वर्गों के प्रति यह पुकार कि वे निम्न वर्गों के उत्थान के लिये अपने विशेषाधिकारों और अविचारपूर्ण पक्षपातों का उस प्रकार बलिदान कर डालें जिस प्रकार जापानी सामुराइयों ने किया था। स्वेच्छापूर्वक आत्मबलिदान की आम भावना का प्रसार भारतीय राष्ट्र के निर्माण की अपरिहार्य भूमिका है। यह सत्य केवल हमारे उस आन्दोलन के स्वरूप से ही स्पष्ट नहीं होता है जिसे हमने आरंभ किया है, बल्कि इतिहास और अनुभव की कसौटियों से भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुष्ट होता है। जिस किसी भी मामले के लिये बलिदान-कार्य का अन्तिम निश्चय करने से पहले हमें आजकल इन्हीं कसौटियों पर प्रत्येक फुटकर बात को परखकर प्रमाणित करना होता है। इतिहास और अनुभव का प्रमाण देकर राष्ट्रवादी दल ने राष्ट्र की बुद्धि को वैसे ही कायल किया है जैसे अपने प्रेरणादायक आदर्शों और कष्ट-सहन की तैयारी से इसने राष्ट्र के हृदय को अपने साथ ले लिया है। यह मांग, कि हमें प्रत्येक फुटकर बात के संबन्ध में सारे प्रश्न पर ही फिर से विचार करना चाहिये, अत्यधिक है और असंभव है। इतना काफी है कि हमें बलिदान की उपयोगिता और आवश्यकता पर सामान्यतया विश्वास हो चुका है और हम व्यक्तिगत पुकार को अनुभव करते हैं। यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये कि उस जन-समाज की अवस्था से जो सुगठित है, स्वाधीन है और समृद्ध हो रहा है, हम उस जनसमाज की अवस्था का अनुमान नहीं कर सकते जो पराधीन है, संघर्ष कर रहा है और आपद्ग्रस्त है। पहली अवस्था में आत्म-बलिदान के बार बार होनेवाले कार्यों के लिये व्यक्ति का आह्वान नहीं किया जाता है, किन्तु केवल उनके लिये जिनकी मांग राष्ट्र को निय-मित तौर से रहती है, और आवश्यकता आ पड़ने पर विशेष बलिदान की सामान्य तैयारी रखने के लिये भी। परन्तु दूसरी अवस्था में बलि-दान की आवश्यकता एक स्थिर वस्तु है। न ही यह कोई युक्तियुक्त सिद्धांत है कि ऐसी परिस्थितियों में साहस तथा आत्मोत्सर्ग के प्रत्येक फुटकर कार्य के लिये पर्याप्त मूल्य की मांग की जाय। अपनी स्वाधीन-ता का मूल्य मांगे जाने पर पराधीन राष्ट्र के व्यक्तियों का कर्मफल-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रदाता से यह कहना निःसंदेह अजीब होगा कि "हमारे प्रत्येक फुटकर बलिदान के बदले में आपको हमें इतना देना पड़ेगा और हमें आपकी शर्त्तें पहले से ही मालूम होनी चाहियें, अपने कष्टों के पैसाभर प्रतिफल के मामले में भी हम आपपर विश्वास नहीं करेंगे।" ऐसे पुरुषों द्वारा और ऐसी भावना से कभी कोई पराधीन राष्ट्र स्वतंत्र नहीं हुए हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विकास की प्रक्रिया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छठा अध्याय

विकास की प्रक्रिया

क्रमविकास की किसी अवस्था के अन्त का लक्षण प्रायः यह होता है कि जिन जिन चीजों को विकासक्षेत्र से बाहर निकल जाना होता है वे सब एक बार फिर प्रबलतया प्रकट होती हैं। यह प्रकृति का एक नियम है कि मानवता के अन्दर विद्यमान किसी प्रबल प्रवृत्ति या गहरे जमे हुए कुसंस्कार से, चाहे वह समष्टि में हो या व्यष्टि में, छुटकारा पाने के लिये, पहले उसे भोग के द्वारा थकाना होता है, उसके बाद निग्रह से उसपर अपना प्रभुत्व स्थापित करना तथा उसे कमजोर करना होता है और, अन्त में, जब वह कमजोर हो जाय तो, संयम अर्थात् निराकरण या आत्मसंबन्ध-विच्छेद के द्वारा उससे छुटकारा पाना होता है। निग्रह और संयम में भेद यह है कि पहली प्रक्रिया में प्रवृत्ति को, जिसकी सत्यता की कोई बात तक नहीं पूछी जाती, दबा देने, जबरदस्ती नियन्त्रित करने और यदि संभव हो तो, कुचल देने के लिये उग्र संघर्ष किया जाता है; परन्तु दूसरी प्रक्रिया में वृत्ति को मर चुकी या मर रही शक्ति के रूप में अनुभव किया जाता है, उसके कभी कभी पुनः लौट आने को पहले घृणापूर्वक फिर अधीरतापूर्वक देखा जाता है, अन्त में, उसी मूल वृत्ति को जो कभी सत्तापूर्ण थी, परन्तु अब निस्सार हो गयी है, उदासीनतापूर्वक उसके केवल भूतप्रेत,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पदचिह्न या हलकी गूंज के तौर पर अनुभव किया जाता है। इस प्रकार का पुनः लौट आना, उस अवांछनीय और लुप्त हो रही वस्तु से छुटकारा पाने के लिये, प्रकृति की पद्धति का एक भाग है।

जब कोई शक्ति, गुण या प्रवृत्ति अपने शैशव में हो या पूरे जोर पर हो, और जब उसने अभी उस भोग और पूर्ण सक्रियता को भी, जो उसका उचित ग्राह्यभाग है, प्राप्त न कर लिया हो, तब संयम करना असामयिक होगा और निष्फल सिद्ध होगा। जब एक बार कोई वस्तु उत्पन्न हुई है तो उसकी जवानी, वृद्धि, भोग, जीवन और अन्तिम क्षीणता तथा मृत्यु अवश्य होगी; जब एक बार प्रकृति ने अपनी सृष्टि को कोई वेग दिया है तो वह आग्रह करती है कि वह वेग, समाप्त होने से पूर्व, स्वाभाविक प्रयोग के द्वारा अपने आपको खर्च करे। वृद्धि या गति को, अवसर आये बिना बलपूर्वक रोक देना निग्रह है, जो कुछ समय के लिये सफल हो सकता है किन्तु सदा के लिये नहीं। गीता में कहा है कि सब वस्तुएं अपनी प्रकृति से प्रेरित होती हैं, अपनी प्रकृति को ही लौट जाती हैं, निग्रह निरर्थक है। निग्रह करने से होता यह है कि समय आये बिना जोर जबरदस्ती से दबा दी गयी चीज असल में मरती नहीं है, बल्कि कुछ समय के लिये उस प्रकृति में पीछे लौट जाती है जिसने उसे आगे भेजा था, वहां अत्यधिक शक्ति संचित कर लेती है और उस साधिकार भोग की, जिससे इसे रोक दिया गया था, शिकार की तरह तलाश करती हुई असाधारण उग्रतापूर्वक पुनः प्रकट होती है। जब हम पहले पहल योग के मार्ग पर कदम रखते हैं तो अपने बुरे संस्कारों से छुटकारा पाने के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हम जो प्रयत्न करते हैं उनमें हम यही बात देखते हैं। अगर हमारी प्रकृति में क्रोध प्रबल तत्त्व है, तो हम उसे थोड़े समय के लिये कोरे बलप्रयोग से दबा सकते हैं और इसे आत्मनियन्त्रण कह सकते हैं परन्तु अन्त में, अतृप्त प्रकृति हमें हरा देगी और वह विकार आश्चर्य-जनक शक्ति को लिये हुए अप्रत्याशित क्षण में हमपर लौट आवेगा। केवल दो तरीके हैं जिनसे हम विकार को जो हमें गुलाम बनाने की चेष्टा करता है, निश्चितरूपेण जीत सकते हैं। एक तो है अन्य भाव के स्थापन की शैली, अर्थात् जब कभी विकार उठे तब उसके स्थान पर विरोधी गुण को ला बैठाना,—क्रोध के स्थान पर क्षमा, प्रेम या सहिष्णुता के विचारों को, काम के स्थान पर पवित्रता के ध्यान-मनन को, अभिमान के स्थान पर नम्रता और अपने अवगुणों या अपनी तुच्छता के विचारों को; यह राजयोग की विधि है परन्तु यह कठिन, धीमी और अनिश्चित विधि है; क्योंकि प्राचीन परम्पराएं और योग का आधुनिक अनुभव दोनों ही यह दिखाते हैं कि वे लोग, जिन्होंने कितने ही बरसों से उच्चतम आत्म-प्रभुत्व प्राप्त किया हुआ था, उस चीज की उग्रतापूर्ण वापसी से सहसा आश्चर्यचकित रह गये जिसे उन्होंने मृत या सदा के लिये वशवर्ती समझ लिया था। परन्तु, यह स्थापन-शैली यद्यपि धीमी है तथापि यह प्रकृति की साधारणतम विधियों में से एक है और अधिकतर इस उपाय से ही जिसे बहुधा अनजान में या जान-अनजान में प्रयुक्त किया जाता है; मनुष्य का चरित्र एक जीवन से दूसरे जीवन में या एक जीवन की अवधि में भी बदलता और विकसित होता है। यह शैली चीजों को उनके बीज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तक नष्ट नहीं करती, और वह बीज, जिसे योग से जलाकर राख नहीं कर दिया जाता, फिर फूट निकलने और पूर्ण तथा शक्तिशाली वृक्ष के रूप में पनप उठने में सदा समर्थ रहता है। दूसरा तरीका है विकार को भोग (enjoyment) भोगने देना ताकि उससे जल्दी छुटकारा हो जाय। जब वह अति भोग से तृप्त और श्रान्त कर दिया जाता है, तो वह दुर्बल और जर्जरित शक्तिवाला हो जाता है और उसके बाद एक प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है जो कुछ समय के लिये विरोधी शक्ति, प्रवृत्ति या गुण को स्थापित कर देती है। अगर योगी उस अवसर को निग्रह के लिये ग्रहण कर लेता है, तो प्रत्येक उपयुक्त अवसर पर उस प्रकार दुहराया हुआ निग्रह अत्यधिक प्रभावजनक हो जाता है, यहांतक कि वह उस वृत्ति के बल और जीवन-शक्ति को इतनी पर्याप्त मात्रा में न्यून कर देता है कि फिर अन्तिम प्रक्रिया-रूप संयम का प्रयोग किया जा सकता है। भोग और प्रतिक्रिया की यह विधि भी प्रकृति की एक प्रिय और सार्वभौम विधि है, परन्तु यह अपने आपमें कदापि पूर्ण नहीं है और अगर इसे स्थिर शक्तियों या गुणों पर प्रयुक्त किया जाय तो यह विरोधी प्रवृत्तियों के उतार-चढ़ाव के ऐसे खेल को जारी कर देती है, जो प्रकृति की क्रियाओं के लिये अत्यधिक उपयोगी है परन्तु आत्म-प्रभुत्व की दृष्टि से व्यर्थ और अनिर्णायक है। यह विधि तभी प्रभावजनक हो पाती है जब इसके बाद संयम का प्रयोग किया जाता है। योगी वृत्ति को केवल प्रकृति के एक खेल के रूप में देखता है, जिससे उसका कुछ संवन्ध नहीं है, जिसका वह केवल द्रष्टा है; क्रोध, काम या मद उसका नहीं है, वह विश्वजननी का है जो अपने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रयोजनों के लिये उसे पैदा करती और शान्त करती है। तो भी, जब वृत्ति प्रबल, प्रभुत्व जमानेवाली और अक्षीण शक्तिवाली होती है तब यह मनोभाव सच्चे हृदय से धारण नहीं किया जा सकता और सचाई से इसे अनुभव किये बिना बौद्धिक तौर पर इसे धारण करने का प्रयत्न करना मिथ्याचार, झूठा आचरण या मक्कारी है। जब वृत्ति बार बार किये गये भोग और निग्रह से कुछ कुछ निःसत्त्व हो चुकी हो, तभी प्रकृति, आत्मा या पुरुष की आज्ञा से, अपनी ही पैदा की हुई इस वस्तु के साथ वस्तुतः बर्ताव कर सकती है। वह सर्वप्रथम वैराग्य द्वारा—अपने स्थूलतम रूप में घृणा-भाव से प्रकट हुए वैराग्य द्वारा—उसके साथ पेश आती है, परंतु यह भाव इतना उग्र है कि स्थायी नहीं रह सकता; तो भी यह उस वृत्ति के मूल कारण से मुक्त होने की गहरी इच्छा के रूप में अपना एक संस्कार पीछे छोड़ जाता है, जो विकार की प्रत्यावृत्ति और अल्पकालिक राज्य के बाद भी जीवित बचा रहता है। तदनंतर उसकी प्रत्यावृत्ति को अधीरतापूर्वक किंतु असहिष्णुता की किसी तीव्र भावना के बिना देखा जाता है। अन्त में परम उदासीनता प्राप्त हो जाती है और प्रकृति की साधारण प्रक्रिया से प्रवृत्ति के अन्तिम निष्क्रमण का उस संयमी की सच्ची भावना से निरीक्षण किया जाता है जिसे यह ज्ञान है कि वह साक्षी आत्मा है और उसने किसी वृत्ति के निरोध के लिये उससे केवल संबंधविच्छेद कर लेना है। उच्चतम अवस्था वृत्ति से मुक्ति को प्राप्त कराती है या तो लय के रूप में जब वृत्ति सर्वथा और सदा के लिये नष्ट हो जाती है, या फिर एक अन्य प्रकार के छुटकारे के रूप में जब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आत्मा जानती है कि वृत्ति ईश्वर की लीला है और वह इस बात को उसपर छोड़ देती है कि वह (ईश्वर) वृत्ति को बाहर निकाल फेंके या उसे अपने उद्देश्यों के लिये इस्तेमाल करे। यह कर्मयोगी की मनोवृत्ति है, उस कर्मयोगी की जो अपनेको परमेश्वर के हाथों में सौंप देता है और केवल उसके लिये काम करता है, यह जानते हुए कि जो शक्ति उसमें काम करती है वह ईश्वर की ही शक्ति है। आत्म-समर्पण की इस वृत्ति का परिणाम यह होता है कि सर्वभूतमहेश्वर निज भक्त का सब भार स्वयं संभाल लेते हैं और गीता की प्रतिज्ञा के अनुसार अपने सेवक और प्रेमी को सब पाप और बुराई से मुक्त कर देते हैं। उस अवस्था में वृत्तियां आत्मा पर प्रभाव डाले बिना शरीर की मशीन में काम करती रहती हैं और केवल तब काम करती हैं जब महेश्वर उन्हें अपने प्रयोजन के लिये उभारते हैं। यह है निर्लिप्तता, लीला के अंदर पूर्ण स्वतंत्रता की स्थिति।

समष्टि के लिये भी वही नियम है जो व्यष्टि के लिये है। सूक्ष्म दृष्टिवाले लोगों ने यह देख लिया है कि मानवसमाज में क्रमविकास की प्रक्रिया है—मनुष्य में से हिंस्र जीव तथा वनमानुष की प्रकृति का निर्मूलन करते जाना। कभी मनुष्यजाति में क्रूरता, कामवासना, दुष्टतापूर्ण विनाश, उत्पीड़न, मूर्खता, पाशविकता और अज्ञान की शक्तियां उच्छृंखल थीं, उन्होंने पूर्ण भोग प्राप्त किया; फिर धर्म और दर्शन की उन्नति के कारण, तृप्ति के समयों में जैसा यूरोप में ईसाई-युग के प्रारम्भ का समय था, उनका स्थान कुछ तो दूसरी चीजों ने लेना शुरू कर दिया और कुछ उन्हें नियंत्रण में लाया जाने लगा। जैसा ऐसी चीजों का नियम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है, वे सदा ही न्यूनाधिक उग्रता के साथ फिर लौटती रही हैं और उन्होंने अपने आपको पुनः प्रतिष्ठित करने के लिये कम या अधिक सफलता-पूर्वक चेष्टा की है। अन्त में उन्नीसवीं सदी में कुछ समय तक ऐसा मालूम दिया मानो उनमेंसे कुछ शक्तियां, कम से कम उस समय के लिये निःसत्त्व हो चुकी हों और उनके संयम का तथा विकास में से क्रमशः विसर्जित हो जाने का समय वास्तव में आ पहुंचा हो। ऐसी आशाएं सदा ही फिर फिर बंधा करती हैं और अन्त में उनका अपनी पूर्णता को प्राप्त कर लेना भी संभवनीय है, परंतु ऐसा होने से पूर्व वृत्तियों का एक बार फिर लौटना अपरिहार्य होता है। पदार्थविद्या (सायंस), प्रगति, सभ्यता और मानवहितवाद के वाह्य सुन्दर स्वरूप की आड़ में योरुप और अमरीका में पशुत्व की ओर लौटने की जो प्रवृत्ति बढ़ रही है उसमें हम कुवृत्तियों के लौटने के प्रचुर चिह्न देखते हैं; और आनेवाले युग में हम संभवतः इसके और अधिक चिह्न देखेंगे। राजनीति और समाज में भी ऐसा ही नियम लागू होता है। मानवजाति का राजनीतिक विकास कुछ विशेष दिशाओं का अनुसरण करता है जिनका बिल्कुल नया सूत्र फ्रांस की राज्यक्रान्ति के आदर्शवचनों—स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृभाव—ने पेश किया है। परंतु पुरानी दुनिया की शक्तियां, स्वेच्छाचारी शासन की शक्तियां, परम्पराप्राप्त विशेषाधिकार की और दूसरों का स्वार्थपूर्ण शोषण करने की शक्तियां, भ्रातृभाव-नाशक विरोध और आवेशयुक्त आत्म-बहुमानी प्रतियोगिता की शक्तियां अपने आपको पृथ्वी के सिंहासन पर पुनः प्रतिष्ठापित करने के लिये सदा संघर्ष कर रही हैं। एक दृढ़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतिक्रियात्मक आंदोलन संसार के अनेक भागों में स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है और वह शायद उस इंगलैंड से अधिक और कहीं नहीं, जो कभी अपने आपको प्रगति और स्वाधीनता का अगुआ समझता था। पुरानी वृत्ति की ओर लौट जाने का प्रयत्न उन आवश्यक प्रत्यावर्तनों में से एक प्रत्यावर्तन है जिनके बिना उस वृत्ति को इतनी पूरी तरह से खाली नहीं किया जा सकता कि विकास से बाहर निकाल डाला जाय। वृत्तियां केवल पराजित किये जाने और फिर कुचले जाने के लिये ही उठा करती हैं। दूसरी तरफ, जनतंत्रीय प्रवृत्ति की शक्ति कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो क्षीण हो गयी हो प्रत्युत एक ऐसी शक्ति है जो अभी पूरी तरह से प्रकट भी नहीं हुई है। वह कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो अपने भोग का अधिकांश भाग प्राप्त कर चुकी हो, परंतु एक ऐसी शक्ति है जो अभी तेज:संपन्न, अतृप्त और पूर्णता के लिये उत्कण्ठित है। भूतकाल में इसे दवा देने के प्रत्येक प्रयास ने आखिरकार दबानेवाली शक्ति पर प्रतिघात किया और जनतंत्रीय भावना को नये सिरे से भयानक, क्षुधार्त्त और अतृप्त रूप दे दिया, इसके "स्वाधीनता, समानता और भ्रातृभाव" के सौम्य आदर्श में "अथवा मृत्यु" की भयानक वृद्धि और कर दी।

स्वाधीनता का प्रेमी जो अराजकता की स्वतंत्रता चाहता है, समानता का प्रेमी जो साम्यवाद की मृतप्राय समस्वरता स्थापित करने की कोशिश करता है, भ्रातृभाव का प्रेमी जो विश्वव्यापी समष्टि-सत्तावाद की कल्पना करता है—इनमेंसे किसीके भी चरम स्वप्नों को जनतंत्रीय भावना का निकटवर्ती भविष्य पूरा नहीं करेगा। परंतु इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महान् आदर्श का कोई न कोई समन्वय, निःसंदेह, मानवजाति का निकट भविष्य है। स्वेच्छा-शासन, असमानता और उद्दाम प्रतियोगिता की पुरानी शक्तियां जब एक बार फिर उखाड़ फेंकी जा चुकेंगी फिर उसके बाद उनपर क्रमिक संयम की विधि बरती जायगी जिससे, उनका जो कुछ अंश बच रहा है, वह मृत वस्तु के विलीयमान चिह्नों के तौर पर समझा जायगा तथा और आगे उग्र दमन के बिना उसे धीमे धीमे और स्थिरतापूर्वक प्रकृति के लीलाक्षेत्र से बहिष्कृत कर रूपांतरित कर दिया जायगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शान्ति की शक्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सप्तम अध्याय

शान्ति की शक्ति

विश्व में दो महान् शक्तियां हैं, नीरवता और वाक्। नीरवता सब प्रकार की तैयारी करती है, वाक् उत्पन्न करती है। नीरवता कार्य करती है, वाक् कार्य के लिये प्रेरणा प्रदान करती है। नीरवता बाधित करती है, वाक् अनुरोध करती है। संसार की सब अपरिमेय और अचिंत्य प्रक्रियाएं अपने आपको अंदर ही अंदर पूर्ण बनाती हैं, उस गंभीर और महामहिम नीरवता के अंदर जो शब्द के कोलाहलपूर्ण और भ्रांतिजनक उपरितल से आवृत होती है—ऊपर होती है अनगिनत तरंगों की हलचल, नीचे समुद्र की अथाह अदम्य जलराशि। मनुष्य तरंगों को देखते हैं, वे किंवदंती और सहस्रों आवाजों को सुनते हैं, और इनसे वे भविष्य की दिशा का और ईश्वरीय संकल्प के मर्म का निर्णय कर लेते हैं; परंतु दस में से नौ अवस्थाओं में वे निर्णय गलत होते हैं। इसीलिये यह कहा जाता है कि इतिहास में सदा अप्रत्याशित घटना ही घटित होती है। परंतु अप्रत्याशित घटना घटित नहीं होगी अगर मनुष्य अपनी आंखें उपरितल पर से हटा सकें और अंदर पैठकर सारतत्त्व को देख सकें, अगर वे प्रतीतियों को एक तरफ रखने और उनका भेदन कर उनसे परे निगूढ़ और प्रच्छन्न सद्वस्तु तक पहुंचने का अभ्यास कर लें,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अगर वे जीवन के शोर को सुनना बंद कर दें और उसकी जगह उसकी नीरवता को सुनें।

बड़े से बड़े श्रम प्राण को अंदर रोके रखकर किये जाते हैं; श्वास लेना जितना अधिक तेज होगा, उतना ही अधिक शक्ति का अपव्यय होगा। जो पुरुष कार्य के समय श्वास लेना स्वाभाविकतया, सहज-तया बंद कर सकता है, वह प्राण का—उस शक्ति का जो संपूर्ण विश्व में काम करती और सर्जन करती है—स्वामी है। सभी योगियों का यह सामान्य अनुभव है कि जब विचार बंद होता है, श्वसन भी बंद हो जाता है,—पूर्ण कुंभक जिसे हठयोगी अपरिमित कष्ट और घोर प्रयास से सिद्ध कर पाता है, इस प्रकार अपने आप सुगमतया एवं आनंद-पूर्वक साधित हो जाता है,—परंतु जब विचार पुनः प्रारंभ होता है तो श्वास भी अपनी क्रिया को फिर शुरू कर देता है। परंतु जब विचार, श्वास प्रश्वास के प्रवृत्त हुए विना, प्रवाहित होता है तब प्राण सच्चे तौर पर जीता जाता है। यह प्रकृति का नियम है। जब हम काम करने का प्रयत्न करते हैं तो प्रकृति की शक्तियां हमारे साथ अपनी मनमानी करती हैं; जब हम शांत हो जाते हैं तो हम उनके ईश बन जाते हैं। परंतु शांति दो प्रकार की होती है—जड़ता की असहाय शांति, जो विनाश की उद्घोषणा करती है, और दूसरी सुनिश्चित ईशत्व की शांति जो जीवन की संगीतमयता को अधिष्ठित करती है। यह ईशत्वयुक्त शांति ही योगी की स्थिरता है। स्थिरता जितनी ही अधिक पूर्ण होगी, यौगिक शक्ति उतनी ही अधिक प्रबल होगी, कर्मगत तेज उतना ही अधिक महान् होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस स्थिरता में यथार्थ ज्ञान उदित होता है। मनुष्यों के विचार सच और झूठ, सत्यम् और अनृतम् के संमिश्रण होते हैं। असत्य बोध सत्य बोध को विकृत और आच्छादित कर देता है, झूठा निर्णय सच्चे निर्णय को पंगु बना देता है, झूठी कल्पना सच्ची कल्पना को विरूप कर देती है, झूठी स्मृति सच्ची स्मृति को धोखे में डाल देती है। मन की क्रिया को बंद होना होगा, चित्त को पवित्र करना होगा, प्रकृति की चंचलता पर निश्चलनीरवता को छा जाना होगा, तब उस स्थिरता में, उस निःशब्द शांति में प्रकाश मन पर आ उतरता है, गलती दूर होने लगती है और जबतक कामना फिर हलचल नहीं करती तबतक निर्मलता चेतना के उच्चतर स्तर में अपने आपको प्रतिष्ठित रखती है तथा निम्नतर स्तर में शांति और सुख को अनिवार्यतया उतार लाती है। यथार्थ ज्ञान यथार्थ कर्म का अचूक स्रोत बन जाता है। योगः कर्मसु कौशलम्।

योगी का ज्ञान साधारण कामना-परिचालित मन का ज्ञान नहीं होता, न ही यह उस वैज्ञानिक तर्कबुद्धि का या लौकिक व्यवहारकुशल बुद्धि का ज्ञान होता है जो ऊपरी तथ्यों के आधार पर स्थित होती है और अनुभव तथा संभवनीयता का सहारा लेती है। योगी ईश्वर के काम करने के ढंग को जानता है और उसे यह पता होता है कि असंभवनीय भी बहुधा घटित हो जाता है, कि तथ्य भी भटका देते हैं। वह बुद्धि से ऊपर उस साक्षात् और ज्योतिर्मय ज्ञान के लोक में उठ जाता है जिसे हम विज्ञान कहते हैं। कामनापरिचालित मन अच्छे और बुरे की, रुचिकर और अरुचिकर की, सुख और दुःख की विषम उलझन में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फंसा रहता है। वह सदा ही अच्छे को, सदा ही रुचिकर को, सदा ही सुख को पाने की कोशिश करता है। सौभाग्यपूर्ण घटनाओं से वह फूल जाता है, उनसे विपरीत घटनाओं के कारण वह विक्षुब्ध और निस्तेज हो जाता है। परंतु द्रष्टा (योगी) की प्रकाशयुक्त दृष्टि यह देखती है कि सब कुछ ही भले की ओर ले जानेवाला है; क्योंकि ईश्वर सब कुछ है और ईश्वर सर्वमंगलमय है। वह जानता है कि प्रतीयमान बुराई बहुधा अच्छाई तक पहुंचने का लघुतम मार्ग होती है, अरुचिकर वस्तु रुचिकर को तैयार करने के लिये अनिवार्य होती है, दुर्भाग्य पूर्ण-तर सुख को प्राप्त करने की शर्त होता है। उसकी बुद्धि द्वंद्वों की दासता से मुक्त हो जाती है।

अतएव योगी का कार्य वैसा नहीं होगा जैसा साधारण मनुष्य का। वह प्रायः ऐसा दिखायी देगा मानो बुराई के लिये अनुमति देता हो, विपत्ति को हटाने के अवसर को टालता हो, उन भद्रहृदय पुरुषों के प्रयत्नों में अपनी सहमति देने से इन्कार करता हो जो हिंसा और दुष्टता का प्रतिरोध करते हैं; वह 'पिशाच' की तरह (पिशाचवत्) काम करता प्रतीत होगा। अथवा मनुष्य उसे 'जड़', गतिशून्य, पत्थर, स्तंभ समझेंगे क्योंकि जहां क्रियाशीलता की मांग दिखायी देती है वहां वह निष्क्रिय रहता है; जहां लोग जोर जोर से बोलने की आशा करते हैं वहां वह शांत तथा जहां गहरे और अत्युत्कट भाव का कारण उपस्थित होता है वहां वह अचलायमान रहता है। जब वह काम करेगा, तब मनुष्य उसे 'उन्मत्त', पागल, केन्द्रच्युत या मूढ़ कहेंगे; क्योंकि उसके काम बहुधा ऐसे लगेंगे कि उनका कोई निश्चित फल या प्रयोजन नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है, और वे उच्छृंखल, अनियमित, सामान्य बुद्धि और संभाव्यता की पर्वाह न करनेवाले या एक ऐसे उद्देश्य और दृष्टि से प्रेरित प्रतीत होंगे जो इस संसार के लिये नहीं है। और यह सच है कि वह एक ऐसे प्रकाश का अनुसरण करता है जो दूसरे लोगों को प्राप्त नहीं होता या जिसे वे अंधकार कहकर पुकारना भी पसंद करते हैं; जो कुछ उनके लिये स्वप्न है, उसके लिये वह वास्तविकता है; उनकी रात उसका दिन है। और यही इस भेद का भी मूल है कि जब वे तर्क ही करते होते हैं तब वह जानता होता है।

निश्चलनीरवता, शांतता, प्रकाशित निष्क्रियता के लिये समर्थ होना अमरता के योग्य होना है—अमृतत्वाय कल्पते। यह धीर होना है, जो हमारी प्राचीन सभ्यता का आदर्श है, जिसका अर्थ तामसिक, गतिशून्य और पत्थर होना नहीं है। तामसिक मनुष्य की अक्रियता उसके चारों ओर की शक्तियों के लिये प्रतिबंधक होती है, योगी की अक्रियता उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करती है; उसकी सक्रियता महान् प्राकृतिक शक्तियों की साक्षात्, अतीव महान् संचालन-शक्ति से क्रियाशील होती है। यह एक आभ्यंतरीण शांति होती है जो बहुधा बाहर से वाग्व्यवहार और सक्रियता की तरंग से वैसे ही आच्छादित रहती है जैसे बाह्य चपल तरंगों से समुद्र। परंतु जिस प्रकार लोग संसार के निरर्थक कोलाहल और इसकी अस्थिर घटनाओं में से ईश्वर की कार्यशैलियों की वास्तविकता को नहीं देख पाते, क्योंकि वे कार्यशैलियां उस पर्दे के पीछे छिपी होती हैं, उसी प्रकार वे योगी के कार्य को समझने में भी असफल ही रहेंगे, क्योंकि वह अन्तर में वैसा नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होता जैसा वह बाहर से दिखायी देता है। कोलाहल और सक्रियता की शक्ति, निःसंदेह, महान् है,—क्या जैरिको की दीवारें कोलाहल की शक्ति से नहीं गिर गयी थीं? परंतु अनंत है उस शांति और उस नीरवता की शक्ति, जिनमें महान् शक्तियां कार्य के लिये तैयारी करती हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तीन पुरुष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अष्टम अध्याय

तीन पुरुष

मानव विचार ने जिन दार्शनिक समस्याओं को हल करने का कठिन प्रयास किया है उनमेंसे सबसे बड़ी है—चारों ओर की दृग्गोचर सत्ता में विद्यमान चेतन प्रज्ञा का यथार्थ स्वरूप और उसका हमसे संबंध। कल्पनावादी या मायावादी बहिर्दृश्य सत्ता से इन्कार करता है, प्रकृतिवादी चेतन प्रज्ञा से इन्कार करता है। पहले के लिये, गोचर-वस्तु अद्वितीय विश्वगत आत्मा की प्रकाशमान स्थिरता पर पड़नेवाली अस्थिर छाया मात्र है, इससे अधिक कुछ नहीं: दूसरे के लिये, प्रज्ञा प्रकृति की गतियों का क्षणिक परिणाम है। मायावादी छाया की सत्ता की संतोषजनक व्याख्या नहीं कर सकता; वह स्वीकार करता है कि यह अनिर्वचनीय है, एक ऐसी वस्तु है जो है भी और नहीं भी है। प्रकृति-वादी प्रज्ञा की सत्ता की संतोषजनक व्याख्या नहीं कर सकता; वह केवल इसके विकास के क्रमों और इसकी क्रियाओं के तरीकों का पता लगाने का यत्न करता है और अपने निरीक्षणों की अत्यधिक सूक्ष्मता से उसकी व्याख्या की आवश्यकता को ढक देता है। परंतु मनुष्य की आत्मा बाहर और अंदर सब तरफ ध्यानपूर्वक दृष्टि डालने के बाद न तो शंकर से ही संतुष्ट होती है और न हेकेल से। वह गोचर पदार्थों की विश्वव्याप्त सत्ता को देखती है, वह प्रज्ञा की विश्वव्याप्त सत्ता को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देखती है। वह एक ऐसी स्थिति की खोज करती है जो दोनों को स्वीकार करेगी, दोनों को समाविष्ट करेगी, दोनों का तादात्म्य करेगी; वह किसी एक के बहिष्करण की नहीं बल्कि दोनों की संगति की मांग करती है।

उपनिषदें संसार की वास्तविकता से इन्कार नहीं करतीं, बल्कि वे इसका उस ब्रह्म से तादात्म्य दिखाती हैं जो इसे अतिक्रान्त कर जाता है। वह द्वितीयरहित एक है (एकमेवाद्वितीयम्); वह सर्व है। अगर सब कुछ ब्रह्म है, तो यहां ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता, और अतएव सर्व (सर्वमिदम्) की सत्ता ब्रह्म की एकता का विरोध नहीं करती, भेद की वास्तविकता को स्थापित नहीं करती। वह एक ही प्रज्ञा वा चेतना अपने आपको सैकड़ों दृष्टिबिंदुओं से देखती है, प्रत्येक बिंदु दूसरों से सचेतन है और उनकी सत्ता का आनंद लेता है। धारणा और विचार, कल्पना और अनुभव, नाम और रूप, संवेदन और कंपन का तटहीन प्रवाह, सदा ही आगे आगे बहता जाता है, उसका न आदि है न अन्त, कभी वह आंखों के सामने आता है कभी दृष्टि से ओझल हो जाता है, उसके भीतर से वही एक प्रज्ञा लाखों आत्म-अभिव्यक्तियों सहित अपने आपको यत्र तत्र सर्वत्र प्रकट करती है, मानो कोई असंख्य तरंगोंवाला महासागर हो। एक विशेष आत्म-अभिव्यक्ति अपने स्रोत और आधार में लीन हो सकती है, परंतु उससे यह दृष्टिगोचर संसार न तो नष्ट होता है और न ही हो सकता है। वह 'एक' सदा से है, और क्योंकि वह 'एक' सदा से है अतः 'बहु' भी सदा से हैं। जबतक समुद्र है तबतक लहरें भी रहेंगी ही।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तीन पुरुष

विश्व-प्रकृति के समुद्रसम मंथन और परिवर्तन में आत्मा या पुरुष स्थाणु, स्थिर, अचल, अपरिवर्तनशील, नित्य है,–नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः। समष्टि में, पुरुष या आत्मा एक ही है,–एक ही परम आत्मा है जो विश्व की गति को धारण करता है, एक से अधिक नहीं। व्यष्टि में उस एक पुरुष के पुरुषत्व की तीन अवस्थाएं हैं; वह एक है, परंतु त्रिवृत् है। उपनिषदें एक वृक्ष पर बैठे दो पक्षियों का वर्णन करती हैं, जिनमेंसे एक वृक्ष का फल खाता है, दूसरा, अधिक ऊंची शाखा पर बैठा हुआ, खाता नहीं है किंतु अपने साथी का निरीक्षण करता है; एक ईश या अपना स्वामी है, दूसरा अनीश है, अपना स्वामी नहीं है, और जब खानेवाला ऊपर देखता है और अपने दूसरे निरीक्षयिता (द्रष्टा) साथी की महत्ता को अनुभव करता है और अपने आपको उससे पूरित कर लेता है तभी दुःख, मृत्यु, पराधीनता,–एक शब्द में माया अर्थात् अज्ञान और भ्रम उसे स्पर्श करना छोड़ देते हैं। दो अज (अजन्मा) हैं जो पुरुष हैं और एक अजा (अजन्मा) है जो स्त्री है; वह (अजा) अपने मधुर और कटु फलों से युक्त वृक्ष है, वे दो अज पक्षी हैं। अजों में से एक उसके माधुर्य का उपभोग करता है, दूसरे ने माधुर्य को अपनेसे दूर रखा हुआ है। ये दो पुरुष हैं अक्षर (अविनाशी आत्मा) और क्षर (दीखने में विनाशी आत्मा), और वृक्ष या स्त्री है प्रकृति, विश्वगत शक्ति, जिसे यूरोप के लोग 'नेचर (Nature)' कहते हैं। क्षर पुरुष प्रकृति के अंदर विद्यमान और प्रकृति का भोग करनेवाली आत्मा है, अक्षर पुरुष प्रकृति के ऊपर स्थित और उसका निरीक्षण करनेवाली आत्मा है। परंतु एक है जो वृक्ष पर बैठा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुआ नहीं है किंतु उसे धारण करता और अधिकार में रखता है, जो केवल अपना ही स्वामी नहीं है, किंतु जो कुछ भी सत् है उस सबक स्वामी है; वह क्षर से ऊंचा है, अक्षर से भी ऊंचा है, वह है पुरुषोत्तम– वह आत्मा जो ईश्वर के साथ, सर्व के साथ एकीभूत है।

ये तीन पुरुष गीता के १५वें अध्याय में वर्णित हैं। "संसार में दो पुरुष हैं, अक्षर और क्षर,–क्षर है सब भूत, अक्षर कूटस्थ (शिखर पर स्थित) कहलाता है। एक और पुरुष है, जो उत्तम है, जिसे परमात्मा भी कहते हैं, जो तीन लोकों (सुषुप्ति, स्वप्न, जाग्रत् के लोकों, एक अन्य दृष्टि से, सत्ता के कारण, मानसिक और भौतिक स्तरों जिनसे कारणशरीर, सूक्ष्मशरीर और स्थूलशरीर बनते हैं) में प्रवेश करता है और उनका अविनाशी ईश्वर होकर उनका धारण पोषण करता है।"* और १३वें अध्याय में, निम्नतर और उच्चतर पुरुष में भेद-निरूपण करते हुए श्रीकृष्ण ईश्वर तथा व्यष्टिगत आत्मा के प्रकृति के साथ संबंधों को अधिक सूक्ष्मता से प्रतिपादित करते हैं। "प्रकृति कर्ता, कार्य और कारण का मूल हेतु है; और पुरुष सुख-दुःख के भोग का; क्योंकि प्रकृति में विद्यमान पुरुष ही प्रकृति से जनित, पदार्थों की त्रिविध क्रियाओं (स्थिति, सर्जन और विनाश; ग्रहण, प्रतिक्रिया और

---

*द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ।।
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ।। गीता १५।१६-१७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतिरोध; प्रकाश, मिथ्याज्ञान और अंधकारावृतता; शांतभाव, कर्म और जड़ता; जो प्रकृति के 'गुण' करके पुकारी जानेवाली तीन मूलभूत शक्तियों के भिन्न भिन्न आविर्भाव हैं,—इन त्रिविध क्रियाओं के खेल) का भोग करता है, और आत्मा की गुणों के प्रति आसक्ति ही अच्छे और बुरे शरीरों में जन्मों का कारण है। इस शरीर में सर्वोच्च पुरुष वह है जो निरीक्षण करता है, अनुमति देता है, भोग करता, धारण करता है, जो शक्तिशाली स्वामी और परम आत्मा है।"*

इस परमात्मा का पुरुषत्व विश्वगत है, व्यष्टिगत नहीं। प्राणिमात्र में जो कुछ भी है—स्वभाव, विचार, कल्पना, अनुभव, संवेदन, गति—उस सबको वह आध्यात्मिक आनंदलाभ के विषय के तौर पर धारण करता है, पर उस सबके द्वारा वह सीमाबद्ध तथा निर्धारित नहीं किया जा सकता। वह एक साथ सभी चीजें है। व्यष्टिगत सत्ता का धारण पोषण करने के लिये ऐसी विश्वमयता आवश्यक है, किंतु यह व्यष्टि-सत्ता का निर्धारण करनेवाली सीमा नहीं हो सकती। कुछ भाग बचा रखना होता है, कुछ भाग सामने लाना होता है, और यह आंशिक

---

*कार्यकारणकर्त्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते।
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते ।।
पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङक्ते प्रकृतिजान्गुणान्।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ।।
उपद्रष्टानुमन्ता च भर्त्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः ।। गीता १३।२१-२३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभिव्यक्ति ही व्यष्टि है। "मेरा सनातन अंश ही जीवलोक में जीव या व्यष्टि वनता है।"* जीव या व्यष्टि क्षर पुरुष है, और उसके तथा परम पुरुष के बीच में स्थित है अक्षर पुरुष—वृक्ष के शिखर पर बैठा हुआ पक्षी, अपने निज के आनंद में आनंदमय, प्रकृति की क्रीड़ा से अविचलित, निष्पक्ष होकर इसे देखता हुआ, इसकी छाया को अपनी स्थिर अचल सत्ता पर ग्रहण करता हुआ, क्षणभर के लिये भी बद्ध या प्रभावित हुए बिना; नित्यतया आत्म-समाहित, नित्य रूप से स्वतंत्र। यह अक्षर पुरुष ही हमारी वास्तविक आत्मा है, ईश्वर के साथ हमारी दिव्य एकता है, जो कुछ क्षणिक और परिवर्तनशील है उससे हमारी अविच्छेद्य मुक्ति है। अगर यह न होता, तो जीवन और मृत्यु के, सुख और दुःख के, पाप और पुण्य के बंधन से कदापि छुटकारा न होता; हम बिना दरवाजे के पिंजरे में कैद होते और बाहर निकलने के लिये व्यर्थ में ही सीखचों पर अपने पंख पटकते। जीवन और मृत्यु, सुख और दुःख, पाप और पुण्य, नित्य अमिट वास्तविकताएं होतीं न कि अस्थायी नियम जो जीवन की महान् क्रीड़ा को निर्धारित करते हैं, और हम स्वतंत्रेच्छा-रहित नट होते, न कि ईश्वर के स्वतंत्र क्रीड़ासहचर जो जब चाहें खेल को बंद कर सकते और फिर नये सिरे से उसे शुरू कर सकते हैं। अक्षर पुरुष के साथ अपनी एकता को अनुभव करके ही हम अज्ञान से छुटकारा, इच्छा के पाशों से छुटकारा, कर्मों के अटल नियम से छुटकारा प्राप्त करते हैं। दूसरी तरफ, यदि अक्षर पुरुष सब कुछ होता, जैसे कि सांख्य दर्शन

---

*ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः। गीता १५।७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साग्रह स्थापित करता है, तो विभिन्न अनुभव के लिये कुछ भी आधार न होता, विभिन्न व्यक्तित्व नाम की कोई चीज ही न होती, प्रत्येक व्यष्टिगत सत्ता प्रत्येक दूसरे व्यष्टिगत अनुभव के ठीक समान होती, प्रकृति में एक आत्मा का विकास और अनुभव दूसरी आत्मा के विकास और अनुभव की ठीक प्रतिकृति होता। क्षर पुरुष ही है 'सर्व-भूत', और विश्वगत स्वभाव के (या इस दृश्य जगत् में जो चेतन सत्ता है उसके स्वभाव के) एक विशेष भाग के एक विशेष व्यष्टि या जीव से संबद्ध होने के कारण ही अनुभव, चरित्र और विकास की विविधता उत्पन्न होती है। यही अर्थ है इस वचन का कि ईश्वर का ही अंश जीव का रूप धारण करता है। यह स्वभाव एक वार निर्धारित हो जाने पर बदलता नहीं है; परंतु भिन्न भिन्न समयों पर, भिन्न भिन्न परि-स्थितियों में, कार्य के विविध रूपों में, और जिस कार्य या विकास का इसे भोग करना होता है उसके लिये उपयुक्त विविध शरीरों में यह अपने विविध भागों को प्रकट करता है। इसी कारण प्रकृति में स्थित यह पुरुष क्षर, प्रवाही (तरल) या चलायमान कहलाता है यद्यपि वास्तव में वह तरल या चलायमान नहीं है, बल्कि सतत, नित्य और अपरिवर्तन-शील—सनातन—है। देश, काल और कारण में उसके भोग की विविधता ही उसे क्षर बनाती है। अक्षर पुरुष का भोग स्वतःसत्, देश-काल और कारण से परे, प्रकृति के सतत अतिप्रचुर प्रवाह और पुनःप्रवाह से सचेतन होता हुआ भी उससे सर्वथा अचलायमान है। पुरुषोत्तम का भोग दोनों जगह है प्रकृति में भी और उससे परे भी, वह अनुभवमात्र और भोगमात्र का आलिंगन करता है और उनकी वास्तविक सत्ता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्षर पुरुष से विकास का निर्धारण तो किया जाता है किंतु उसका संचालन नहीं। प्रकृति, विश्वव्यापिनी शक्ति ही कार्य-कारण के नियम के अनुसार विकास का संचालन करती है और सच्ची कर्त्री (करनेवाली) वही है। आत्मा कर्ता नहीं है, वल्कि स्वामी है जो अपनी कर्त्री-शक्ति, प्रकृति, की क्रिया के फलों का भोग करता है; वह प्रकृति के प्रति अपनी आसक्ति से ही अपनेको भूल जाता है और अपनेको उससे एकाकार कर लेता है, अतएव वह कर्ता होने के भ्रम में पड़ जाता है और इस प्रकार अपने आपको भूलने के कारण, अपना स्वामी नहीं रहता, कार्य-कारणशृंखला का दास, देश-काल की कारा का वंदी बन जाता है, और जिस काम की वह अनुमति देता है उसीसे वद्ध हो जाता है। वह स्वयं, ईश्वर का अंश होने से उसीका प्रतिरूप है, उससे अभिन्न प्रकृतिवाला है। अतएव जो कुछ ईश्वर है वही कुछ वह भी है, केवल सीमा के भीतर, देशकाल और कारण के अधीन रहते हुए, क्योंकि उसने, अपनी ही इच्छा से, उस बंधन को स्वीकार किया है। वह 'उपद्रष्टा'* है, साक्षी है, यदि वह देखना बंद कर दे तो नाटक समाप्त हो जायगा। वह 'अनुमति' का स्रोत है, और जिस चीज को वह शून्य तथा खाली घोषित कर देता है वह विकास-क्षेत्र से वाहर निकल जाती है। वह 'भोक्ता' है और यदि वह उदासीन हो गया, तो तत्संबद्ध व्यष्टिगत विकास अवरुद्ध हो जायगा। वह 'भर्त्ता' है, और अगर उसने आधार को धारण

*उपद्रष्टानुमन्ता च भर्त्ता भोक्ता महेश्वरः। गीता १३-२३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करना बंद कर दिया तो वह आधार, वह वाहन क्षीण-विगलित और विनष्ट हो जायगा। वह 'महेश्वर' है, और उसकी प्रसन्नता के लिये ही प्रकृति काम करती है। वह आत्मा है, और प्रकृति केवल उसका वाहन, उसका वस्त्र, उसकी आत्म-अभिव्यक्ति का साधन है। परंतु उसकी सब अनुमतियां, अस्वीकृतियां, आदेश एकदम, उसी स्थान पर उसी क्षण, अलंघ्य एवं पूर्णतः अनिवार्य रूप में असर नहीं करते, किन्तु काल के अतिक्रम, स्थान के परिवर्तन के अधीन रहते हुए, कार्य-कारण के नियमानुसार असर करते हैं। अतिक्रम छोटा या लंबा, एक क्षण का या शताब्दियों का हो सकता है; इसी प्रकार परिवर्तन छोटा या बड़ा, यहां या दूसरे लोक में; एवं क्रिया ऋजुपथानुसारिणी अथवा वक्रपथानुसारिणी हो सकती है, अर्थात् क्रियाओं का अतितीव्रतावश एक हो जाना जिसे लोग चमत्कार कहते हैं या उनका सावधानतापूर्ण और श्रमसिद्ध विकास जिसमें प्रत्येक कदम प्रत्यक्ष तौर पर नियमबद्ध और पूर्वविचारित होता है। किंतु जबतक जीव बद्ध है तबतक उसका स्वामित्व सीमित और वैधानिक होता है, न कि बिल्कुल स्वेच्छाचारी और पूरा पूरा। उसकी स्वीकृति और हस्ताक्षर आवश्यक होते हैं, किंतु जो राज्य का काम करते हैं, नियम प्रचलित करते, प्रबंध करते, नियम बनाते हैं वे तो हैं उसके मन और शरीर से बने हुए आध्यात्मिक तथा लौकिक सरदार (the Lords) तथा उसकी बाह्य परिस्थिति से बने हुए साधारण प्रतिनिधि (the Commons)।

आत्म-मुक्ति का पहला कदम है कर्तृत्व के भ्रम से छुटकारा पाना, यह अनुभव करना कि प्रकृति काम करती है, न कि आत्मा। दूसरा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्षर पुरुष से विकास का निर्धारण तो किया जाता है किंतु उसका संचालन नहीं। प्रकृति, विश्वव्यापिनी शक्ति ही कार्य-कारण के नियम के अनुसार विकास का संचालन करती है और सच्ची कर्त्री (करनेवाली) वही है। आत्मा कर्ता नहीं है, बल्कि स्वामी है जो अपनी कर्त्री-शक्ति, प्रकृति, की क्रिया के फलों का भोग करता है; वह प्रकृति के प्रति अपनी आसक्ति से ही अपनेको भूल जाता है और अपनेको उससे एकाकार कर लेता है, अतएव वह कर्ता होने के भ्रम में पड़ जाता है और इस प्रकार अपने आपको भूलने के कारण, अपना स्वामी नहीं रहता, कार्य-कारणशृंखला का दास, देश-काल की कारा का बंदी बन जाता है, और जिस काम की वह अनुमति देता है उसीसे बद्ध हो जाता है। वह स्वयं, ईश्वर का अंश होने से उसीका प्रतिरूप है, उससे अभिन्न प्रकृतिवाला है। अतएव जो कुछ ईश्वर है वही कुछ वह भी है, केवल सीमा के भीतर, देशकाल और कारण के अधीन रहते हुए, क्योंकि उसने, अपनी ही इच्छा से, उस बंधन को स्वीकार किया है। वह 'उपद्रष्टा'* है, साक्षी है, यदि वह देखना बंद कर दे तो नाटक समाप्त हो जायगा। वह 'अनुमति' का स्रोत है, और जिस चीज को वह शून्य तथा खाली घोषित कर देता है वह विकास-क्षेत्र से वाहर निकल जाती है। वह 'भोक्ता' है और यदि वह उदासीन हो गया, तो तत्संबद्ध व्यष्टिगत विकास अव-रुद्ध हो जायगा। वह 'भर्त्ता' है, और अगर उसने आधार को धारण

*उपद्रष्टानुमन्ता च भर्त्ता भोक्ता महेश्वरः। गीता १३-२२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करना बंद कर दिया तो वह आधार, वह वाहन क्षीण-विगलित और विनष्ट हो जायगा। वह 'महेश्वर' है, और उसकी प्रसन्नता के लिये ही प्रकृति काम करती है। वह आत्मा है, और प्रकृति केवल उसका वाहन, उसका वस्त्र, उसकी आत्म-अभिव्यक्ति का साधन है। परंतु उसकी सब अनुमतियां, अस्वीकृतियां, आदेश एकदम, उसी स्थान पर उसी क्षण, अलंघ्य एवं पूर्णतः अनिवार्य रूप में असर नहीं करते, किन्तु काल के अतिक्रम, स्थान के परिवर्तन के अधीन रहते हुए, कार्य-कारण के नियमानुसार असर करते हैं। अतिक्रम छोटा या लंबा, एक क्षण का या शताब्दियों का हो सकता है; इसी प्रकार परिवर्तन छोटा या बड़ा, यहां या दूसरे लोक में; एवं क्रिया ऋजुपथानुसारिणी अथवा वक्रपथानुसारिणी हो सकती है, अर्थात् क्रियाओं का अतितीव्रतावश एक हो जाना जिसे लोग चमत्कार कहते हैं या उनका सावधानतापूर्ण और श्रमसिद्ध विकास जिसमें प्रत्येक कदम प्रत्यक्ष तौर पर नियमबद्ध और पूर्वविचारित होता है। किंतु जबतक जीव बद्ध है तबतक उसका स्वामित्व सीमित और वैधानिक होता है, न कि बिल्कुल स्वेच्छाचारी और पूरा पूरा। उसकी स्वीकृति और हस्ताक्षर आवश्यक होते हैं, किंतु जो राज्य का काम करते हैं, नियम प्रचलित करते, प्रबंध करते, नियम बनाते हैं वे तो हैं उसके मन और शरीर से बने हुए आध्यात्मिक तथा लौकिक सरदार (the Lords) तथा उसकी बाह्य परिस्थिति से बने हुए साधारण प्रतिनिधि (the Commons)।

आत्म-मुक्ति का पहला कदम है कर्तृत्व के भ्रम से छुटकारा पाना, यह अनुभव करना कि प्रकृति काम करती है, न कि आत्मा। दूसरा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है दृश्य जगत् के संबंधों के घेरे को तोड़ डालना—स्वामित्व को ईश्वर के ही अर्पण करके, धारण करने और अनुमति देने की शक्तियों के अपने स्वतंत्र उपयोग को छोड़कर इनका उपयोग अकेले उसीको सौंप करके, भोक्ता के विशेषाधिकार को भी उसपर उत्सर्ग करके। तब जो कुछ शेष रह जाता है वह है अक्षर पुरुष की स्थिति, उस पुरुष की जो स्वतंत्र, आनंदमय स्वयंभू सत्ता है जो प्रकृति के कार्य को देखती है, किंतु उससे बाहर है। क्षर अक्षर में लौट जाता है। जब यह साक्षी पुरुष भी ईश्वर के निज स्वरूप में अवस्थित हो जाता है, तो वह है पूर्ण मुक्ति की स्थिति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मू० १००।—

प्रच्छन्न आत्मा का दबाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नवम अध्याय

प्रच्छन्न आत्मा का दबाव

संसार आंखमिचौली की महान् क्रीड़ा है जिसमें सद्वस्तु प्रतीयमान के पीछे, आत्मा प्रकृति के पीछे, छिपी हुई है। प्रतीयमान वस्तु वास्तविक सत्ता का कपटवेष धारण करती है; सद्वस्तु धुंधली सी दिखायी देती है मानो वह असारभूत छाया हो। दृश्य जगत् और उसके नियमों की विशालता मनुष्यों की कल्पनाओं को दास बना लेती है। हम चिल्ला उठते हैं, "यह जबर्दस्त मशीन है, किंतु यह अपनी ही शक्ति से चलती है और न तो इसे संचालक की जरूरत है और न निर्माता की; क्योंकि इसकी गति नित्य है।" अर्द्ध-सत्य से अंधे हुए हम यह नहीं देख पाते कि, निर्माता से रहित मशीन के स्थान पर वास्तव में, केवल एक शुद्ध सत्ता ही विद्यमान है और मशीन कोई है ही नहीं। हिंदुओं ने ऐसे अनेक रूपकों का निर्माण किया है जिनसे वे ईश्वर और जगत् के परस्परसंबंध के विषय में अपने ज्ञान को प्रकट करने का यत्न करते हैं, किंतु उन रूपकों में मशीन का विचार बहुत अधिक चित्रित नहीं। उनमें चित्रण है मकड़ी और उसके जाले का, अनेक स्फुलिंगों सहित अग्नि का, नमकीन पानी के जलाशय का जिसका प्रत्येक कण नमक से आविष्ट है।

संसार जाग्रत्स्वप्न है, मूर्त कल्पना है, एक ऐसी ज्ञानराशि है जो भौतिक आकृतियों के रूप में व्यवस्थित हो गयी है, और वे आकृतियां

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनेक विचारों को व्यक्त करती हैं जिनमेंसे प्रत्येक स्वयं एक ही अपरिवर्तनशील सत्य का अंश मात्र है। प्रत्येक वस्तु व्यक्त होती है, कोई भी चीज बनायी नहीं जाती। प्रत्येक वस्तु प्रच्छन्न अवस्था में से बाहर व्यक्त कर दी जाती है, कोई भी वस्तु असत् से सत् नहीं की जाती। केवल वही जो 'थी' 'हो' सकती है न कि वह जो नहीं थी। और जो है वह नष्ट नहीं हो सकती, केवल अपने आपको 'खो' सकती है। नित्य आत्मा में सब कुछ नित्य है।

पुराकाल से क्या वस्तु थी? आत्मा। अपने आपमें क्या वस्तु अस्तित्ववान् है? आत्मा। सदा ही क्या वस्तु रहेगी? आत्मा। देश और काल में जो कुछ भी है, वह सब वही है; और देश तथा काल से परे भी जो कुछ हो सकता है वह भी वही है। परंतु ऐसा हम क्यों सोचें? इसका कारण है वह नित्य और अपरिवर्तनशील एकता जो 'बहु' की परिवर्तनशीलता को संगठन तथा स्थिरता प्रदान करती है। स्थूल द्रव्य मात्र का कुल जोड़ वृद्धि या क्षति के कारण कभी नहीं बदलता, यद्यपि उसके घटक भाग लगातार स्थान बदलते रहते हैं; संसार में विद्यमान 'शक्ति'* के कुल जोड़ की भी यही बात है, आत्मा की भी यही स्थिति है। जड़प्रकृति केवल वह गतिशील शक्ति है जो तीव्रता से कंपन करके आकार धारण कर लेती है। और शक्ति केवल वह आत्मा है जो उस गति को प्रकट करती है जिसे हम शक्ति कहते हैं। आत्मा शक्ति है, आत्मा ही सत्ता है,—जड़प्रकृति और शक्ति आत्मा में होने-

*Energy

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाली गतियां मात्र हैं। आनंद में एकाकार होकर निहित शक्ति और सत्ता ही, अर्थात् सच्चिदानंद ही, पदार्थों की सनातन वास्तविकता है। किन्तु वह परम शक्ति गति नहीं है, वह ज्ञान या धी* है। ज्ञान गति का मूल स्रोत है, न कि गति ज्ञान का। अतएव आत्मा ही सब कुछ है। वही एकमात्र सत् है। धी या शक्ति, सत्ता और आनंद उसके त्रिविध आविर्भाव मात्र हैं, सत्ता में धी, जो शक्ति है, अन्तर्निहित है, तथा शक्ति या धी में आनंद।

प्रज्ञा के रूप में व्यक्त हुई आत्मा जगत् का आधार है। आत्मा सत्-रूप में एक है; प्रज्ञा के रूप में वह एक रहना न छोड़ते हुए, अपने आपको बहुगुणित करती है। हम एक वृक्ष देखते हैं और कहते हैं "यह पार्थिव वस्तु है"; परंतु यदि कोई पूछे कि यह वृक्ष कैसे बन गया, तो हमें कहना होता है कि यह बीज में से बढ़ा या विकसित हुआ। किंतु वृद्धि या विकास तो केवल परिभाषा है जो क्रिया में होनेवाले कालक्रम को बताती है। न तो वह उद्गम को समझाती है और न ही स्वयं क्रियापद्धति की व्याख्या करती है। बीज वृक्ष को ही क्यों पैदा करता है और सत्ता के अन्य किसी रूप को क्यों नहीं? उत्तर मिलता है, चूंकि यही उसका स्वभाव है। उसका यह स्वभाव क्यों नहीं कि वह सत्ता के अन्य किसी रूप को या वृक्ष की किसी और जाति को पैदा करे? यही नियम है—ऐसा जवाब दिया जाता है। परंतु यह नियम क्यों है? केवल यही उत्तर बन पड़ता है कि यह ऐसा है चूंकि

---

*Idea

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह ऐसा है; कि ऐसा ही घटित होता है, क्यों ?—यह कोई नहीं कह सकता। वास्तव में जब हम 'नियम' का उल्लेख करते हैं, तब हम 'विचार' (Idea) का ही प्रतिपादन करते हैं, जब हम वस्तु के विशेष स्वभाव की बात कहते हैं, तब भी हम विचार का ही प्रतिपादन करते हैं। कहीं भी हम किसी पदार्थ, किसी अदृश्य शक्ति, किसी दृष्टिगोचर महावेग पर हाथ रखकर यह नहीं कह सकते "देखो, यह सत्ता है जिसे नियम या प्रकृति कहते हैं।" बीज वृक्ष को विकसित करता है चूंकि वृक्षविशेष ही वह विचार (Idea) है जो बीजविशेष में अन्तर्निहित है; यह रूप में व्यक्त करने की प्रक्रिया है, न कि सर्जन। अगर कोई स्थिरनिविष्ट विचार न होता, तो आकस्मिक संयोगों और स्वच्छंदताओं से भरा संसार हमारे सम्मुख होता, न कि नियममय संसार; 'वस्तुओं का स्वभाव' इस जैसा कोई विचार ही नहीं रहेगा, अगर कोई उद्गमकारिणी तथा नियमक्रमविधायिनी प्रज्ञा न हो जो रूपों में विशिष्ट विचार को प्रकट करे। किंतु रूप बदलता, पैदा होता, नष्ट होता रहता है, विचार नित्य रहता है। रूप आविर्भाव या वाह्य अभिव्यक्ति है, विचार सत्य है। रूप बाह्य वस्तु है, विचार वास्तविक सत्ता है।

इसीलिये हिंदू विचारक सभी वस्तुओं में प्रच्छन्न आत्मा का दबाव देखता है। उसे हम प्रज्ञा, विश्वव्याप्त बुद्धि के रूप में देखते हैं जो अचेतन वस्तुओं में चेतन, क्रियाशून्य वस्तुओं में क्रियाशील है। उस प्रज्ञा की शक्ति को ही यूरोपीय विद्वान् प्रकृति कहते हैं। वृक्ष अपना आकार आप नहीं बनाता और न बना सकता है, निगूढ़ प्रज्ञा का दबाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसे आकार प्रदान करता है। वही प्रज्ञा मनुष्य के वीज (वीर्य) में है और वही जड़प्रकृति के उस अतिलघु कण में स्वभाव, चरित्र, भाव के नमूनों को धारण कर उन्हें अजात शिशु में पहुंचाती है। अतएव पैतृक-गुण सत्य है; किंतु अगर प्रज्ञा वीज में गुप्त न होती, पैतृकगुण मिथ्या, अव्याख्येय, असंभव होता। मनुष्य के मन, हृदय, शरीर में भी हम वही दवाव अनुभव करते हैं। क्योंकि प्रच्छन्न आत्मा शरीर पर अपना दबाव डालती है, उसपर अपनी मुद्रा अंकित करती है, अपने आपको उसमें प्रकट करती है, अतएव शरीर मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रकट करता है, उसके उदीयमान और चेतन विचार को अथवा उसके सविशेष भाव को, उसके अहं को, प्रकट करता है। इसीलिये कोई भी दो चेहरे, कोई भी दो रूपप्रकाशन, यहां तक कि कोई भी दो अंगुष्ठ-चिह्न सर्वथा समान नहीं होते; शरीर का प्रत्येक अवयव एक न एक ढंग से मनुष्य को प्रकट करता है। आत्मा का दवाव मन और हृदय में अपने आपको प्रदर्शित करता है; इसीलिये मनुष्य, परिवार, राष्ट्र का अपना अपना व्यक्तित्व होता है, वे विचार और हृत्संवेदन की विशेष आदतों के आदी होते हैं, इसीलिये वे समान भी होते हैं और असमान भी। अतएव मनुष्य न केवल भौतिक तौर पर अपितु आध्यात्मिक, बौद्धिक, नैतिक तौर पर एक दूसरे पर क्रिया-प्रतिक्रिया करते हैं, चूंकि सभी प्राणियों में एक ही आत्मा है जो अपने आपको नानाविध विचारों और विचार के लिये विविधतया उपयुक्त रूपों में प्रकट कर रही है। प्रच्छन्न आत्मा का दबाव विश्व की घटनाओं में और उसकी विपुल गतिधारा में भी अपने आपको प्रकट करता है। यही वह कालात्मा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(Zeitgeist) है, यही वह 'प्रयोजन' है जो युग-प्रवाह में से, ज्योतिः-पिण्डों के परिक्रमणों में से प्रकट होता चलता है, यही वह सत्ता है जो विकास को संभव बनाती और उसके मार्ग, साधन तथा लक्ष्य को निर्दिष्ट करती है। "यह वह है जिसने शाश्वत काल से सब पदार्थों का यथावत् विधान कर रखा है।"

यही वह वेदान्त की शिक्षा है जो हमें उपनिषदों में अपने प्राचीनतम रूप में उपलब्ध होती है। अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैत ये तीनों तो 'एक' और 'बहु' के संबंधों को विचारने की अनेक दृष्टियां मात्र हैं, और वेदांत नाम पर एकाधिकार का दावा करने का हक उनमेंसे किसीको भी नहीं है। अद्वैत सच्चा है, क्योंकि 'बहु' 'एक' की अभिव्यक्तियां मात्र हैं, विशिष्टाद्वैत सच्चा है क्योंकि विचार नित्य हैं और अगर अब प्रकट हैं तो पहले भी अवश्य प्रकट हुए होंगे और फिर आगे भी प्रकट होंगे,– बहु एक में नित्यवर्तमान हैं, केवल, वे कभी व्यक्त होते और कभी अव्यक्त रहते हैं। द्वैत सच्चा है, क्योंकि यद्यपि एक दृष्टिबिंदु से एक और बहु नित्यतया और तत्त्वतः एक ही हैं, तथापि दूसरे दृष्टिबिंदु से, विचार अपने अभिव्यक्त-रूप में, उस प्रज्ञा से जिसे यह व्यक्त करता है, नित्यतया भिन्न होता है। अगर एकत्व नित्य और अविकारी है, तो द्वित्व भी लगातार आवर्तनशील है; आत्मा अनंत, असीम और सनातन है; किंतु उसका अभिव्यक्ति के निमित्त आवेग भी अनंत, असीम और सनातन है और वह आवेग अन्तरहित देश को असंख्येय सत्ताओं से परिपूरित करता रहता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यक्ति की महत्ता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दशम अध्याय

व्यक्ति की महत्ता

सभी आंदोलनों में, मानव-समाज के प्रत्येक बृहत् कार्य में काल की आत्मा ही, वही जिसे यूरोप टसाईट गाईस्ट (Zeitgeist) और भारत कालपुरुष के नाम से पुकारता है, अपने आपको प्रकट करती है। ये नाम ही गभीर अर्थ से परिपूर्ण हैं। सबकी माता और सबका संहार करनेवाली काली वह शक्ति है जो, मनुष्यों, संस्थाओं और आंदोलनों की शाश्वत तरंग में अपने आपको प्रकट करती हुई, मानव-जाति के हृदय में गुप्त तौर से कार्य करती है, महाकाल वह अन्तःस्थित आत्मा है, जिसकी शक्ति उस (काली) में सर्वत्र संचरित है और विश्व की प्रगति तथा राष्ट्रों की नियति का निर्माण करती है। उसीका आवेग अपने आपको, काल में, चरितार्थ करता है, और जब उस अन्तःस्थित आत्मा से गति एवं प्रेरणा प्राप्त हो जाती है, तो काल और शक्ति उसका भार ग्रहण कर लेते हैं, उसे तैयार करते, परिपक्व करते और पूर्णतया सफल करते हैं। जब टसाईट गाईस्ट, अर्थात् काल के अंदर स्थित ईश्वर, निश्चित दिशा में गति करता ह, तब संसार की सब शक्तियों को आवाहन होता है कि वे आज्ञापित उद्देश्य की सिद्धि के निमित्त जारी की गयी उस गतिधारा को संवर्धित करें। जो सचेत रूप से उसकी सहायता करता है, वह उसे खूब बढ़ाता है, किंतु जो बाधा डालता है वह उसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और भी अधिक बढ़ाता है, और गुप्त मूलस्रोत से उद्भूत आवेग,–पवनान्दोलित समुद्र के पृष्ठ पर क्षण में उठती क्षण में गिरती लहर की तरह, कभी विजय और गौरव के शिखर पर आरूढ़, कभी अनुत्साह और पराजय के गर्त में पतित,–पूर्वनिर्धारित कार्यसिद्धि की ओर आगे आगे बढ़ा चला जाता है। चाहे मनुष्य सहायता दे, चाहे मनुष्य प्रतिरोध करे, किंतु कालपुरुष काम करता है, निर्माण करता है, दबाव डालता है, निर्माण को दृढ़ कर देता है।

कुरुक्षेत्र के समय का वह विराट् और स्मरणीय दिव्य दर्शन, जब श्रीकृष्ण ने अपना विश्व-रूप दिखलाते हुए अपने आपको संहारकारी काल घोषित किया, मानवजाति के इस गंभीर तथ्य का द्योतक है। जब अर्जुन ने अपना धनुष और तूणीर परे फेंकना चाहा, जब उसने कहा, "यह पाप है जिसे हम करने लगे हैं और यह प्रजाओं और भाइयों का महान् संहार है, मैं ऐसा नहीं करूंगा", तब श्रीकृष्ण उसकी बुद्धि को उसकी गलती का निश्चय कराके गीता के ११वें अध्याय में वर्णित उस अत्यद्भुत दर्शन से उसकी कल्पना-शक्ति पर वस्तुओं के सत्य को अंकित करने में प्रवृत्त हुए। ये हैं वे ओजस्वी श्लोक–

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धो
लोकान् समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः॥
तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व
जित्वा शत्रून् भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मयैवेते निहताः पूर्वमेव
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् ॥

"मैं काल हूं जो लोकों को उजाड़ता और नष्ट करता हूं, देखो, मैं अपनी पूरी शक्ति के साथ उठ खड़ा हुआ हूं, मैं राष्ट्रों को निगल जाने के लिये यहां उपस्थित हूं। तेरे बिना भी वे सब नहीं बचे रहेंगे,—वे योद्धा जो विरोधी सैन्यदलों में व्यूह बांधे खड़े हैं। इसलिये अवश्य तू उठ खड़ा हो और महान् यश का लाभ कर, अपने शत्रुओं को जीत ले और विशाल तथा समृद्ध राज्य का उपभोग कर। क्योंकि ये !—ये सब तो पहले ही मारे जा चुके हैं और मैंने ही इनका वध कर डाला है; केवल निमित्त बनो, हे सव्यसाचिन्।"

श्रीकृष्ण यहां अर्जुन के सामने काल की मंद प्रक्रिया के रूप में प्रकट नहीं हुए हैं बल्कि कालपुरुष के रूप में, जिस रूप में कि कालपुरुष मानो दशाब्दियों तक सावधानतापूर्वक तैयार किये गये कार्य को क्षण भर में पूरा कर रहा होता है। सभी लोग कुरुक्षेत्र की दैवी विपत्ति की तरफ अटल रूप से बढ़े चले आ रहे थे। मनुष्य उसे जानते न थे; जो उस विपत्ति को हर तरह टालना चाहते थे उन्होंने भी अपने कर्म तथा कर्माभाव से उसके आने में ही सहायता की; जिन्हें वह भावी विपत्ति किंचित् दीख गयी थी उन्होंने भी विधि के चक्रों को थामने का व्यर्थ प्रयास किया; स्वयं श्रीकृष्ण भी एक निष्काम कर्मयोगी की तरह, जो फल का विचार किये बिना कर्म किया करता है, उस निराशापूर्ण दूत-कार्य को निभाने के लिये हस्तिनापुर गये; किंतु कालपुरुष ने सब कुछ पलट दिया। बाद में कहीं लोगों की आंखें खुलीं और उन्होंने देखा कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कैसे वह सारे का सारा सुन्दर, शक्तिशाली और गर्वित भारतीय जगत् अपने राजसंघों और अपने शस्त्रास्त्रों और अपने रथों और अपनी विकरालकाय सेनाओं के साथ संहारक के खुले मुखों में, उसके जबर्दस्त जबड़ों में खत्म होने के लिये, उसके कटकटाते दांतों के बीच चूर चूर होने के लिये वैसे ही भागा चला जा रहा है जैसे नदियां समुद्र की ओर दौड़ी चली जाती हैं, जैसे पतंग वेग से फड़फड़ाते हुए प्रज्वलित ज्वाला में जा गिरते हैं। उस सनातन पुरुष की लीला में कुछ गतियां ऐसी होती हैं जो भयानक होती हैं तथा कुछ गतियां ऐसी भी होती हैं जो मधुर और सुन्दर होती हैं। वृन्दावन का नृत्य कुरुक्षेत्र के मृत्यु-नृत्य के बिना पूरा नहीं होता; क्योंकि इनमेंसे प्रत्येक विश्व की उस महान् समस्वर गति का एक स्वर है जो दुःख और पाप को सौन्दर्य, आनंद और भद्र में—शिव, शांत, शुद्ध, आनंद में—रूपांतरित करके वैषम्य-विरोध से साम्य-संवाद की ओर बढ़ती है,—घृणा और कलह से प्रेम और भ्रातृभाव की ओर, बुराई से विकास की परिपूर्णता की ओर।

काल-पुरुष (Zeitgeist) के लक्ष्य का कौन प्रतिरोध कर सकता था? उस समय भारतवर्ष में बलवान् पुरुष सैकड़ों थे, महान् दार्शनिक और योगी, सूक्ष्म नीतिज्ञ, मनुष्यों के नेता, विचारशील और कार्यनिपुण राजा भी विद्यमान थे। शक्तिशालिनी बुद्धिप्रधान सभ्यता का विकास अपने शिखर पर आरूढ़ था। ऐसा प्रतीत हो सकता है कि उन महानुभावों में से कुछ एक का जरा इधर से उधर हो जाना सारे संकट को रोक देता। कम से कम अर्जुन ने अपना तीर कमान फेंकते समय ऐसा ही सोचा था। वह ही पाण्डवों की एकमात्र आशा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

था और उसके बिना उनकी विजय अवश्य निरा स्वप्न लगती होगी और लड़ना पागलपन का कार्य। तथापि उसीको संबोधित कर कालपुरुष ने महान् से महान् शक्तिशाली व्यक्ति की भी नितांत असहायता और ईश्वर के आदेश की निश्चित सफलता उद्घोषित की। "तेरे बिना भी वे सब नहीं रहेंगे, वे योद्धा जो विरोधी सेनाओं में व्यूह-बद्ध खड़े हैं।" क्योंकि ये लोग केवल शरीर से जीवित हैं; उस सत्ता में जो पीछे स्थित है और अपने आशयों को सफल बनाने में सशक्त है, वे मृत पुरुष हैं। जिसकी ईश्वर रक्षा करता है उसे कौन मार सकता है? जिसे ईश्वर मार चुका है उसे कौन बचा सकता है? जो मनुष्य वध करता है वह तो निमित्त या यंत्र मात्र होता है जिसके द्वारा, जो काम पर्दे के पीछे हो चुका होता है वह इस तरफ घटित हो जाता है। कुरुक्षेत्र में हुए महान् वध के विषय में जो सत्य था वह उन सभी कार्यों के विषय में भी सत्य है जो इस संसार में किये जाते हैं; उस सब उत्पत्ति, प्रलय और विनाश के बारे में भी सत्य है जो लीला का निर्माण करते हैं।

इस शिक्षा की महत्ता महान् पुरुषों के लिये है। जिन्हें अतिप्रबल परिवर्तन करने का आदेश प्राप्त हुआ होता है वे कालपुरुष की शक्ति से पूरित होते हैं। काली उनमें प्रवेश कर चुकी होती है और जब काली किसी मनुष्य में प्रवेश कर लेती है तो वह बुद्धिगम्यता और संभाव्यता की कुछ पर्वाह नहीं करती। वह प्रकृति की शक्ति है जो नक्षत्रों को उनकी कक्षाओं (orbits) में घुमाती है,—ऐसी आसानी से जैसे कोई बालक गेंद घुमाता हो, और उस शक्ति के लिये कुछ भी असंभव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं। वह अघटनघटनापटीयसी है, अर्थात् असंभव को साधित करने में सिद्धहस्त है। वह 'देवात्मशक्तिः स्वगुणैर्निगूढा' है, दिव्य आत्मा की शक्ति है जो अपनी ही क्रियाओं के तीन गुणों में छिपी हुई है, और जिस प्रयोजन को संपादित करने का उसे आदेश मिला है उसे पूरा करने के लिये उसे समय के सिवाय और किसी चीज की जरूरत नहीं। वह काल में गति करती है और वह गति ही अपने आपको सफल बनाती है, अपने साधन पैदा करती है, अपने लक्ष्यों को सिद्ध करती है। वह जब एक मनुष्य में दूसरे की अपेक्षा अधिक काम करती है तो यह कोई आकस्मिक घटना नहीं होती। वह मनुष्य इसलिये चुना जाता है क्योंकि वह उपयुक्त पात्र हो सकता है, और उसे चुनकर वह (काली) न तो उसे तबतक छोड़ती है जबतक प्रयोजन सिद्ध नहीं हो जाता और न ही उसे अपने आपको छोड़ने देती है। इसीलिये श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं–

> यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे।
> मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति।।

"अहंकार का आश्रय लेकर तू जो विचार करता है और कहता है 'मैं युद्ध नहीं करूंगा', यह तेरा निश्चय व्यर्थ की चीज है; प्रकृति तुझे तेरे काम में नियुक्त करेगी।" जब ऐसा दिखायी देता है कि किसी मनुष्य ने अपना काम छोड़ दिया है, तो उसका केवल यह अर्थ होता है कि उसका काम समाप्त हो गया है और काली किसी दूसरे मनुष्य को पात्र बनाने के लिये उसका परित्याग कर देती है। जब कोई आदमी जिसने महान् कार्य संपादित किया है नष्ट हो जाता है, तो उसका कारण होता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है अहंकार जिसके द्वारा उसने अन्तःस्थित शक्ति का दुरुपयोग किया होता है, और वह शक्ति स्वयं ही उसका मानमर्दन कर डालती है, जैसा उसने नैपोलियन का किया। कुछ यंत्र संभालकर सुरक्षित रखे जाते हैं, दूसरे एक तरफ पटक दिये जाते और खण्ड खण्ड कर दिये जाते हैं, पर हैं सभी यंत्र ही। यही महान् पुरुषों की महत्ता है, यह नहीं कि वे अपनी ही शक्ति से महान् घटनाओं को निर्धारित कर सकते हैं, बल्कि यह कि वे उस शक्ति के कार्योपयोगी और विशेषतया-निर्मित यंत्र होते हैं जो उन घटनाओं को निर्धारित करती है। मीराबो ने फ्रांस की राज्यक्रान्ति को जन्म देने में जितनी सहायता की, उससे अधिक और किसीने भी नहीं की। जब वह उसका विरोध करने पर तुल गया और, राजतंत्र का आश्रयस्तंभ बनकर, उसने पहिये को रोकने का यत्न किया, तो क्या फ्रांस के उस सर्वाधिक शक्तिशाली पुरुष द्वारा पीछे खिसकाये जाने की वजह से फ्रांसीसी राज्यक्रान्ति रुक गयी ? काली ने मीराबो को अपने पैरों तले दबोच लिया और वह नष्ट हो गया; किंतु क्रान्ति जारी रही, क्योंकि क्रान्ति कालपुरुष की अभिव्यक्ति थी, क्रान्ति ईश्वर की इच्छा थी।

ऐसा ही सदा होता है। वे लोग जो अपने पर गर्व करते थे कि महान् घटनाएं हमारा कार्य हैं, क्योंकि उनमें शुरू में उनका हाथ दिखायी देता था, काल की खाई में जा गिरते हैं और दूसरे लोग उनकी विध्वस्त ख्यातियों को रौंदते हुए आगे बढ़ते हैं। वे लोग जो अपने अंदर स्थित काली से वेगपूर्वक आगे बढ़ाये चले चलते हैं और दैव के साथ कोई समझौता नहीं करते, वे ही जीवित रहते हैं। व्यक्तियों की महत्ता अन्तःस्थित नित्य शक्ति की महत्ता है।

११५ श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय बाल्कोट
पद्मनाथ
23 August 1913

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अदिति कार्यालय
के
प्रकाशन

१.	'अदिति'—त्रैमासिक पत्रिका . . .	५) रु. वार्षिक
२.	पांडिचेरी के परमहंस	।)
३.	अदिति माता	१)
४.	अमृतबिन्दु	..
५.	मां की बातें (उर्दू)	..
६.	नये वर्ष की प्रार्थनाएं	।)
७.	दुर्गास्तोत्र	।)
८.	विचार और झांकियां	।।।)
९.	दयानन्द	।।।)
१०.	चार साधन	।।)
११.	योगविचार	२।।)
१२.	योग और उसके मकासिद (उर्दू)	।।।)
१३.	योगदीक्षा	१)

वेद-रहस्य

श्रीअरविन्द के तीन महान् ग्रन्थों–The Life Divine, The Synthesis of Yoga, The Secret of the Veda में से तीसरे का यह अनुवाद है। प्रतापनिधि की आयोजना से प्रकाशित हुआ है और दाम १०) है।

श्रीअरविन्द आश्रम मुद्रणालय, पांडिचेरी
241—48—1500

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस जगत्‌की पहेली

(THE RIDDLE OF THIS WORLD)

श्रीअरविन्द

श्रीअरविन्द ग्रन्थमाला
४, हेयर स्ट्रीट
कलकत्ता
१९३७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषान्तरकार

मदनगोपाल गाड़ोदिया

प्रकाशक

मदनगोपाल गाड़ोदिया
श्रीअरविन्द ग्रन्थमाला
४, हेयर स्ट्रीट, कलकत्ता

मुद्रक

धनश्यामदास जालान, गीताप्रेस, गोरखपुर।

प्रथम संस्करण
१०००

मूल्य
॥=) दस आना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशकका वक्तव्य

इस पुस्तकमें श्रीअरविन्ददेवके कुछ ऐसे लेखोंका संग्रह है जो उन्होंने समय-समयपर अपने शिष्योंको अथवा योग और अध्यात्मके अन्य जिज्ञासुओंको, उनके प्रश्नोंके उत्तर-रूपसे लिखे हैं अथवा जिनमें यथा 'मिथ्या मन्द प्रभाकी उपत्यका' में, बाहरसे आये हुए सम्मत्यर्थ प्रेषित पत्रोंकी उन्होंने समीक्षा की है। ये लेख सर्वसाधारणके लिये उपयोगी हैं, इनमें कई ऐसे प्रश्नोंके उत्तर हैं जो आध्यात्मिक सत्य और अनुभूतिके विषयमें प्रायः उठा करते हैं; इसलिये इनको इस पुस्तकमें संकलित करके एक ही सामान्य नामसे प्रकाशित किया जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
१—महत्तर सत्य	१
२—परतत्त्व वर्ग	५
३—लोकसंस्थान-क्रम	११
४—आरोहण और अवरोहणकी गति ...	१९
५—पाश्चात्य दर्शन और योग	२७
६—अज्ञेयवादियों और वेदान्तियोंका अज्ञेय ...	३७
७—संशय और भगवान्	४३
८—मिथ्या मन्द प्रभाकी उपत्यका ...	४७
९—मध्यवर्ती क्षेत्र	६१
१०—श्रद्धाका प्रश्न	८३
११—श्रीभगवान्‌का त्रिविध स्वरूप	८७
१२—कुछ आध्यात्मिक विकल्प	९१
१३—पुनर्जन्म और व्यक्तित्व	९९
१४—इस जगत्‌की पहेली	१०५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस जगत्की पहेली

श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय बास्कोटा
बडानाथ
23 August 1913
वी. सं. १९७० भाद्र शुक्ल ३ बुधवार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीहरिः

महत्तर सत्य

इससे हमारा अभिप्राय विज्ञानमय चैतन्यके पृथ्वीपर अवतरित होनेसे है। विज्ञानलोकसे नीचेके सब सत्य (मनोमय लोकका उच्चतम आध्यात्मिक सत्य भी, जो अबतकके प्रकाशित सत्योंमें सर्वोच्च है) या तो आंशिक हैं या सापेक्ष हैं, अथवा अपूर्ण और जड़ जीवनका रूपान्तर करनेमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

असमर्थ हैं; अधिक-से-अधिक ये इस जीवनको केवल सुधार सकते याने प्रभावित कर सकते हैं। विज्ञान (Supermind) वह सत्यं ऋतं बृहत् है जिसका प्राचीन ऋषिगण वर्णन कर गये हैं; अबतक उसकी झलक मिलती रही है, कभी-कभी कोई अप्रत्यक्ष प्रभाव या आवेश भी होता रहा है, पर पार्थिव चैतन्यमें इसका अवतरण कराकर यहाँ यह स्थापित नहीं किया गया है। उसका इस प्रकार अवतरण कराना हमारे योगका लक्ष्य है।

परन्तु इस विषयमें व्यर्थके तार्किक वाद-विवादमें पड़ना ठीक नहीं। विज्ञान क्या है, बुद्धि इसकी धारणा भी नहीं कर सकती; तब फिर जिसे बुद्धि जानती ही नहीं उसके सम्बन्धमें तर्क चलानेमें क्या रखा है? तर्कके द्वारा नहीं, बल्कि सतत अनुभव, चैतन्यके विकास और ज्योतिके विस्तारके द्वारा ही हम बुद्धिके परे चैतन्यके उन उच्च स्तरोंमें पहुँच सकते हैं जहाँसे हम भागवत प्रज्ञाको देखना आरम्भ कर सकते हैं। ये स्तर भी विज्ञान नहीं हैं पर ये उसका किञ्चित् ज्ञान ग्रहण कर सकते हैं।

वैदिक ऋषि पृथ्वीके लिये विज्ञानको कदापि प्राप्त नहीं हुए और शायद उन्होंने इसका कोई प्रयत्न भी नहीं किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्होंने व्यक्तिगत रूपसे विज्ञानमय लोकमें पहुँचनेकी चेष्टा की पर उसे उन्होंने नीचे नहीं उतारा न उसे पार्थिव चैतन्यका स्थायी भाग ही बनाया। उपनिषदोंमें कुछ ऐसे मन्त्र हैं जिनमें यह संकेत किया गया है कि इस पार्थिव शरीरको रखते हुए सूर्य-(विज्ञानके प्रतीक) मण्डलको भेदकर जाना असम्भव है। इस विफलताके कारण ही भारतका आध्यात्मिक प्रयास मायावादमें पर्यवसित हुआ। हमारा योग आरोहण और अवतरणकी द्विविध गतिवाला है; इसमें साधक चैतन्यके क्रमशः उच्चतर स्तरोंपर आरोहण करता है, पर साथ ही वह उन लोकोंकी शक्तिको नीचे केवल मन और प्राणमें ही नहीं, बल्कि अन्तमें शरीरमें भी उतार लाता है। इन स्तरोंमें सर्वोच्च स्तर विज्ञान है और वही इस योगका लक्ष्य है। उसका जब अवतरण हो सकेगा तभी पार्थिव चैतन्यका दिव्य रूपान्तर सम्भावित होगा।

४ मई १९३०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परतत्त्व-वर्ग

हम नहीं समझते कि आध्यात्मिक और गूढ ज्ञानके किसी सम्प्रदायका किसी दूसरे सम्प्रदायके साथ पूर्ण पारस्परिक सम्बन्ध-सूत्र सर्वत्र मिल ही सकता है। सभी सम्प्रदाय एक ही विषयका प्रतिपादन करते हैं; पर सबकी विचारभूमिकाएँ भिन्न-भिन्न हैं, दृष्टिपथ भिन्न-भिन्न हैं, दृष्ट और अनुभूत वस्तुकी मानसिक धारणाएँ भिन्न-भिन्न हैं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यावहारिक हेतु भिन्न-भिन्न हैं और इस कारण निरीक्षित, निर्मित और अनुसृत मार्ग भिन्न-भिन्न हैं; इसलिये भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय हैं और हर सम्प्रदायकी अपनी पद्धति और अपनी विधि है।

प्राचीन भारतीय सम्प्रदायमें केवल एक ही त्रिक पर-तत्त्व है—सच्चिदानन्द। अथवा यदि तुम परार्धको परतत्त्व कहते हो तो वहाँ ये तीन लोक हैं—सत्-लोक, चित्-लोक और आनन्द-लोक। विज्ञान चौथा लोक कहा जा सकता है। कारण, यह उन तीनोंके सहारे है और परार्द्धमें ही है। भारतीय सम्प्रदायोंने चैतन्यकी दो सर्वथा भिन्न शक्तियों और स्तरोंको पृथक्-पृथक्रूपसे नहीं देखा—इनमें एक वह है जिसे हम अधिमानस (Overmind) कह सकते हैं और दूसरा वह जो वास्तविक विज्ञान अथवा भागवत प्रज्ञा है। यही कारण है कि वे माया (अधिमानस-शक्ति अथवा विद्या-अविद्या) के सम्बन्धमें बड़े चक्करमें पड़ गये और उसे ही उन्होंने परा सृष्टिशक्ति मान लिया। पर यह अर्ध-प्रकाशमात्र था और यहाँ आकर रुक जानेके कारण रूपान्तर-साधनकी कुंजी उन्हें नहीं प्राप्त हुई—यद्यपि वैष्णव और तान्त्रिक योग-सम्प्रदायोंने इसे प्राप्त करनेका पुनः प्रयास किया और कभी-कभी वे सफलताके किनारे भी पहुँच गये थे। गतिशील भागवत सत्यको ढूँढ़नेके जो-जो प्रयास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुए उनमें यही रोड़ा आकर अटकता रहा; हमें कोई भी ऐसा सम्प्रदाय ज्ञात नहीं जिसने अधिमानसकी ज्योतिके अवतरणका स्पर्श होते ही यह कल्पना न कर ली हो कि यही सत्य प्रकाश है, परम ज्ञान है; और इसीसे ये लोग या तो यहीं आकर रुक गये और आगे नहीं बढ़ सके, या उन्होंने यह मान लिया कि यह भी माया वा लीला है और इसलिये एकमात्र कार्य अब यही रह जाता है कि इसका अतिक्रमण कर परब्रह्मकी निश्चल, अक्रिय नीरवतामें पैठा जाय।

'परतत्त्ववर्ग' पदोंके प्रयोगका अभिप्राय यहाँ शायद वर्त्तमान सृष्टिके तीन मूलतत्त्वोंसे है। भारतीय योगसम्प्रदायमें ये तत्त्व ईश्वर, शक्ति और जीव हैं अथवा सच्चिदानन्द, माया और जीव। परन्तु हमारे योगसम्प्रदायमें जिसका उद्देश्य वर्त्तमान सृष्टिके परेकी शक्तिको प्राप्त करना है, ये तत्त्व तो गृहीत ही हैं और चैतन्यके विविध स्तरोंके रूपमें देखनेपर चैतन्यके इन तीन उच्चतम लोकोंको—अर्थात् आनन्द (जिसपर सत् और चित् स्थित हैं), विज्ञान और अधिमानसको—पर तत्त्व कह सकते हैं। अधिमानस अपरार्धके ऊर्ध्वतम भागमें है, और यदि तुम विज्ञानतक पहुँचना चाहो तो तुम्हें अधिमानससे होकर उस पार जाना होगा; फिर इसके भी और ऊपर और विज्ञानके परे सच्चिदानन्दके लोक हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस जगत्‌की पहेली

तुम कहते हो कि अधिमानसके नीचे एक खाई है। परन्तु सचमुच क्या वहाँ कोई खाई है—मानव-अबोधके सिवाय क्या कोई और भी खाई है? इस सम्पूर्ण लोकपरम्परा-में या चैतन्यके इन विभिन्न स्तरोंमें कहीं भी कोई गड्ढा या खाई वास्तवमें नहीं है, सब स्तर सदा ही एक दूसरेसे सम्बद्ध हैं और कोई भी सीढ़ी-सीढ़ी उनपर चढ़ सकता है। अधिमानस और मानवमानसके मध्यमें उत्तरोत्तर अधिकाधिक प्रकाशमान कई स्तर हैं। परन्तु ये मानवबुद्धिके बोधके परे हैं—केवल दो-एक स्तरोंको छोड़कर जो निम्नतम स्तर हैं और जिनका कुछ सम्पर्क मानवबुद्धिको प्राप्त होता है, ये बुद्धिके लिये बोधातीत हैं और इस कारण बुद्धि इन्हें एक प्रकारकी श्रेष्ठ अबोधावस्था या अविद्या मान लेती है। एक उपनिषत्‌में ईश्वर-चैतन्य-को सुषुप्ति कहा है। कारण, साधारणतया समाधिकी अवस्था-में ही मनुष्य इसमें प्रवेश करता है, जबतक कि वह अपने जाग्रत् चैतन्यको उच्चतर स्थितिमें ले जानेका अभ्यासी नहीं होता।

वास्तवमें जीव और उसके अंगोंकी रचनामें दो प्रणालियाँ एक संग काम कर रही हैं—एक चक्राकार है जिसमें कई चक्र और कोष हैं और बीचोबीच केन्द्रस्थानमें हृत्पुरुष है, और दूसरी प्रणाली है खड़ी, आरोहणावरोहणात्मक,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जैसे सीढ़ियोंकी चढ़ाई हो, जिसमें एकके ऊपर एक ऐसे अनेक लोकोंका ताँता लगा है और सबके ऊपर विज्ञान-अधिमानस है जो मानव-अवस्थासे भागवत सत्तामें पहुँचनेके संक्रमण-मार्गमें एक बड़ी ही जटिल ग्रन्थिकी तरह है। इस अवस्थान्तरके साथ-साथ यदि रूपान्तर भी सिद्ध करना हो तो एक ही रास्ता है। पहले अंदरकी ओर परिवर्त्तन होना जरूरी है, अन्तस्तम हृत्पुरुषको प्राप्त करने और उसको सामने ले आनेके लिये अंदर प्रवेश करना होगा; साथ ही प्रकृतिके आभ्यन्तर मानस, आभ्यन्तर प्राण तथा आभ्यन्तर भौतिक अंगोंका उद्घाटन करते जाना होगा। तत्पश्चात् आरोहण करना होगा अर्थात् ऊपरकी ओर परिवर्त्तन करके फिर निम्नतर अंगोंका परिवर्त्तन करनेके लिये नीचे उतरना होगा। जब साधक अन्तःपरिवर्त्तन कर लेता है तब वह सम्पूर्ण निम्न प्रकृतिको हृत्पुरुषके द्वारा ऐसा आप्यायित कर लेता है कि वह भागवत रूपान्तरके लिये प्रस्तुत हो जाय। ऊर्ध्व-गमन करनेमें जीव मानव-मानसका अतिक्रमण करता है और आरोहणकी प्रत्येक अवस्थामें पूर्वकी चेतना परिवर्त्तित होकर नवचैतन्यको प्राप्त होती है और समग्र प्रकृतिमें यह नवीन चेतना सञ्चरित होती है। इस प्रकार बुद्धिके परे प्रबुद्ध मानससे होकर अन्तर्ज्ञानमय चैतन्यमें पहुँचकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस जगत्की पहेली

हम प्रत्येक वस्तुको बुद्धिक्षेत्रसे अथवा बुद्धिरूप यन्त्रके द्वारा नहीं, बल्कि अन्तर्ज्ञानकी उच्चतर भूमिसे और अन्तर्ज्ञानीभूत संकल्प, प्रतीति, भाव, वेदन और शारीरिक स्पर्शके द्वारा देखना आरम्भ करते हैं। इस प्रकार अन्तर्ज्ञानसे ऊर्ध्वतर अधिमानसकी ऊँचाईमें प्रवेश करनेपर फिर नवीन परिवर्त्तन होता है और यहाँ हम प्रत्येक वस्तुको अधिमानस-चैतन्यसे तथा अधिमानस विचार, दृष्टि, संकल्प, भाव, वेदन, शक्ति और स्पर्शसे ओतप्रोत मन, हृदय, प्राण और शरीरके द्वारा देखते और अनुभव करते हैं। पर अन्तिम परिवर्त्तन विज्ञानगत है। कारण, एक बार जहाँ वहाँ पहुँचे—एक बार जहाँ प्रकृति विज्ञानभूत हो गयी, वहाँ हम अज्ञानको पार कर जाते हैं; वहाँ फिर चैतन्यके परिवर्त्तनकी और आवश्यकता नहीं रहती; यद्यपि भागवत उन्नतिक्रम इसके आगे और भी है, अनन्त विकासकी सम्भावना इसके आगे भी बनी हुई है।

१६ अप्रैल १९३१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लोकसंस्थान-क्रम

यदि हम विभिन्न लोकोंके इस क्रमविन्यासको एक साथ देखें तो हमें ये एक ही महत् विविध और सुसम्बद्ध गतिके रूपमें दिखायी देते हैं; उच्चतर लोक निम्नतर लोकोंपर अपना प्रभाव डालते हैं और निम्नतर लोक उच्चतर लोकोंसे प्रेरित होकर क्रियान्वित होते हैं और अपने अंदर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपने नियमके अनुरूप कोई ऐसी चीज विकसित या प्रकट करते हैं जो उच्चतर लोककी शक्ति और उस शक्तिके कार्यके अनुरूप होती है। इस जड़ जगत्ने प्राणमय लोकके प्रभावसे प्रेरित होकर प्राणका विकास किया है और मनोमय लोकके प्रभावसे प्रेरित होकर मनका विकास किया है। अब यह विज्ञानमय लोकके प्रभावसे प्रेरित होकर विज्ञानका विकास करनेमें प्रयत्नवान् है। इसी बातको विस्तारपूर्वक यों कह सकते हैं कि किसी उच्चतर लोककी विशिष्ट प्रवृत्तियाँ, गतियाँ, शक्तियाँ और सत्ताएँ अपने-अपने अनुरूप आकार निर्माण करनेके लिये अपने-आपको निम्नतर लोकमें उतार सकती हैं, और फिर ये आकार उन्हें जड़ जगत्के साथ जोड़ देंगे और इस तरह वे यहाँ अपनी क्रियाको प्रत्युत्पादित करेंगी। और यहाँ जिस-जिस पदार्थकी सृष्टि हुई है, उसके अपने सूक्ष्मतर कोष अथवा रूप होते हैं जो उसको धारण करते हैं जिनसे उनकी स्थिति बनी रहती है तथा उन शक्तियोंसे संयुक्त रखते हैं जो ऊर्ध्वसे कार्य करती हैं। उदाहरणार्थ, मनुष्यके अपने स्थूल अन्नमय शरीरके अतिरिक्त सूक्ष्मतर कोष अथवा शरीर भी होते हैं, जिनके द्वारा वह परदेकी आड़में चैतन्यके जड़ातीत स्तरोंके साथ सीधे संयुक्त रहता है और उनकी शक्तियों, गतियों और सत्ताओंसे प्रभावित हो सकता है। जो कुछ प्राणोंमें घटित होता है उसके पीछे गुह्य प्राणमय लोकोंकी पूर्वस्थित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गतियाँ और रूप सदा विद्यमान रहते हैं; जो कुछ मनमें घटित होता है वह गुह्य मनोमय लोकोंकी पूर्वस्थित गतियों और रूपोंमें पहलेसे ही कल्पित रहता है। यह पदार्थमात्रका एक ऐसा पहलू है जो कि जैसे-जैसे हम गतिशील योगमें अग्रसर होते जायँगे वैसे-वैसे अधिकाधिक स्पष्ट, स्थायी और विशिष्ट होता जायगा।

पर इन बातोंको शब्दशः बिल्कुल ऐसा ही नहीं समझना चाहिये। यह एक ऐसी सर्वतोमुखी निर्बाध अकुण्टगति है जिसमें चाहे जो हो सकता है और इसलिये इसे साक्षी चैतन्यकी नमनशील और सूक्ष्म रीति या बोधशक्तिके द्वारा ही ग्रहण करना चाहिये। यह किसी न्यायसूत्र या गणितके नियमके अंदर आबद्ध नहीं हो सकती। इस विषयमें दो-तीन बातोंको अवश्य ध्यानमें रखना होगा जिसमें यह नमनीयता हमारी दृष्टिके ओट न हो।

पहली बात यह कि प्रत्येक लोक अपने ऊपरके तथा नीचेके अन्य लोकोंसे सम्बद्ध रहते हुए भी स्वयं भी एक स्वतन्त्र जगत् है जिसमें उसकी अपनी गतियाँ, शक्तियाँ, सत्ताएँ, वर्ग और रूप हैं जो और किसीके लिये नहीं बल्कि अपने लिये तथा उस लोकके लिये ही हैं जो अपने नियमोंके अधीन है और अपने-आपको ही व्यक्त करनेके लिये है, लोकपरम्पराके अन्य अंगोंका आपाततः उसे कोई ध्यान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं रहता। उदाहरणार्थ प्राणमय अथवा सूक्ष्म भौतिक लोकको हम देखें तो हमें उनके अंदर उनकी अनेक कक्षाएँ देख पड़ती हैं जो अपने-आपमें स्थित हैं, जड़ जगत्से उनका कोई सम्बन्ध नहीं, न कोई गति उनकी ऐसी है जो जड़ जगत्पर अपना कोई असर डाले, भौतिक-रूपमें उनका अपना-सा कोई भाव व्यक्त करना तो दूरकी बात है। अधिक-से-अधिक हम यह कह सकते हैं कि प्राणमें, सूक्ष्म भौतिक अथवा अन्य किसी लोकमें किसी वस्तुकी स्थिति एक ऐसी सम्भावना उत्पन्न करती है जिससे उस वस्तु-का अनुरूप भाव स्थूल जगत्में व्यक्त करनेकी गति उत्पन्न होती है। परन्तु यह सम्भावना अचल है, छिपी हुई है, इसे गतिशील बनाने या भौतिक सृष्टि करनेको प्रेरित करनेके लिये और भी कुछ होना आवश्यक होता है। वह यही है कि जड़ जगत्से ही उसके लिये पुकार हो अर्थात् कोई शक्ति या कोई व्यक्ति ऐसा हो जो इस जड़ जगत्में रहते हुए पारभौतिक शक्ति या जगत् या उसके किसी अंशसे सम्बद्ध होकर उसे इस जगत्के जीवनमें ले आनेको उद्यत हो। अथवा प्राणलोक या अन्य लोकमें ही ऐसी कोई स्फूर्ति हो सकती है, उदाहरणार्थ कोई प्राणमय सत्ता ही अपना कार्य पृथ्वीपर विस्तृत करने और वहाँ अपना राज्य स्थापित करने या अपनी उन वृत्तियोंका खेल खेलनेको प्रवृत्त हो सकती है जिन्हें लिये हुई वह अपने लोकमें स्थित है। अथवा ऊपरसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोई ऐसा भार पड़ सकता है, अर्थात् कोई विज्ञानमय या मनोमय शक्ति ही ऊपरसे नीचे प्राणमय लोकमें अपने-आपको निरूपित कर सकती है और वहाँके रूपों या गतियोंका ऐसा विकास कर सकती है जिससे जड़ जगत्में उसकी सृष्टि होनेका साधन-निर्माण हो सके। अथवा ये सभी बातें एक साथ भी हो सकती हैं और उस अवस्थामें ऐसे सृष्टि-कर्मकी सिद्धि अत्यधिक सम्भावित होती है।

दूसरी बात, जो उपर्युक्त कथनसे आप ही सिद्ध होती है, यह है कि इस भूसत्ताके साथ उन अन्तरिक्षादि लोकोंके कार्यके एक मर्यादित अंशमात्रका ही सम्बन्ध है। परन्तु इतनेसे भी बहुतसी सम्भावनाओंकी ही सृष्टि होती है, जिन सबको यह भूर्लोक एक साथ न तो व्यक्त कर सकता है न अपनी तदपेक्षया न्यून नम्य पद्धतियोंमें धारण ही कर सकता है। ये सभी सम्भावनाएँ कार्यमें परिणत नहीं होतीं; कुछ तो सर्वथा विफल होती हैं और अधिक-से-अधिक कोई भावमात्र छोड़ जाती हैं जिसका कुछ भी परिणाम नहीं होता; कुछ विशेष सचेष्ट होती हैं, पर फिर प्रतिहत होकर पराभूत हो जाती हैं, और इस तरह कुछ काल-तक कार्यक्षेत्रमें रहकर भी परिणामतः कुछ भी नहीं रह जातीं। कुछ अर्धांशमात्र व्यक्त होती हैं, और प्रायः यही हुआ करता है, विशेष करके इस कारणसे कि इन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राणमय या अन्य पारभौतिक शक्तियोंको न केवल भौतिक चेतना और जड़भूतका ही सामना करके उन्हें जीतना पड़ता है बल्कि परस्परके अन्तर्गत प्रतिरोधका भी सामना करना और उसे जीतना पड़ता है। कुछ सम्भावनाएँ अवश्य ही ऐसी होती हैं जो अधिक पूर्ण और सफल सर्जनमें समर्थ होती हैं; यहाँतक कि यदि तुम इस सर्जनकी उसके उच्चतर स्तरस्थ मूलके साथ तुलना करो, तो तुम्हें दोनोंमें बहुत कुछ सादृश्य-सा प्रतीत होगा अथवा उस मूलका यह हूबहू नमूना-सा ही देख पड़ेगा या ऐसा प्रतीत होगा कि यह तो उस पारभौतिक वस्तुका ठीक भौतिक प्रतीक ही है। परन्तु यहाँ भी यह सादृश्य केवल बाह्य रूपमें ही है; बात यह है कि किसी वस्तुका कोई दूसरी वस्तु बन जाना, व्यक्त होनेके लिये किसी दूसरे छन्दसे युक्त हो जाना, कुछ-से-कुछ और ही हो जाना है। वह एक नवीन वस्तु ही होती है जो इस तरह व्यक्त होती है और यही तो बात है जो उस सृष्टिकी सार्थकता है। उदाहरणार्थ, पृथ्वीपर विज्ञानमय सृष्टिकी उपयोगिता ही क्या हो सकती है यदि वह वही चीज हो जो चीज विज्ञान-मय लोकमें विज्ञानसृष्टि है ? तत्त्वतः चीज तो वह वही है पर फिर भी कोई नयी चीज है, भगवान्का एक नवीन समरविजयी आत्माविष्करण है उस अवस्थामें जो अवस्था अन्यत्र कहीं भी नहीं है। . . . . .

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लोकसंस्थान-क्रम

इसमें सन्देह नहीं कि सूक्ष्म भौतिक सत्ता भूर्लोकके अति निकट ही है और प्रायः तत्सदृश ही है। तथापि वहाँकी स्थिति कुछ दूसरी है और वह चीज भी कुछ दूसरी ही है। उदाहरणार्थ, सूक्ष्म भौतिक सत्तामें एक प्रकारकी स्वतन्त्रता है, प्रवाहशीलता है, प्रगाढ़ता है, शक्ति है, वर्ण है, विशालता है तथा बहुविध क्रीडा है (वहाँ ऐसी हजारों चीजें हैं जो यहाँ नहीं हैं) जिसकी अभी पृथ्वीपर हमलोगोंके लिये कोई सम्भावना नहीं है। फिर भी यहाँ कोई ऐसी चीज है, भगवान्की कोई ऐसी सम्भूति-शक्ति है जो उस विशालतर स्वतन्त्रतावाले लोकमें नहीं है। यह वही चीज है जिसके कारण यहाँ सृष्टि करना अधिक कठिन होता है पर अन्तमें जिसके कारण सम्पूर्ण आयास सार्थक होता है।

१ सितम्बर १९३०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आरोहण और अवरोहणकी गति

ये जो दो गतियाँ हैं जिनके बाह्यतः दिखायी देनेवाले परस्पर-विरोधसे तुम्हारी बुद्धि विमूढ़ होती है, ये दोनों एक ही चैतन्यके ओरछोर हैं। इन गतियोंको, जो अभी एक-दूसरेसे पृथक् हैं, एक-दूसरेके साथ युक्त होना होगा, यदि प्राणशक्तिको अपने कार्यमें अधिकाधिक सिद्धि और पूर्णता प्राप्त होनी है अथवा वह रूपान्तर प्राप्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होना है जिसकी हमलोग आशा-प्रत्याशा कर रहे हैं।

प्राणमय सत्ता और तदन्तर्गत जीवनीशक्ति इस गतिका एक छोर है; और दूसरे छोरपर परचैतन्यकी वह प्रच्छन्न क्रियाशक्ति है जिसके द्वारा भागवत सत्य कार्य कर सकता है, प्राणसत्ता और उसकी प्राणशक्तिको अपने हाथमें ले सकता है, और उसका इस संसारमें महत्तर कार्यके लिये उपयोग कर सकता है।

प्राणमय सत्ताकी जीवनीशक्ति इस जड़ जगत् तथा भौतिक प्रकृतिमें भागवत शक्तिके सम्पूर्ण कार्यका अनिवार्य यन्त्र है। इसीलिये यह प्राणसत्ता जब दिव्य बनकर भागवत शक्तिका विशुद्ध और सुदृढ़ यन्त्र हो लेती है, तभी भागवत जीवन सम्भव होता है। तभी भौतिक प्रकृतिका अव्यर्थ रूपान्तर होता है या बाह्य जगत्‌में नित्य-मुक्त सिद्ध भागवत स्वभाव-कर्म बनता है। अभी जो हमारे करण-उपकरण हैं उनसे ऐसा कार्य नहीं हो सकता। यही कारण है कि तुम यह अनुभव करते हो कि जितनी जरूरत है उतनी सब शक्ति प्राणकी गतियोंसे मिलती है, तथा इस शक्तिके द्वारा चाहे जो किया जा सकता है और इससे चाहे जो अनुभव प्राप्त किया जा सकता है चाहे वह अच्छा हो, बुरा हो, सामान्य हो या आध्यात्मिक हो,—और इसीसे इस शक्तिके आनेपर तुम्हें भौतिक चेतना और भौतिक तत्त्वमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बल्का सञ्चार अनुभूत होता है। प्राणमें भगवती माताका जो तुम्हें संस्पर्श हुआ और तुम्हें जो वह दिव्य और भव्य प्रतीत हुआ,—वह भी स्वाभाविक है और ठीक है। कारण, प्राणपुरुषको भी हृत्पुरुष तथा सत्ताके अन्य प्रत्येक अंशके समान ही भगवती माताको अनुभव करना और अपने-आपको उनके प्रति सर्वथा समर्पित करना होगा।

पर यह बात सदा ध्यानमें रहे कि मनुष्यके अंदर जो प्राणपुरुष और जो प्राणशक्ति है वे दोनों भागवत ज्योतिसे पृथक् हो गये हैं और इस प्रकार पृथक् हो जानेपर वे जिस किसी भी शक्तिके यन्त्र बन जाते हैं, चाहे जो शक्ति उन्हें अधिकृत कर लेती है चाहे वह शक्ति प्रकाशमयी हो या अन्धकारमयी, दिव्य हो या आसुरी। सामान्यतः यह प्राण-शक्ति मनुष्यके मन और प्राणकी सामान्य तमसाच्छन्न अथवा अर्ध-चेतन गतियोंके ही अर्थात् उसकी सामान्य कल्पनाओं, स्वार्थों, आवेगों और वासनाओंके ही काम आया करती है। पर इस प्राणशक्तिमें यह क्षमता है कि यह इन सामान्य सीमाओंको पार कर और भी बढ़ सकती है और इस प्रकार बढ़नेपर उसको एक ऐसा बढ़ावा, ऐसी प्रगाढ़ता, ऐसी उत्तेजना या अपनी क्षमताओंकी एक ऐसी उत्तुङ्गता प्राप्त हो सकती है कि वह या तो दैवी शक्तियोंका, देवताओंका यन्त्र बन जाय या आसुरी शक्तियोंका, दोमेंसे किसी एकका यन्त्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसे प्रायः वन ही जाना पड़ता है। अथवा प्रकृतिमें यदि कोई केन्द्रस्थ नियन्त्रण न स्थापित हुआ हो तो उसका कार्य इन परस्परविरुद्ध भावोंका अव्यवस्थित मिश्रण-सा हो सकता है, अथवा यह हो सकता है कि कहीं भी उसके पैर न जमें, कभी इधर और कभी उधर झोंका खायँ और कभी देवों और कभी असुरोंका कार्य करें। अतएव तुममें जो प्राणशक्ति कार्य कर रही है उसका प्रचण्ड हो जाना ही पर्याप्त नहीं है; परचैतन्यके साथ उसका सम्बन्ध जोड़ना होगा, उसे सत्संयम-को समर्पित करना होगा, भागवत शासनके अधीन कर देना होगा। प्राणशक्तिके कार्यके प्रति जो कभी-कभी घृणा मालूम होती है अथवा उसके लिये धिक्कार होता है, इसका यही कारण है कि इसमें प्रकाश और संयमकी मात्रा अपर्याप्त है और इसका तमसाच्छन्न आसुरी वृत्तिके साथ गठबन्धन हुआ है। यह भी एक कारण है जिससे यह आवश्यक होता है कि प्राणशक्ति परचैतन्यसे आनेवाली स्फूर्ति और शक्तिकी ओर उद्घाटित हो। प्राणशक्ति अपने बलसे स्वयं कुछ भी नहीं कर सकती, यह ऊबड़-खाबड़ और प्रायः दुःख-दर्दभरे और नाशकारी चक्कर काटा करती है, और तो क्या अधः-पतन भी करा देती है; क्योंकि इसे कोई ठीक रास्ता बतानेवाला नहीं; परचैतन्यकी क्रियाशक्तिके साथ, और इस क्रियाशक्तिके द्वारा किसी बड़े और प्रकाशमय उद्देश्यकी सिद्धिके लिये कार्य करनेवाली भागवत शक्तिके साथ इसे जोड़ देना होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह सम्बन्ध स्थापित करनेके लिये दो गतियोंका होना आवश्यक है। एक गति ऊर्ध्वमुखी है—प्राणशक्ति ऊपरको उठती है परचैतन्यके साथ मिलनेके लिये और वहाँ वह पराशक्तिकी ज्योति और वेगसे भर जाती है। दूसरी निम्न-मुखी है—यहाँ प्राणशक्ति नीरव, शान्त, शुद्ध तथा सामान्य गतियोंसे रिक्त रहती है और ऊर्ध्वशक्तिके अवरोहणकी प्रतीक्षा करती है और ऊपरसे वह क्रियाशक्ति उसमें उतरती है; उसे बदलकर उसके अपने स्वरूपको प्राप्त कराती है और उसकी गतियोंमें ज्ञान और शक्ति भर देती है। इसीसे साधकको कभी तो यह अनुभव होता है कि वह ऊपर किसी अधिक सुखी और महान् चैतन्यमें उठ, किसी विलक्षण प्रकाशमय राज्यमें और विशुद्धतर अनुभूतिमें प्रवेश कर रहा है, और कभी साधकको इसके विपरीत, प्राणमें लौट जाने, वहाँ साधना करने और उसमें सच्चैतन्यको उतार लानेकी आवश्यकता प्रतीत होती है। इन दोनों गतियोंमें वास्तविक विरोध कुछ भी नहीं है; ये दोनों ही एक-दूसरीके कार्यमें साधक और आवश्यक हैं; आरोहणसे भागवत अवतरण शक्य होता है, अवतरणसे वह पूर्णता सिद्ध होती है जिसके लिये आरोहण किया जाता है और इस अवतरणसे वह पूर्णता निश्चय ही सिद्ध हो जाती है।

जब तुम प्राणके साथ उसके निम्न स्तरोंसे ऊपर उठकर उसे हृत्पुरुषके साथ जोड़ देते हो, तब तुम्हारी प्राणसत्तामें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वह विशुद्ध अभीप्सा और भक्ति भर जाती है जो हृत्पुरुषमें स्वभावसे ही होती है, इसके साथ ही यह प्राण हृदयके भावोंमें अपनी प्रचण्ड शक्ति भर देता है, यह इन भावोंको ऐसा क्रियाशील बना देता है कि उससे समूची प्रकृति, बाह्यातिबाह्य भौतिक प्रकृति भी बदल जाय और भागवत चैतन्य पार्थिव शरीरतकमें उतर आवे। जब यह हृत्पुरुषको केवल स्पर्श ही नहीं करता बल्कि ऊर्ध्व मानसमें मिल जाता है, तब वह इस योग्य होता है कि महत्तर प्रकाश और ज्ञानसे संश्लिष्ट हो और उनके आदेशको कार्यान्वित करे। सामान्यतः प्राणका चालन मानवमनसे होता है और उसका शासन उसके अल्पाधिक अज्ञानमय निर्देशोंके द्वारा हुआ करता है, अथवा यह प्राण ही दुर्दान्त होकर मनको अपने अधीन कर लेता है और उसे अपनी लालसाओं, प्रेरणाओं या कामनाओंकी पूर्तिके काममें ले आता है। अथवा इन दोनों ही गतियोंको मिश्रित कर देता है। कारण, सामान्य मानवमन इतना मूढ़ होता है कि इससे अच्छा और कुछ नहीं कर सकता, न कोई प्रमादरहित कर्तव्यनिर्देश ही पा सकता है। परन्तु जब प्राणके साथ उच्चतर मानसका सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, तब वह परप्रकाश और ज्ञानसे, उच्चतर अन्तर्ज्ञान और स्फुरणसे, शुद्धतर विवेक और भागवत सत्य तथा भागवत संकल्पके प्रत्यक्ष निर्देशोंसे परिचालित हो सकता है। प्राणका इस प्रकार हृत्पुरुष तथा परमानसके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निर्देशाधीन होना योगयुक्त चैतन्यके इस बाह्य जीवनपर सशक्तिक प्रयोगके लिये बाहर प्रकट होनेकी प्राथमिक अवस्था है ।

पर दिव्य जीवनके लिये यह भी पर्याप्त नहीं है, उच्चतर मानस चेतनाके साथ सम्बद्ध होना ही यथेष्ट नहीं है, यह तो बीचकी एक अनिवार्य अवस्थाविशेष है । इससे भी उच्चतर तथा अधिक शक्तियुक्त स्तरोंसे भागवत शक्तिका अवतरण होना आवश्यक है । उन शिखरस्थानीय स्तरोंसे, जो अभी नहीं देख पड़ते हैं, इस भागवत शक्तिका जबतक अवतरण नहीं होगा तबतक उच्चतर मानस चैतन्यका विज्ञानमय ज्योति और शक्तिमें रूपान्तरित होना, प्राण और उसकी जीवनीशक्तिका भागवत शक्तिके हाथमें एक विशुद्ध, विशाल, स्थिर, घनीभूत और बलवान् यन्त्रके रूपमें रूपान्तरित होना, शरीरका भी एक दिव्य ज्योति, दिव्य कर्म, बल, सौन्दर्य और आनन्दके रूपमें रूपान्तरित होना असम्भव है । इसीलिये इस योगमें केवल भागवत शक्तिकी ओर आरोहण ही यथेष्ट नहीं है जो कि इस योगमार्गके समान ही अन्य योगमार्गोंमें भी विधेय है, प्रत्युत भागवत-शक्तिका अवतरण होना भी यहाँ इसलिये आवश्यक है कि मन, प्राण और शरीर भी बदल कर दिव्य बनें ।

२८ नवम्बर १९२९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाश्चात्य दर्शन और योग

यूरोपीय दार्शनिक विचार—यहाँतक कि जो मनीषीगण ईश्वर या कैवल्यकी सत्ता और स्वरूपको सिद्ध या निरूपित करनेका प्रयत्न करते हैं उनका विचार भी—अपनी मीमांसा और सिद्धान्तमें बुद्धिके परे नहीं पहुँचता । परन्तु परम सत्यको जाननेकी क्षमता बुद्धिमें नहीं है; बुद्धि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सत्यकी खोजमें केवल इधर-उधर भटकती फिरती है, इस खोजमें सत्यके खण्ड प्रतीकोंकी झलक पा सकती है और इन्हें जोड़-जाड़कर एक चीज बना लेनेकी चेष्टा कर सकती है। वह सत्यतक पहुँच नहीं सकती; केवल कोई ऐसी वस्तु या वस्तुओंको कल्पित कर सकती है जो सत्यको आभासित करनेका प्रयत्न करे। अतएव यूरोपीय तत्त्वमीमांसाका अन्त स्पष्टरूपसे या निहितरूपसे "अज्ञेयवाद" में ही होना अनिवार्य है। यदि बुद्धि सचाईके साथ अपनी हदतक पहुँचे तो वहाँसे लौटकर उसे यही कहना पड़ेगा कि "मैं नहीं जान सकती—कोई ऐसी चीज हो सकती है या अवश्य है या कम-से-कम मुझे ऐसा मालूम होता है, कि जो परम सत्य है; पर उस सत्यकी सत्यताकी कल्पना ही मैं कर सकती हूँ—जान नहीं सकती—वह या तो अज्ञेय है या कम-से-कम मैं उसे नहीं जान सकती।" अथवा यदि उसे अपनेसे परेकी सत्तासे कोई प्रकाश मिला है तो वह यह भी कह सकती है कि—"हाँ, बुद्धिके परे शायद कोई चैतन्य है, क्योंकि ऐसा मालूम होता है कि उसकी झलक या खबर भी मुझे मिलती है। यह यदि उस परम चैतन्यसे सम्बद्ध है अथवा यह स्वयं ही वह परम चैतन्य है और यदि तुम वहाँतक पहुँचनेका कोई मार्ग निकाल सकते हो तो यह परमचैतन्य जाना जा सकता है, अन्यथा नहीं।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अतः केवल बुद्धिके द्वारा परम सत्यकी जो खोज होगी उसका फल या तो इसी प्रकारका कोई अज्ञेयवाद होगा या उससे कोई बौद्धिक सम्प्रदाय बनेगा अथवा मनःकल्पित सिद्धान्त निरूपित होगा। ऐसे हजारों सम्प्रदाय और सिद्धान्त बने हैं, हजारों और भी बन सकते हैं, पर इनमेंसे कोई भी इदमित्थं नहीं हो सकता। मन-बुद्धिके लिये प्रत्येककी अपनी-अपनी उपयुक्तता हो सकती है, विभिन्न सम्प्रदाय और उनके परस्पर-विरोधी सिद्धान्त तत्तदधिकारियोंके लिये समानरूपसे उपयुक्त हो सकते हैं। मानवमनकी कल्पनाके इस सम्पूर्ण प्रयासकी उपयोगिता इतनी ही है कि इससे मानवमनको ऐसा अभ्यास होता है और ऐसी सहायता मिलती है जिससे वह किसी ऐसे अलक्षित परम और चरमकी भावना करता रहे जिसकी ओर फिरना उसे आवश्यक प्रतीत हो। परन्तु बौद्धिक तर्क उसका जो कुछ संकेत करेगा वह अस्पष्ट और संदिग्ध होगा, या उसे उसकी जो प्रतीति होगी वह अँधेरेमें टटोलनेकी-सी होगी अथवा उसका जो प्रयास होगा वह केवल उसके प्रकटनका आंशिक दिग्दर्शन-मात्र और सो भी उसके परस्परविरोधी रूपोंका आभास-मात्र होगा; बौद्धिक तर्कमें यह सामर्थ्य नहीं जो उस सद्वस्तुमें प्रवेश करके उसे जान ले। जबतक हम बुद्धिके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ही क्षेत्रमें पड़े हैं तबतक सिवाय इसके कि जो कुछ हमने सोचा, समझा या ढूँढ़ा है उसका पक्षपातरहित होकर मनन करें, बुद्धिसे अनेक प्रकारकी, सभी सम्भवनीय प्रकारोंकी, उत्प्रेक्षाएँ करें, और यह या वह बौद्धिक विश्वास, मत या सिद्धान्त मन-ही-मन निरूपित करें, और कुछ भी नहीं कर सकते। सत्यका ऐसा पक्षपातरहित अनुसन्धान करनामात्र ही किसी भी व्यापक और ग्रहणशील बुद्धिसे बन सकता है। पर इस प्रकारसे प्राप्त किया हुआ कोई भी निर्णय या सिद्धान्त कल्पनामात्र ही हो सकता है; उसका कोई आध्यात्मिक मूल्य नहीं हो सकता; उससे वह निश्चयात्मक अनुभव या निःसंशय आध्यात्मिक निश्चय नहीं प्राप्त हो सकता जिसकी खोज जीव कर रहा है। यदि बुद्धि ही हमारा सर्वोत्तम यन्त्र हो और पारभौतिक सत्यको प्राप्त करनेका अन्य कोई साधन न हो तब तो युक्तियुक्त और सुविशाल अज्ञेयवाद ही हमारा चरम मनोभाव हो सकता है। इस अवस्थामें व्यक्त पदार्थ तो जाने जा सकते हैं पर परम और मनके परे जो कुछ है वह, चिरकालके लिये अज्ञात ही रहेगा।

परम सत्यको जानना और उसमें प्रवेश करना तो तभी बन सकता है जो बुद्धिके परे कोई महत्तर बोधशक्ति या चैतन्य हो और उसतक हम पहुँच सकते हों। ऐसा कोई महत्तर चैतन्य है या नहीं, इस विषयमें बौद्धिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्प्रेक्षण या नैयायिक युक्तिवाद हमें बहुत दूरतक नहीं ले जा सकता। हमारे लिये तो एक ऐसे रास्तेकी आवश्यकता है जिससे हमें उसका अनुभव हो, हम उसतक पहुँचें, उसमें प्रवेश करें और उसमें रहें। यदि वह रास्ता हमें मिल जाय तो बौद्धिक उत्प्रेक्षा और युक्तिवादका स्थान बहुत गौण हो जायगा और फिर उनके अस्तित्वकी कोई उपयोगिता न रह जायगी। दर्शनशास्त्र, बुद्धिके द्वारा सत्यको प्रकट करनेका कार्य, बना रह सकता है, पर मुख्यतः इस तौरपर कि उसके द्वारा सत्यके इस महत्तर आविष्कारको प्रकट किया जाय और इसका भी उतना ही अंश जितना कि बौद्धिक जगत्में ही पड़े हुए लोगोंको बौद्धिक भाषाके द्वारा समझाया जा सके।

पाश्चात्य दार्शनिक ब्राडले आदिकोंके सम्बन्धमें तुमने जो प्रश्न किया उसका उत्तर इससे हो जाता है। ये लोग बौद्धिक तर्कके द्वारा एक 'विचारातीत सत्ता' की भावनातक पहुँचे हैं अथवा उसके बारेमें ब्राडलेकी भाँति इन लोगोंने अपने निर्णय ऐसे शब्दोंमें प्रकट किये जो 'आर्य' के कुछ वचनोंकी स्मृति दिलाते हैं। यह भावना स्वयं कोई नयी भावना नहीं है; यह वेदों-जितनी प्राचीन है। बुद्धमत, क्रिश्चियन-ज्ञेयवाद और सूफीसम्प्रदायमें यह भावना अन्यान्य रूपों-में पुनरुक्त हुई है। मूलतः यह भावना तर्कसे नहीं आविष्कृत हुई थी बल्कि आन्तरिक आध्यात्मिक साधना-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के द्वारा योगियोंने इसे प्राप्त किया था। ईसाके पूर्व सातवीं और पाँचवीं शताब्दियोंके बीचमें, जब पश्चिमी और पूर्वी दोनों ही देशोंमें ज्ञानको बुद्धिगत करनेका प्रयत्न आरम्भ हुआ, तब यह परम सत्य पूर्वके देशोंमें तो बना रहा, पर पश्चिमी देशोंमें जहाँ बुद्धिको ही सत्यके आविष्कार-का एकमात्र या सर्वश्रेष्ठ साधन मान लिया गया वहाँ यह सत्य अस्त हो चला। तथापि वहाँ भी इसके पुनरागमनका प्रयास बराबर होता रहा; निओ-प्लेटानिष्ट सम्प्रदायवाले इसको लौटा लाये और अब ऐसा मालूम होता है कि, निओ-हेगेलियन सम्प्रदायवाले और अन्य लोग (मेरी धारणाके अनुसार, रूसके आउसपेन्सकी और दो-एक जर्मन दार्शनिक) उसको प्राप्त करनेके रास्तेपर हैं। परन्तु फिर भी इनमें अन्तर है।

प्राच्य देशोंमें विशेषतः भारतवर्षमें, दार्शनिकोंने पाश्चात्य देशोंके समान ही परम सत्यके स्वरूपको बुद्धिके द्वारा निश्चित करनेका प्रयास किया है। परन्तु प्राच्य दार्शनिकों-ने, एक तो, सत्यानुसन्धानमें बुद्धिको सर्वश्रेष्ठ साधन नहीं माना बल्कि उसे गौण स्थान ही दिया है। यहाँ सदा आध्यात्मिक अन्तर्ज्ञान और प्रकाश और आध्यात्मिक अनुभूतिको ही प्रथम स्थान दिया गया है; और तर्कके द्वारा कोई भी निर्णय जो इस परम प्रमाणका विरोधी हो,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपसिद्धान्त ही माना गया है। दूसरी बात यह कि प्रत्येक दर्शन चैतन्यकी परमावस्थाको प्राप्त करनेके व्यावहारिक साधनसे सुसज्जित है, फलस्वरूप विचारका आरम्भ यदि तर्कसे भी होता है तो भी उद्देश्य उसी चैतन्यको प्राप्त करना है जो बौद्धिक तर्कके परे है। प्रत्येक दर्शनके प्रवर्तक (तथा उस दर्शनको परम्परासे चलानेवाले आचार्यगण भी) जैसे दार्शनिक रहे हैं वैसे ही योगी भी रहे हैं। जो केवल दार्शनिक विद्वान् हुए, उनकी विद्वत्ताके लिये उनका आदर तो हुआ, पर वे कभी सत्यके द्रष्टा या आविष्कारक नहीं माने गये। और जिन दर्शनोंमें आध्यात्मिक अनुभूतिका सुपर्याप्त और सुदृढ़ साधन न रहा वे दर्शन लुप्त भी हो गये, भूतकालकी चीज बन गये। कारण, उनमें आध्यात्मिक आविष्कार और उपलब्धिकी शक्ति नहीं थी।

पाश्चात्य देशोंमें ठीक इसके विपरीत हुआ। वहाँ तर्क, बुद्धि, युक्तिवाद उच्चतम साधन माना गया और फिर यही चरम लक्ष्य होकर रहा; तर्क ही दर्शनका अथ और इति है। वहाँ यही मान्यता हो गयी कि तर्क और युक्तिके द्वारा ही सत्यका आविष्कार करना होगा; आध्यात्मिक अनुभव भी तर्ककी कसौटीपर कसकर देख लिया जाय और ठीक उतरनेपर माना जाय—अर्थात् भारतीय मान्यताके सर्वथा विपरीत! यहाँतक कि वे लोग भी जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह समझते हैं कि बौद्धिक विचारके परे पहुँचना होगा और जो किसी मानसातीत 'सत्ता' का होना स्वीकार भी करते हैं, वे भी इसी फेरमें पड़े हुए देख पड़ते हैं कि इस बौद्धिक तर्कको विशुद्ध करके इसीके द्वारा ही उस मानसातीत 'सत्ता' को प्राप्त करना और उसे बौद्धिक परिच्छिन्नता और अज्ञानके स्थानमें लाकर बैठाना होगा। और फिर पाश्चात्य दर्शनमें कोई शक्ति नहीं रह गयी है; क्योंकि यह केवल सिद्धान्तोंकी खोजमें रही, आत्मानुभूतिकी नहीं। प्राचीन यूनानियोंका दर्शन तब भी सशक्तिक था, पर उसका रूप आध्यात्मिक उपलब्धिकी अपेक्षा सदाचार और सौन्दर्यकी ओर ही अधिक रहा। पीछे तो यह भी बदलकर केवल बौद्धिक और वाग्विलासात्मक रह गया; केवल बुद्धिवाद बन गया जिसमें आध्यात्मिक अनुभूति, आध्यात्मिक अन्वेषणके द्वारा सत्यकी प्राप्ति, आध्यात्मिक रूपान्तरका कोई मार्ग या साधन नहीं रहा। यदि यह अन्तर (पूर्व और पश्चिममें) न होता तो तुम्हारे-जैसे साधकको मार्ग जाननेके लिये पूर्वकी ओर मुड़नेकी कोई आवश्यकता न होती। कारण, निरे बौद्धिक क्षेत्रमें पाश्चात्य दार्शनिक उतने ही समर्थ हैं जितना कि कोई भी प्राच्य ज्ञानी महात्मा। यूरोपीय बुद्धिकी अति-तार्किकताने, जिस मार्गको खो दिया है वह तो आध्यात्मिक मार्ग है जो बौद्धिक स्तरोंके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पार पहुँचता है, बाह्याभिमानी पुरुषसे अन्तस्तम आत्माके पास ले जाता है।

ब्राडले और जोचिमके लेखोंसे जो अवतरण तुमने मेरे पास भेजे हैं उनमें भी बुद्धिका ही अपने परेकी वस्तुको विचारसे जानने और उसके बारेमें तर्कसंगत युक्तियुक्त सिद्धान्त स्थापित करनेका प्रयास देखनेमें आता है। इसमें वह शक्ति नहीं है जो उस परिवर्त्तनको कार्यतः सिद्ध करे जिसका कि इसमें वर्णन है। यदि ये लेखक इस 'बुद्धिसे भिन्न अन्य सत्ता' की किसी बौद्धिक उपलब्धिका ही सही, बुद्धिकी भाषामें वर्णन किये होते तो उसे ग्रहण करनेका अधिकारी कोई भी व्यक्ति भाषाके आवरणमेंसे होकर उसे अनुभव कर लेता और उस अनुभवके समीप हो लेता। अथवा यदि ऐसा होता कि बौद्धिक निर्णय कर चुकनेपर वे उसकी आध्यात्मिक अनुभूतिका रास्ता निकालकर या पहलेसे तैयार रास्तेपर चलकर उस अनुभूतिको प्राप्त हुए होते तो उनके विचारोंको पढ़नेसे मनुष्य उस अवस्थान्तरको प्राप्त करनेके योग्य होता। परन्तु इस महत्प्रयासयुक्त चिन्तामें कोई ऐसी बात नहीं है। यहाँ जो कुछ है बुद्धिके अंदरकी ही बात है और उस क्षेत्रमें अवश्य ही प्रशंसनीय है; पर आध्यात्मिक अनुभूतिके लिये इससे कोई शक्ति नहीं मिल सकती।

समग्र सत्यको विचार लिया, इतनेसे ही कोई अज्ञानसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निकलकर ज्ञानको, उस ज्ञानको नहीं प्राप्त होता जिस ज्ञानसे मनुष्य जो कुछ जानता है वही हो जाता है; ऐसा ज्ञान तो चेतनाके परिवर्त्तनसे ही प्राप्त होता है। बाह्य चेतनासे निकलकर प्रत्यक्ष अन्तश्चैतन्यको प्राप्त होना, अहंकार और शरीरसे अवच्छिन्न चैतन्यको अपरिच्छिन्न विशाल करना, आन्तर संकल्प, और अभीप्सा और प्रकाशकी ओर ऐसा उद्घाटन कि वह अवच्छिन्न चैतन्य ऊपर उठकर मन-बुद्धिको पार कर जाय, इस प्रकारसे चैतन्यको ऊँचा चढ़ाना, आत्मदान और आत्मसमर्पणके द्वारा विज्ञानमयी भागवती शक्तिका अवतरण कराना और तत्फलस्वरूप मन-बुद्धि, प्राण और शरीरको भागवत स्वरूप प्राप्त कराना—यही है वह अखण्ड मार्ग जो विज्ञानमय सत्य* को प्राप्त कराता है। इसीको हमलोग यहाँ सत्य कहते हैं और यही हमारे योगका लक्ष्य है।

१५ जून १९३०

---

* मैंने यह कहा है कि विज्ञानकी भावना प्राचीन कालसे ही वर्त्तमान रही है। भारतवर्षमें तथा अन्यान्य देशोंमें भी उसतक पहुँचनेका प्रयास पहले हुआ था; पर जो बात छूट गयी थी वह थी उस मार्गकी बात जिस मार्गसे वह विज्ञान इस जीवनके साथ अखण्डतया सम्बद्ध हो जाता और समस्त प्रकृतिको यहाँतक कि जड़ प्रकृतिको भी, दिव्य बनानेके लिये नीचे उतारा जा सकता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अज्ञेयवादियों और वेदान्तियोंका अज्ञेय

आत्मतत्त्वकी ओर देखनेकी जो दृष्टि होनी चाहिये उससे ठीक विपरीत दृष्टिसे जो कोई इस तत्त्वकी ओर देखता है अर्थात् पिछले दिनोंके यूरोपीय अज्ञेयवादियों-की दृष्टिसे देखता है, मैं नहीं समझता कि उसे कुछ भी कहकर इस विषयमें कोई विश्वास दिलाया जा सकता हो। योगानुगम्य अनुभवकी उपयोगिता अनुभवी व्यक्तिके लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आन्तरिक और केवल वैयक्तिकरूपसे चाहे कुछ भी हो, पर उनके सिवाय इसकी क्या उपयोगिता है, इस विषयमें उपर्युक्त अज्ञेयवादियोंकी यह शंका होती है, कि ऐसे अनुभवका लक्ष्य सायंसके सिद्धान्तानुकूल (Scientific) सत्य नहीं होता और इससे परम सत्यकी प्राप्ति हो सकती है ऐसा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ऐसे अनुभव अनुभवीके व्यक्तित्वसे रँगे हुए होते हैं। इसपर यह पूछा जा सकता है कि क्या सायंस स्वयं भी किसी परम सत्यको प्राप्त हो चुका है ? नहीं, बल्कि इसके विपरीत यही देखनेमें आता है कि ज्यों-ज्यों सायंस आगे बढ़ता जाता है त्यों-त्यों इस भौतिक क्षेत्रमें भी परम सत्य पीछे ही हटता जाता है। सायंस तो यह मानकर चला है कि परम सत्य भौतिक और बाह्य विषय-भूत ही हो सकता है—और यह बाह्य विषयगत परम तत्त्व (अथवा परम न सही उससे कुछ उतरकर ही सही) समस्त आन्तर विषयोंकी उलझन सुलझा देगा। योगकी मान्यता इसके बिलकुल विपरीत है, वह यह है कि परम सत्य आध्यात्मिक है और आभ्यन्तर है, वही परम ज्योति है और उसीमें हमें बाह्य जगत् देखना होगा। ये दोनों उत्तर-दक्षिण ध्रुवकी भाँति एक-दूसरेसे सर्वथा विरुद्ध दिशामें हैं और बीचमें इतनी बड़ी खाड़ी है कि जिसका कोई वारा-पार नहीं।

योग अवश्य ही इस हदतक सायंसकी पद्धतिसे ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चलता है कि आन्तरिक अनुभवसे ही इसका उपक्रम होता है और इसके सब तथ्योंका आधार अनुभव ही है; मन-बुद्धिमें होनेवाले स्फुरण केवल प्रथम सोपान हैं, वे आत्मानुभव नहीं समझे जाते—उन्हें स्वानुभवमें परिणत करना होता है और स्वानुभवसे सिद्ध करना होता है। अनुभवकी सार्थकता-पर भौतिक मन-बुद्धिको सन्देह हुआ करता है। कारण, यह अंदरकी चीज है बाह्य विषय नहीं। परन्तु अंदर-बाहरका जो यह भेद है इस भेदमें भी क्या रखा है? सभी ज्ञान और अनुभव मूलतः क्या आन्तरिक ही नहीं होते? इन्द्रिय-ग्राह्य बाह्य विषय मनुष्योंद्वारा प्रायः एक ही रीतिसे जो गृहीत होते हैं इसका कारण यह है कि मन-बुद्धि और इन्द्रियोंकी वैसी ही रचना है; इनको रचना यदि दूसरे प्रकारकी हो तो भौतिक जगत्का दूसरे ही प्रकारका विवरण प्राप्त होगा, यह बात स्वयं सायंससे स्पष्टतया सिद्ध है। परन्तु तुम्हारे मित्रकी शंका तो यह है कि योगका अनुभव व्यक्ति-गत होता है, अनुभवीके व्यक्तित्वसे रँगा हुआ होता है। यह बात विशिष्ट मनोभूमिकाओंमें प्राप्त होनेवाले अनुभवके खास रूपके विषयमें एक हदतक सच हो सकती है; पर यहाँ भी यह भेद केवल ऊपरी ही होता है। सच्ची बात यह है कि योगानुभवके जो मार्ग हैं वे सर्वत्र समान ही हैं। अवश्य ही मार्ग एक नहीं है, अनेक हैं; क्योंकि जिस अनन्तकी यहाँ खोज है उसके अनेक रूप हैं, जिनके अनेक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मार्ग भी हैं और होने ही चाहिये; परन्तु फिर भी मुख्य-मुख्य मार्ग सर्वत्र एक-से ही हैं और इसलिये एक दूसरेसे दूर देशों और कालोंमें तथा एक दूसरेसे सर्वथा पृथक् सम्प्रदायोंमें भी एक-से ही अन्तर्ज्ञान, एक-से ही अनुभव और एक-से ही दृश्य गोचर होते हैं। मध्यकालीन यूरोपीय भक्त अथवा योगीके अनुभव ठीक-ठीक वैसे ही हैं जैसे कि मध्यकालीन भारतीय भक्तों या योगियोंके अनुभव हैं; उन अनुभवोंके नाम, रूप और साम्प्रदायिक रंग चाहे कितने भी भिन्न हों—फिर भी यह बात तो स्पष्ट ही है कि ये लोग न तो आपसमें कोई विचारविनिमय कर रहे थे, न इन्हें एक दूसरेके अनुभवों या प्राप्त फलोंका ही परिचय था जैसा कि इस समय सायंसविदोंको है—जैसा कि न्यूयार्कसे योकोहामा-तकके सभी सायंसवित् एक दूसरेके अनुभवोंको जानते हैं। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि योगमें कोई बात है जो समान है, सार्वत्रिक है और विश्वसनीयरूपसे सत्य है—मन-बुद्धिकी भाषाके भेदसे फिर वर्णनशैलीमें चाहे जितना परस्पर-भेद हो।

परम सत्यके विषयमें मैं यह समझता हूँ कि क्या तो उन्नीसवीं सदीके पाश्चात्य अज्ञेयवादी और क्या भारतीय वेदान्ती दोनों ही सम्भवतः इस बातमें एक दूसरेसे सहमत होंगे कि वह परम सत्य छिपा हुआ है पर है तो सही। दोनों ही उसे अज्ञेय कहकर वर्णन करते हैं; अन्तर केवल इतना ही है कि वेदान्ती उसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बुद्धिके लिये अगोचर और वाणीके लिये अनिर्देश्य बतलाकर भी यह कहते हैं कि मन-बुद्धिके परे कोई गभीरतर या उच्चतर वस्तु है जिसके द्वारा उसकी प्राप्ति हो सकती है और मन-बुद्धि भी उसे प्रतिबिम्बित कर सकती है तथा मन-बुद्धिको प्राप्त होनेवाले उसके बाह्याभ्यन्तर अनुभवके सहस्रों रूप वाणी भी प्रकट कर सकती है। उन्नीसवीं सदीके अज्ञेयवादी, मैं समझता हूँ कि, इस वैशिष्ट्यको अस्वीकार कर देंगे और इस तरह यह कहेंगे कि अज्ञेयकी सत्ता सन्दिग्ध है और यदि उसकी सत्ता हो भी तो वह केवल अज्ञेय ही है।

१० अक्टूबर १९३२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संशय और भगवान्

क्या अध्यात्मचेता और क्या जड़वादी, सारा संसार ही इस बातको समानरूपसे जानता है कि प्रकृतिकी इस अविद्या या अज्ञानमें उत्पन्न हुए या प्राकृत रीतिसे विकसित हुए प्राणीके लिये यह जगत् न तो फूलोंकी सेज है और न आनन्दमय आलोकसे आलोकित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोई मार्ग ही। यह बड़ी कठिन यात्रा है, संग्राम है, संघर्ष है, प्रायः कष्टप्रद और द्वन्द्वमय विकास है, तमस् और झूठ और दुःखसे घिरा हुआ जीवन है। इसके अपने मानसिक, प्राणिक और शारीरिक सुखोपभोग हैं, परन्तु ये केवल, एक अनित्य रसास्वादनमात्र कराते हैं—जिसे भी यह प्राण छोड़ना नहीं चाहता—और इन सुखोपभोगोंका अन्त अरुचि, क्लान्ति और भ्रमभञ्जनमें ही होता है। तब फिर क्या ? यह कहना सहज है कि भगवान् हैं ही नहीं, पर इससे लाभ क्या ? यह तो जहाँ-के-तहाँ ही खाली हाथ रह जाना और भविष्यके विषयमें अन्धकारमें पड़े रहना है। कोई रसेल आकर यह नहीं बतावेगा, कोई जड़वादी यह नहीं सुझावेगा कि आखिर तुम कहाँ जा रहे हो या यही कि तुम्हें कहाँ जाना चाहिये। भगवान् अपने-आपको इस प्रकार नहीं प्रकट करते कि बाह्य संसारी घटनाओंमें कोई उन्हें पहचान ले—यह बात तो ऐसी ही है। ये सब कार्य किसी स्थानमें बैठे हुए किसी दायित्वहीन स्वेच्छाचारी पुरुषके कार्य नहीं हैं, प्रत्युत सत्स्वरूपके विशिष्ट स्वभावानुसार दैवी शक्तियोंके क्रमबद्ध कार्यसे उद्भूत होनेवाली घटनाएँ हैं; अथवा यह कहिये कि यह जो कुछ है, सत्स्वरूपका कोई संकल्प है, कोई उपपाद्य विषय है जिसे पूर्ण करने या जिसका उपपादन करनेके कार्यमें हम सभी वास्तवमें स्वेच्छासे सम्मिलित और सहयोगी हुए हैं। कार्य दुष्कर है, संशयग्रस्त है, भविष्यमें क्या सम-विषम दशा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होगी—कोई लख नहीं सकता ? तब तो दोमेंसे एक बात हो सकती है—या तो यह हो सकता है कि बौद्धोंकी या मायावादियोंकी रीतिसे इस जगत्से निकलकर निर्वाण हो जाय, या यह हो सकता है कि अपने अंदर प्रवेश करके वहाँ भगवान्को प्राप्त किया जाय, क्योंकि बाह्य जगत्में भगवान् कहीं ढूँढ़े नहीं मिलते । जिन लोगोंने ऐसा प्रयत्न किया है, और ये कुछ इनेगिने ही नहीं हैं, सैकड़ों और सहस्रोंकी संख्यामें हुए हैं, वे सदासे ही साक्ष्य दे रहे हैं कि भगवान् हैं और यही कारण है कि उन्हें प्राप्त करानेवाला योग भी है । यह योग दीर्घकालसाध्य है ? भगवान् मायाके बहुत घने परदेके अंदर छिपे हुए हैं और पुकार करते ही तुरंत या आरम्भिक अवस्थामें हमारी पुकारका उत्तर नहीं देते ? अथवा केवल एक झलक-सी दिखा देते हैं जो ठहरती नहीं —आती और निकल जाती है और भगवान् फिर छिप जाते हैं और प्रतीक्षा करते हैं कि हमलोग तैयार हों ? परन्तु भगवान्का यदि कुछ मूल्य है तो उनके पीछे चलनेमें कुछ कष्ट उठाना, कुछ समय देना और कुछ श्रम करना क्या सार्थक नहीं होगा, हमें क्या यही उचित है कि हम किसी प्रकारका कोई अभ्यास न करें, कोई उत्सर्ग न करें, कोई दुःख न उठावें, कोई कष्ट न करें और फिर भी यह जिद पकड़े रहें कि भगवान् हमें मिलें ? ऐसी जिद तो निश्चय ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नादानी है। यह निश्चय है कि भगवान्‌को पानेके लिये हमें अंदर जाना होगा, परदेके अंदर पैठकर देखना होगा; तभी हम उन्हें बाहर भी देख सकेंगे और तब बुद्धिको भगवत्सत्ता जँचेगी क्या, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभवसे उसे उस सत्ताको स्वीकार ही कर लेना पड़ेगा—वैसे ही जैसे कोई मनुष्य किसी बातको न मानता हो पर उसे प्रत्यक्ष देख लेनेपर मान लेता है और फिर उस बातको न मानना उसके लिये सम्भव ही नहीं होता। पर इसके लिये साधन-पथ स्वीकार करना होगा, संकल्पमें दृढ़ता रखनी होगी और अभ्यासमें धैर्य रखना होगा।

१० सितम्बर १९३३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मिथ्या मन्द प्रभाकी उपत्यका

तुम्हारे मित्रके पत्रमें सीधे सत्यसे ही निकली हुई धारा बहती देख पड़ती है। ऐसी धारा जहाँ-तहाँ या जब-तब नहीं देख पड़ती। यहाँ वह बुद्धि दिखायी दे रही है जो केवल सोचती नहीं, देखती है—देखती है केवल पदार्थोंके बाह्यरूपको ही नहीं बल्कि उनके अन्तराशयको भी। वाक्-शक्तिकी एक परावस्था होती है जिसे तन्त्रोंमें 'पश्यन्ती वाक्' कहा गया है; यहाँ है 'पश्यन्ती बुद्धि' अर्थात् वह बुद्धि जो देखती है। ऐसी बुद्धि उपजनेका कारण यह हो सकता है कि अन्तःस्थित द्रष्टा विचारकी कक्षा पार करके अनुभवके क्षेत्रमें पहुँचा हो, पर ऐसे भी बहुत-से लोग होते हैं जिन्हें अनुभवका बड़ा भारी खजाना मिलनेपर भी उस अनुभवके द्वारा विचारदृष्टिको इतनी विमलता नहीं मिलती कि उस अनुभवको स्पष्ट व्यक्त कर सके। पुरुष अनुभव करता है,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर बुद्धि अपनी ही चालसे चलती हुई उसके विकृत और अपूर्ण, मलिन और कुछ-के-कुछ रूपान्तर किया करती है। पर यहाँ इस प्रकृतिमें यथार्थ दृष्टिकी सामर्थ्य पहलेसे ही प्रस्तुत रही होगी, ऐसा प्रतीत होता है।

आधुनिक बुद्धिवाद जिसे सत्यका प्रकाश मान बैठा है उस अचिर मन्दप्रभ तुषार-बिन्दु-जालसे इतनी जल्दी और इतनी असन्दिग्ध रीतिसे छुटकारा पा जाना बहुत बड़ी बात है। आधुनिकोंकी बुद्धि (और उसके साथ हमलोग भी) मिथ्या मन्द प्रभाकी उपत्यकामें इतने दीर्घकालसे बराबर भटकती ही रही है कि किसीके लिये विशुद्ध दर्शनके सूर्यप्रकाशके द्वारा उस तुषार-बिन्दु-जालको इतना शीघ्र और इतनी पूर्णताके साथ, जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, नष्ट करना कोई आसान बात नहीं है। आधुनिकोंका मनुष्यको ही ज्ञान और अनुभवका पैमाना मानना (humanism) और मनुष्यजातिके उत्कर्षका एकमात्र साधन मनुष्यजातिको ही समझ लेना (humanitarianism) अथवा उनकी मन-बुद्धिको ही जगत्‌की असलियत करार देनेकी (sentimental idealism) निस्सार भावुकता और उनका यह असार बुद्धिवाद कि विशुद्ध तर्क ही ज्ञानका एकमात्र साधन है (intellectualism) और उनका समन्वय-बुद्धिसे विभिन्न मतोंसे अपनी प्रकृति और रुचिके अनुकूल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सारतत्त्व ग्रहण करनेको ही परम सिद्धान्त मान लेना (synthetic eclectism) तथा ऐसी ही उनकी अन्य बातोंके सम्बन्धमें यहाँ जो कुछ कहा गया है वह लेखकके प्रशस्य निर्मल मानसका द्योतक है और ठीक अपने लक्ष्यको वेधनेवाला है। इन सब साधनोंसे मनुष्यजाति अपने जीवन-मार्गोंका वह आमूल परिवर्तन नहीं करा सकती जिसके होनेकी आवश्यकता फिर भी अधिकाधिक प्रतीत हो रही है। यह सुधार तो तभी हो सकता है जब हम अन्तःस्थित सत्‌की दृढ़ भित्तिको प्राप्त करेंगे—इसे प्राप्त करना केवल भावनाओं और मानसिक कल्पनाओंसे नहीं बनता, इसके लिये चेतनाका ही परिवर्तन होना जरूरी है, आन्तरिक और आध्यात्मिक दीक्षाका होना जरूरी है। परन्तु आजकल सत्यकी यह ऐसी बात है जैसी नक्कारखानेमें तूतीकी आवाज़ हो।

बाह्य जगत्‌के गुण-कर्मोंका क्षेत्र और भागवत सत्यका धाम, इन दोनोंमें जो भेद है, जो भेद यहाँ बड़ी सूक्ष्मदर्शिताके साथ निरूपित हुआ है, वह स्वरूपज्ञानविषयक आद्य वचनोंकी श्रेणीमें आ बैठता है। इन पृष्ठोंमें इसका जो विलक्षण निरूपण हुआ है वह केवल बौद्धिक चातुर्य ही नहीं है; प्रत्युत उस पार पहुँचकर वहाँसे आन्तरिक आत्मानुभवकी भूमिकासे इस बाह्य जगत्‌की ओर देखकर इसके वास्तविक स्वरूपका जो सुस्पष्ट निश्चय किया जा सकता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसीका यह याथातथ्य निर्दोष वर्णन है। जितना ही कोई अन्तस्तलमें प्रवेश करता या ऊपरकी ओर उठता है उतना ही इन बाह्य विषयोंको देखनेकी उसकी दृष्टिमें परिवर्तन होता है और सायंसद्वारा सुव्यवस्थित होनेवाला बाह्य ज्ञान अपने वास्तविक और अति मर्यादित स्वरूपको प्राप्त होता है। सायंस प्रायः सभी बौद्धिक और बाह्य ज्ञानके समान केवल गुण-कर्म ही बोधित कराता है। यही नहीं, इसके साथ मैं इतना और जोड़ देना चाहता हूँ कि यह गुण-कर्मोंका भी पूर्ण तथ्य नहीं बोधित करा सकता; क्योंकि इसके द्वारा कुछ प्रमेयमात्र प्राप्त होते हैं पर जो अति महत्त्वपूर्ण अप्रमेय हैं उनसे वञ्चित ही रह जाना पड़ता है; फिर इन गुण-कर्मोंके विषयमें यह भी तो यहाँ कुछ पता नहीं चलता कि कैसे, किस तरहसे, क्या होता है, केवल इतना ही मालूम होता है कि इस बाह्य प्रकृतिकी अमुक-अमुक अवस्थामें अमुक-अमुक बातें हुआ करती हैं। सायंसके इन सब विजयों और चमत्कारोंके होते हुए भी, इन सबका रहस्योद्घाटन करनेवाला मूलतत्त्व, इनकी कारणमीमांसा, इनका सम्पूर्ण तथ्य अन्धकारमें ही छिपा रह जाता है, वह पहले जितना रहस्यमय था उतना ही क्या बल्कि उससे भी अधिक रहस्यमय हुआ जाता है। सायंसने इस समृद्ध विशाल और वैचित्र्यमय पार्थिव जगत्के ही नहीं बल्कि प्राण और चेतना और मन-बुद्धि तथा उनके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुण-कर्मोंके विषयमें जो यह सिद्धान्त ठाना है कि यह सब जड़ परमाणु-पुञ्जोंका विकास है और ये सब परमाणु एक-से ही हैं, केवल उनकी संख्या और सजावटमें भेद है, यह सिद्धान्त सर्वथा युक्तिविरुद्ध इन्द्रजालमात्र है और गुह्यातिगुह्य आध्यात्मिक भावनामें आनेवाले किसी भी चमत्कारकी अपेक्षा अधिक चकरानेवाला है। सायंसने अन्तमें हम लोगोंको एक सुसम्पन्न असत्याभासमें, एक गढ़ी-गढ़ायी आकस्मिक घटनामें, काकतालीयन्यायसे होनेवाली किसी अनहोनीमें लाकर छोड़ा है—एक नवीन 'अघटन-घटना पटीयसी' मायाका नज़ारा दिखाया है; यह पार्थिव माया है जो असम्भवको सम्भव कर दिखानेमें अति पटु है, यह एक ऐसा चमत्कार है जो न्यायतः हो ही नहीं सकता, पर फिर भी जो, किसी तरहसे हो, है ही, और ऐसी अभेद्य दृढ़तासे व्यवस्थित है कि ननु नचकी कोई गुञ्जायश नहीं, और फिर है युक्तिसे असंगत और अनवगम्य ही! ऐसा क्यों है,—इसका स्पष्ट कारण यही है कि सायंसने किसी असली चीजको ही भुला दिया है; जो कुछ घटित है उसे तो इसने देखा और जाँचा है और एक तरहसे यह भी देखा और जाँचा है कि यह कैसे घटित हुआ, पर इसने किसी ऐसी वस्तुसे अपनी आँखें फेर ली हैं जिस वस्तुके होनेसे यह असम्भव सम्भव हुआ, जो वहाँ है ही इसलिये कि अपने-आपको प्रकट करे। इन बाह्य पदार्थोंमें कुछ भी सार वस्तु नहीं है यदि अन्तर्निहित भागवत सत्य ही हमारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आँखोंकी ओट हो; क्योंकि उस हालतमें यह जो बाह्य आकार है, जो स्वानुरूप बना लेने और उपयोगमें ले आनेकी एक चीज़ है, इसके विशाल बाह्य पटलमें ही मनुष्य अटका रह जाता है। सायंस जादूगरके जादूका विश्लेषण करनेकी चेष्टा कर रहा है, परन्तु इसका मूल उद्गम-स्थान कौन है, इसका वास्तविक आशय क्या है और इस लीलाके रासमण्डल कहाँ हैं, यह जानना तो तब आरम्भ होगा जब तुम जादूगरके अपने चिद्रूपमें प्रवेश करोगे। "आरम्भ" मैं इसलिये कहता हूँ कि भागवत सत्य इतना सीधा-साधा सुबोध नहीं है कि प्रथम स्पर्शमें ही तुम उसे पूर्णतया जान लो या किसी एक सूत्रमें बाँध लो; भागवत सत्य अनन्त है और यह वह अनन्त ज्ञान उद्घाटित करता है जिसके सामने सारा सायंस मिलकर भी कुछ नहीं-सा ही देख पड़ता है। परन्तु केवल आरम्भ होनेपर भी पदार्थोंके पीछे जो सत्तत्त्व, सनातन तत्त्व है वह तो मिलता है और उसके प्रकाशमें सब पदार्थ अन्तस्तलसहित प्रकाशित—प्रकट होते हैं और उनका अत्यधिक अन्तःपरिचय प्राप्त होता है।

सदिच्छासे सत्यकी खोज करनेवाले कुछ वैज्ञानिक (साइंटिस्ट) बाह्य पदार्थोंके अन्तर्निहित आध्यात्मिक तथ्यके बाह्य या बाह्यातिबाह्य आकारपर अपनी अन्वेषण-बुद्धिका जो बेकार चञ्चुप्रहार किया करते हैं उन्हें मैं क्या समझता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हूँ, सो एक बार पहले तुमसे कही चुका हूँ, इसलिये उसका यहाँ विस्तार करनेकी कोई आवश्यकता नहीं। इससे अधिक विचारणीय विषय तो उस महत्तर संकटका है जो आध्यात्मिक और पारभौतिक अनुभवकी सत्यताके शत्रु संशयवादियोंद्वारा होनेवाले नवीन आक्रमणके रूपसे आता हुआ-सा परिलक्षित हो रहा है, ये जिस युद्धकौशलसे अपना संहारकर्म जारी कर रहे हैं वह युद्धकौशल भी नया है और वह यह है कि ये इस आध्यात्मिक और पारभौतिक अनुभवकी सत्यताको अपनी ही बुद्धिके अनुरूप बनाकर मान लेते हैं और उसी प्रकार उसकी व्याख्या कर उसे खतम करते हैं। यह भयका स्थल है, ऐसा माननेका प्रबल कारण तो हो सकता है; पर मुझे यह आशंका है कि यदि ये बातें कहीं अच्छी तरहसे जाँची गयीं तो मनुष्यजातिकी बुद्धि इस विमूढ़ पल्लवग्राही बहिर्बुद्धिकी ऐसी व्याख्याओंसे जिनसे कुछ भी व्याख्यात ही नहीं होता, अधिक कालतक संतुष्ट न रह सकेगी। एक ओर यदि धर्मके रक्षक आध्यात्मिक अनुभूतिको केवल अन्तःकरणका ही भान बताकर जैसे एक ऐसे कमज़ोर स्थानपर खड़े होते हैं कि जो सुगमतासे जीता जा सकता है, तो दूसरी ओर वैसे ही यह देख पड़ता है कि आध्यात्मिकताके ये प्रतिपक्षी भी, आध्यात्मिक और पारभौतिक अनुभूतिको मानकर उसकी जाँच करनेपर जो किसी प्रकारसे भी राजी हो जाते हैं, सो बेजाने जड़वादके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुर्गका द्वार ही प्रतिपक्षके लिये खोल देते हैं। भौतिक क्षेत्रमें अपने चतुर्दिक् खाई खोदकर बने रहना, पारभौतिक वस्तुओंको मानने या केवल जाँचनेसे भी इनकार कर देना ही उनका मज़बूत गढ़ था; पर जहाँ यह छूटा, तहाँ फिर मानवमन जो ऐसी वस्तु चाहता है कि जो इससे कम अभावात्मक और इससे अधिक भावात्मक और सहायक हो, वह इन लोगोंके अपसिद्धान्तोंके मृत शरीरों और उनकी ख्यातिको अख्यात करनेवाली व्याख्याओं तथा विचित्र बौद्धिक उत्प्रेक्षाओंके टूटे-फूटे खण्डहरोंको लाँघकर अपनी वांछित वस्तुके समीप पहुँच ही जायगा। तब एक दूसरा भय उत्पन्न हो सकता है, इस बातका नहीं कि सत्यसे ही लोगोंकी आँखें सदाके लिये फिर जायँगी, बल्कि इस बातका कि कहीं फिर वही पुरानी भूल पुराने ढंगसे या किसी नये रूपमें फिरसे न होने लगे—अर्थात् एक ओर अन्ध आततायी सुधारविरोधी साम्प्रदायिक धर्माभिमान बढ़े और दूसरी ओर प्राणगत वासनाओंसे युक्त गुह्यविदों और नामधारी अध्यात्मविदोंके प्रमाद लोगोंको अपने गर्त्तों और दलदलोंमें गिराने और फँसाने लगें! इन्हीं प्रमादोंकी बदौलत ही तो भूतकाल और भूतकालीन धारणाओंपर जड़वादियोंको आक्रमण करनेका सारा वास्तविक बल प्राप्त हुआ था। पर ये सब भयजनित भूत हैं जो उपान्त भूमिपर अर्थात् पार्थिव अन्धकार और पूर्ण ज्योतिके मध्यप्रदेशमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सदा ही मिला करते हैं। इन सब बातोंके होते हुए भी, अन्तमें, इस पार्थिव चेतनामें भी, विजय होगी उस परा-ज्योतिकी ही, यही एक बात सर्वोपरि सुनिश्चित है।

कला, काव्य, सङ्गीत योग नहीं हैं, स्वतः अध्यात्म नहीं हैं, वैसे ही जैसे दर्शनशास्त्र या सायंस भी अध्यात्म नहीं हैं। आधुनिकोंकी बुद्धिमें, यहाँ भी, एक दूसरे प्रकारकी विलक्षण अक्षमता—यह असमर्थता देखनेमें आती है कि मन-बुद्धि और आत्मामें कोई भेद इसे नहीं देख पड़ता, इसके देखते बौद्धिक, नैतिक और सौन्दर्य-विषयक आदर्श, सब अध्यात्म ही है और इन विषयोंमें निम्न कोटिकी उन्नति भी उसकी दृष्टिमें आध्यात्मिक उन्नतिका ही लक्षण है। यह बिल्कुल सच्ची बात है कि दार्शनिक अथवा कविकी मानसिक अन्तःस्फूर्तियाँ अधिकांशमें एक प्रत्यक्ष आध्यात्मिक अनुभूतिकी अपेक्षासे बहुत ही छोटी चीज हैं; ये दूरस्थ प्रभाके क्षणिक कम्पनमात्र हैं; अति मन्द प्रतिबिम्ब हैं, प्रत्यक्ष प्रभाके केन्द्रस्थानसे आनेवाली किरणें नहीं। फिर यह बात भी उतनी ही सच्ची है, किसी कदर कम नहीं, कि शिखरपर खड़े होकर देखा जाय तो मन-बुद्धिकी इस ऊँची ऊँचाई और बाह्य जीवनकी नीची चढ़ाई इन दोनोंमें कोई विशेष अन्तर नहीं है। शिखरपरसे देखनेवाली इस दृष्टिमें लीलाकी सभी शक्तियाँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समान हैं, सभी भगवान्‌के ही छद्मवेश हैं। पर इसके साथ यह बात और कहनी है कि इन सबको भगवत्-प्राप्तिका प्रथम साधन बनाया जा सकता है। आत्मविषयक दार्शनिक वर्णन केवल एक मानसिक निरूपण है, ज्ञान नहीं, अनुभूति नहीं; फिर भी कभी-कभी भगवान् इसे अपना स्पर्श करानेका एक साधन बना लेते हैं, और तब आश्चर्यजनक रीतिसे कोई-सा मानस-प्राकार टूट जाता है, उसके टूटनेसे कुछ देख पड़ता है, अन्तरके किसी भागमें कोई गम्भीर परिवर्तन हुआ अनुभूत होता है, प्रकृतिके क्षेत्रमें कोई ऐसी वस्तु प्रवेश करती है जो स्थिर है, सम है, अनिर्वचनीय है। कोई किसी शैलशिखरपर खड़ा होता है और वहाँसे प्रकृतिमें किसी विशाल, व्यापक, नामरहित बृहत्‌की झलक पाता या अन्तःकरणमें अनुभूत करता है; तब सहसा वहाँ कोई स्पर्श होता है, कोई प्रत्यक्ष दर्शन होता है; कोई बाढ़-सी उमड़ आती है, और मनोमय पुरुष अध्यात्ममें विलीन हो जाता है, इस तरह मनुष्य अनन्तके प्रथम प्रभावके प्रवाहमें आ जाता है। अथवा कोई किसी पवित्र नदीके किनारे कालीमाईके किसी मन्दिरके सामने खड़ा है तो वह, वहाँ क्या देखता है?— देखता है कोई मूर्ति, स्थापत्य-कलाका कोई सुन्दर नमूना, पर फिर क्षणमात्रमें न जाने कहाँसे कैसे अनपेक्षित-रूपसे वहाँ कोई सत्ता, कोई शक्ति, कोई मुखाकृति भासने लगती है जो तुम्हारे मुखकी ओर दृष्टि गड़ाकर देखती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह क्या हुआ ?—तुम्हारी अन्तर्दृष्टिने जगदम्बाको देखा। कला, कविता, सङ्गीतके द्वारा इसी प्रकारके स्पर्श उस कलाकार, कवि या गायकको अथवा उसको प्राप्त हो सकते हैं जो उस शब्दके आघातको अनुभव करता है, उस मूर्तिके गूढ़ आशयतक पहुँचता है, उस स्वरसे रहस्यका कोई सन्देश पाता है जिसमें कुछ ऐसा रहस्य भरा रहता है जो कदाचित् उसके निर्माणकर्ताका भी जाना-बूझा आशय न रहा हो। लीलामें सभी पदार्थ ऐसे झरोखे बन सकते हैं जिनमेंसे कोई भी चाहे तो उस गुप्त सत्यकी झाँकी कर ले। फिर भी जबतक कोई झरोखोंमेंसे झाँकनेसे सन्तुष्ट है तबतक उसको मिलनेवाला लाभ केवल प्रथमारम्भमात्र है; किसी दिन उसे परिव्राजकका दण्ड धारणकर उस यात्राके लिये चल देना होगा जहाँ सत्य सदा व्यक्त और विद्यमान है। प्रतिच्छाया-जैसे मन्दप्रभ प्रतिबिम्बोंमें ही अटके रहना, आध्यात्मिक हिसाबसे, और भी कम सन्तोषजनक है; ये जिस ज्योतिर्बिम्बके प्रतिबिम्ब हैं उस ज्योतिका अनुसन्धान फिर होने ही लगता है। परन्तु यह सत्य और यह ज्योति जब कि हमारे अंदर भी उतनी ही हैं जितनी कि इस मृत्युसंसार-सागरके ऊपर किसी ऊर्ध्वलोकमें, तब हम इस जीवनके अनेक रूपों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और क्रियाओंका भी उसकी खोजमें उपयोग कर सकते हैं; जैसे कोई फूल, कोई प्रार्थना, कोई कर्म भगवान्‌के अर्पण किया जाता है वैसे ही हम कोई भी पदार्थ, सुन्दर सजाकर, कोई गान, कोई कविता, कोई प्रतिमा, कोई सुस्वर आलाप भी अर्पण कर सकते हैं और उसके द्वारा कोई संस्पर्श, कोई स्वीकृति, सहायता या कोई अनुभूति पा सकते हैं। और जब इस प्रकारसे उस भागवत चैतन्यमें प्रवेश हो चुकता है अथवा अंदर-ही-अंदर वह बढ़ता है तब भी जीवनमें इन सब चीजोंके द्वारा उसका प्रकाश किया जाना योगसे बाहर नहीं है; इन सब रचनाओंका फिर भी स्थान रहता है, यद्यपि इसका वास्तविक महत्त्व अन्य किसी भी भगवत्प्रीत्यर्थ काम आनेवाले पदार्थ या कर्मसे अधिक नहीं होता। कला, कविता, सङ्गीतका जो सामान्य रूप सर्व-साधारणमें देखनेमें आता है उसका असर मन और प्राणों-पर ही होता है, अध्यात्मसे उसका कोई लगाव नहीं है; पर उच्चतर ध्येयके लिये इनका उपयोग किया जा सकता है, और तब भगवान्‌के साथ हमारे चैतन्यको जोड़नेवाली अन्य सभी चीजोंके समान ये (कला, कविता, सङ्गीत) भी रूपान्तरित होकर आध्यात्मिक बन जाते हैं और तब इन्हें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भी योगके अङ्गस्वरूप स्वीकार किया जा सकता है। हर चीजको अभूतपूर्व महत्त्व प्राप्त हो सकता है पर अपनेसे नहीं, उस भाव, उस चेतनासे जिसके द्वारा उसका उपयोग किया जाता है; कारण असल चीज जो हर हालतमें जरूरी और अनिवार्य है वह एक ही है और वह है भागवत सत्यके चैतन्यबोधका बढ़ता जाना और उसीमें रहना और उसीका चिरजीवन बन जाना। २३ मार्च १९३२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मध्यवर्त्ती क्षेत्र

ये सब अनुभव एक ही प्रकारके हैं और इनमेंसे प्रत्येक-के सम्बन्धमें एक ही बात कही जा सकती है। उनमेंसे जो वैयक्तिक हैं उनके अतिरिक्त बाकी या तो ऐसे मनोकल्पित सत्य हैं जो हमारी चेतनामें उतर आते हैं जब हम सत्ताके कुछ विशिष्ट लोकोंके स्पर्शमें आते हैं, या विराट् मनोमय और प्राणमय लोकों-के सुदृढ़ आधान हैं जो इन लोकोंकी ओर उद्घाटित होते ही सहसा साधकके अंदर घुसे चले आते हैं और अपनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृतार्थताके लिये साधकका उपयोग करते हैं । ये चीजें जब ऊपरसे आती या अंदर प्रवेश करती हैं तो एक बड़ी शक्तिके सञ्चारका अनुभव होता है, अन्तःस्फूर्त्ति या दीप्तिमत्ता सुस्पष्टतया अनुभूत होती है, अन्तर्ज्योति और अन्तःसुखका विलक्षण संवेदन होता है तथा विशालता और शक्तिमत्ताकी छाप-सी पड़ जाती है । उस समय साधकको ऐसा अनुभव होता है जैसे वह अपनी सामान्य बद्धावस्थासे मुक्त हो गया हो और एक अद्भुत अभिनव अनुभवजगत्में सर्वाङ्गमें भरपूर, विशाल और अति उन्नत होकर प्रवेश कर रहा हो । इस प्रकारका जो कोई अनुभव होता है वह साधककी अभीप्सा, महदाकांक्षा, आध्यात्मिक पूर्णता और यौगिक सिद्धिकी कल्पनाओंके साथ आकर जुट जाता है; फिर यह भी प्रतीत होने लगता है कि यही वह परासिद्धि और कृतार्थता है जिसकी खोजमें वह था । इस चमत्कार और वेगकी ओर वह अति सहज ही बेतरह झुक पड़ता है, और इस अनुभवके रूपमें उसे जो कुछ मिलता है उसे वह उसके वास्तविक स्वरूपकी अपेक्षा कहीं बढ़कर समझ लेता है, ऐसा मान लेता है मानो उसे कोई परम वस्तु या कम-से-कम कोई असली चीज मिल गयी । इस अवस्थामें साधकको प्रायः वह आवश्यक ज्ञान और अनुभव नहीं होता जिससे उसे यह पता लगता कि यह जो कुछ अनुभव हुआ है सो बहुत ही अनिश्चित और सदोष आरम्भमात्र है; यह बात हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सकती है कि, तुरत ही उसकी समझमें यह न आवे कि वह इस अवस्थामें भी समष्टिगत अज्ञानके ही अंदर है, समष्टि सत्यके अंदर नहीं, परम सत्यके अंदर तो नहीं ही; और यह कि इस अवस्थामें जो कोई रूपात्मक या क्रियात्मक प्रकटनशील सत्य उसके अंदर अवतरित हुए हों वे केवल आंशिक ही हैं और सो भी उसकी अभीतक सदोष बनी हुई चेतनासे होकर आनेके कारण और भी क्षीण हो गये हैं। इस बातको भी समझना सम्भवतः उससे न बन पड़े कि यह जो कुछ उसे अनुभूत या उपलब्ध हो रहा है इसे एक पक्की बात जानकर इसका यदि वह सहसा प्रयोग करने लग जाय तो इससे या तो वह गड़बड़ीमें पड़ जायगा और प्रमादमें जा गिरेगा, या किसी ऐसे आंशिक रूपमें जा अटकेगा जिसमें आध्यात्मिक सत्यका कोई अंश तो हो सकता है परन्तु यह सत्यांश, बहुत सम्भव है कि, मन और प्राणकी अतिरिक्त वृद्धिके भारसे दबकर, सर्वथा विकृत हो जाय। इसलिये जब साधक (तुरत या कुछ काल बाद) इन अनुभवोंसे अपने आपको अलग कर लेनेमें समर्थ हो, निर्विकार साक्षी चैतन्य होकर इनके ऊपर आसीन हो इनके वास्तविक स्वरूप, इनकी हद, इनकी बनावट और इनकी मिलावटको ठीक तरहसे देखे, तभी वह वास्तविक मुक्ति और उच्चतर, वृहत्तर और सत्यतर सिद्धिके मार्गपर आगे बढ़ सकता है। साधनाके प्रत्येक सोपानपर यही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करना होता है। कारण इस योगके साधकको इस प्रकार जो-जो कुछ प्राप्त होता है, चाहे वह अधिमानससे आया हुआ हो या अन्तर्ज्ञानसे अथवा सम्बुद्धमानससे या किसी उच्चतर प्राण-क्षेत्रसे, अथवा एक साथ इन सबसे ही क्यों न आया हुआ हो, है वह एक सीमाके अंदर बद्ध ही, चरम असीम नहीं है; वह परम सत्य नहीं जिसमें वह निवास कर सके, केवल एक अवस्थान्तरमात्र है। फिर भी इन अवस्थाओंमेंसे होकर ही आगे जाना होता है; कारण विज्ञानसत्य अर्थात् परम सत्यको कोई एक ही छलाँगमें या कई छलाँगोंमें नहीं पहुँच सकता, साधकको इन कई मध्यवर्त्ती अवस्थाओंको, उनके अल्पतर सत्य या प्रकाश या शक्ति या आनन्दके बन्धनमें बद्ध या आसक्त न होकर उन्हें स्थिरता, धीरता और दृढ़ताके साथ पार करके आगे बढ़ना होता है।

यहाँ जिस अवस्थाका उल्लेख है वह एक मध्यवर्त्ती अवस्था है, मन-बुद्धिकी सामान्य चेतना और वास्तविक योगज्ञानके बीचका यह एक संक्रमण-क्षेत्र है। इस क्षेत्रको कोई तुरत ही अथवा साधनाकी प्राथमिक अवस्थामें ही इसके वास्तविक स्वरूपको जानकर तथा इसके अपूर्ण प्रकाश और लुभावने परन्तु अधूरे और प्रायः अशुद्ध और परिपन्थी अनुभवोंमें अटकनेसे इनकार करके बेलाग पार कर सकता है; कोई इस क्षेत्रमें आकर विपथगामी भी हो सकता है,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नकली ध्वनियों तथा मिथ्या आदेशोंका अनुगमन कर परिणाममें आध्यात्मिक अधःपातको प्राप्त हो सकता है; अथवा कोई इस मध्यवर्त्ती क्षेत्रमें ही अपना घर बनाकर रह सकता है, आगे बढ़नेकी फिर कोई इच्छा ही न करे और यहीं किसी खण्ड सत्यका महल उठावे, उसीको पूर्ण सत्य मान ले अथवा इन संक्रमण-क्षेत्रोंमें विचरनेवाली अन्तरिक्षशक्तियोंके हाथका एक यन्त्र बना रह जाय—और यही दशा बहुत-से योगियों और साधकोंकी हुआ करती है। इसे किसी असाधारण अवस्थाकी शक्ति जानकर तथा इसके पहले-पहल प्राप्त हुए वेगको प्रचण्ड-सा अनुभव कर ये लोग उससे अभिभूत होते और जरा-सी रोशनीसे चौंधिया जाते हैं, यह किञ्चित्-सा प्रकाश उन्हें अति प्रखर प्रकाश या शक्तिका सञ्चार-सा प्रतीत होता है और इसीको वे पूर्ण भागवत शक्ति या कम-से-कम कोई बहुत बड़ी योगशक्ति मान लेते हैं; अथवा वे किसी मध्यवर्ती शक्तिको ही (जो सदा भगवान्‌की शक्ति ही नहीं होती) परमा शक्ति और किसी मध्यवर्ती चेतनाको ही परमका साक्षात्कार मान लेते हैं। अनायास ही वे यह सोचने लगते हैं कि अब तो हम पूर्ण विराट् चैतन्यमें आ गये जब कि यथार्थमें वे उस विराट्के केवल एक बाह्यप्रदेशमें अथवा उसके किसी एक क्षुद्र अंशमात्रमें या मनके या प्राणके किन्हीं बृहत् क्षेत्रोंमें या किन्हीं बृहत् सूक्ष्म भौतिक क्षेत्रोंमें ही उनके क्रियात्मक सम्बन्धसे जुटकर प्रविष्ट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो पाते हैं। अथवा उन्हें ऐसा भी प्रतीत होता है मानो वे किसी पूर्णतया प्रबुद्ध चैतन्यमें प्रविष्ट हों जब कि यथार्थमें वे किसी मनोमय या प्राणमय क्षेत्रके किञ्चित् प्रकाशके द्वारा ऊपरसे आनेवाली चीजोंको अधूरे तौरपर ग्रहण कर रहे हों; क्योंकि बात यह है कि ऊपरसे जिन अर्थोंका अवतरण होता है वे इन क्षेत्रोंमेंसे होकर ज्यों-ज्यों नीचे आते हैं त्यों-त्यों अपकृष्ट और प्रायः विकृत होते जाते हैं; साधकके तदभिमुख मन और प्राणको भी जो कुछ इस प्रकार प्राप्त होता है उसे वह कुछ-का-कुछ समझता या उसकी भद्दी नकल उतारता है अथवा अपनी ही कल्पनाओं, भावनाओं और वासनाओंको उसमें ऐसे मिला देता है कि इन्हें वह अपना समझ ही नहीं पाता और इन्हें ऊपरसे प्राप्त होनेवाले सत्यका अंश मान लेता है, क्योंकि ये चीजें उसमें मिल जाती हैं, उसके आकारका अनुकरण करती हैं, उसके प्रकाशसे प्रकाशित होती हैं और इस साहचर्य और पराये प्रकाशसे अति रञ्जित होकर अवास्तव महत्त्वको प्राप्त होती हैं।

अनुभवके इस मध्यवर्ती क्षेत्रमें इससे भी बड़े और संकट उपस्थित होते हैं। कारण, इस अवस्थामें साधक अपनी चेतनाको जिन क्षेत्रोंकी ओर उद्घाटित किये रहता है उन क्षेत्रोंसे, पहलेकी तरह कोई झलक और प्रभाव ही नहीं बल्कि प्रत्यक्ष उन क्षेत्रोंका पूर्ण अंकन ही होता है, और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाना प्रकारकी नाना कल्पनाएँ, प्रेरणाएँ, सूचनाएँ और रचनाएँ आया करती हैं जो प्रायः परस्पर सर्वथा विरोधी, विसंगत अथवा विपरीत हुआ करती हैं, पर वे भी इस ढंगसे आ उपस्थित होती हैं कि उनकी न्यूनता और परस्परभिन्नता उस ढंगके प्रबल वेग, सत्यके आभास और युक्तिके प्राचुर्य अथवा निश्चयकी प्रतीतिसे बिलकुल ढक ही जाती है। इस प्रतीति, सजीव बोध तथा प्राचुर्य और समृद्धि-के दिखावसे साधकका मन पराभूत होकर बड़ी विकलता-को प्राप्त होता है और इस विकलताको साधकका मन कोई महान् दैवी संघटन और शासन मान लेता है; अथवा वह निरन्तर नवीन प्रयोग और परिवर्त्तनके चक्कर काटता रहता है और इसीको उन्नतिकी अति क्षिप्र गति मान लेता है, पर इससे वह किसी भी किनारे नहीं लगता। अथवा इसके विपरीत वहाँ यह भी आशंका है कि वह किसी आपातरमणीय, पर यथार्थमें अविद्याकृत, मायाके हाथका यन्त्र बन जाय। कारण, इन मध्यवर्ती क्षेत्रोंमें सर्वत्र अनेकानेक उपदेव या बलवान् दैत्य अथवा निम्न कोटिकी सत्तावाले अन्य जीव हैं जो इस भूलोकमें अपनी सृष्टि चाहते हैं, अपना कोई भाव पार्थिव रूपमें व्यक्त करना चाहते हैं अथवा अपने मन और प्राणको किसी रूपमें यहाँ बलात् स्थिर करना चाहते हैं और इसलिये ये साधकके विचार और संकल्पको अपने काममें लगाने, अपने प्रभावमें ले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आने और फिर अपने अधिकारमें भी कर लेने तथा इस हेतुसे उसे अपना यन्त्र बना लेनेको सदा उत्सुक रहते हैं। ये वे असुरात्मा नहीं हैं जो वास्तवमें साधनाके वैरी हैं जिनसे होनेवाला भय सर्वप्रसिद्ध है, जिनका एकमात्र हेतु अस्त-व्यस्त कर डालना, कूट-कपट रचना और साधनाको नष्ट-भ्रष्ट करना तथा सर्वनाशकारी अनाध्यात्मिक प्रमादकी सृष्टि करना होता है। ऐसे असुरात्माओंमेंसे किसीके भी चंगुलमें कोई साधक फँस जायगा तो वह योग-मार्गसे च्युत हो ही जायगा। ये असुरात्मा प्रायः देवनामरूप धारणकर साधकोंके सामने आते हैं। इसके विपरीत यह भी सर्वथा सम्भव है कि इस क्षेत्रमें प्रवेश करते ही साधकको कोई दैवी शक्ति मिल जाय जो उसकी मदद करे और उसे रास्ता दिखावे जबतक वह महत्तर सत्यको ग्रहण करनेमें समर्थ न हो; परन्तु फिर भी इतनेसे ही इस क्षेत्रमें हो सकनेवाले प्रमादों और पदस्खलनोंसे बचनेका सुनिश्चित उपाय नहीं हो जाता; क्योंकि यहाँ इससे अधिक आसान बात और कोई नहीं है कि इन क्षेत्रोंकी शक्तियाँ या असुरात्मा ही भागवत शब्द और रूपका अनुकरण कर साधकको धोखा दें और विपथगामी बना दें अथवा साधक स्वयं ही, अपने ही मन, प्राण या अहंकारकी क्रिया और रूपको भगवान्‌की क्रिया और रूप मान ले।

कारण, यह मध्यवर्त्ती क्षेत्र खण्ड सत्योंका क्षेत्र है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और केवल इतनेसे ही कोई हरज नहीं था, क्योंकि विज्ञानके नीचे पूर्ण सत्य कहीं है ही नहीं; परन्तु यहाँके खण्ड सत्यमें सत्यका अंश प्रायः इतना अल्प अथवा कार्यतः इतना सन्दिग्ध होता है कि अस्तव्यस्तता, भ्रान्ति और प्रमादके लिये बड़ा भारी मैदान खाली पड़ा रहता है। साधक यह समझता है कि हमारी चेतना अब पहले-सी ही छोटी-सी चीज नहीं रह गयी, क्योंकि अब वह अपने-आपको किसी वृहत् सत्ता या महती शक्तिसे युक्त अनुभव करता है यद्यपि वह है अभी पहलेकी ही चेतनामें, जो वास्तवमें नष्ट नहीं हुई है। वह अपने ऊपर किसी ऐसी शक्ति, सत्ता या सामर्थ्यका अधिकार या प्रभाव अनुभव करता है जो उससे महान् है, वह उसीका यन्त्र बननेकी इच्छा करता है और यह समझता है कि अब तो हम अहंकारसे मुक्त हो गये; परन्तु यह अनहंकारिताकी भ्रान्ति प्रायः किसी बढ़े-चढ़े हुए अहंकारको छिपाये रहती है। ऐसी भावनाएँ उसे आक्रान्त कर उसके मनको वेग प्रदान करती हैं, जो अंशतः ही सत्य होती हैं और विश्वासके अतिरेकके साथ उनका दुरुपयोग करनेसे वे मिथ्या भी हो जाती हैं; इससे चेतनाके कार्य दूषित हो जाते हैं और भ्रान्तिकी ओरका रास्ता खुल जाता है। ऐसी सूचनाएँ आती हैं और ये कभी-कभी बड़ी ही अद्भुत और रम्य होती हैं, जिनसे साधकको निज महत्त्व सूचित होता और वह उससे प्रसन्न होता है, अथवा ये सूचनाएँ उसकी इच्छाके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनुकूल होती हैं और वह इन्हें बिना जाँचे या बिना समझे-बूझे, युक्तायुक्तका विवेक किये बिना ही ग्रहण कर लेता है। इनमें जो कोई बात सच भी होती है तो अपनी सीमा और असलियतसे इतनी चढ़ी-बढ़ी और फैलायी हुई होती है कि उससे प्रमाद पैदा होना शुरू हो ही जाता है। यह वह क्षेत्र है जिसे बहुतेरे साधकोंको पार करना पड़ता है, जिसमें बहुतेरे दीर्घकालतक भटकते रहते हैं और जिसमेंसे बहुत-से तो कभी बाहर निकल ही नहीं पाते। विशेषकर जिनकी साधना प्रधानतया मन और प्राणके क्षेत्रोंमें रहती है, उन्हें यहाँ बड़ी कठिनाइयोंका और बड़े भयका सामना करना पड़ता है; केवल वे ही साधक, जो सरलता और सावधानीके साथ किसी नियत अनुशासनका अनुवर्त्तन करते हैं अथवा जिनकी प्रकृतिमें अन्तरात्माका प्राधान्य स्थापित हो चुका है, इस मध्यवर्त्ती क्षेत्रसे इस प्रकार निकल जाते हैं जैसे कोई किसी सुस्पष्ट चिह्नोंसे चिह्नित सुनिश्चित मार्गको पार करे। केन्द्रगत सचाई और मूलगत विनम्रतासे भी बड़े भय और क्लेशसे रक्षा हो जाती है। फिर वह साधक शीघ्रतापूर्वक इस क्षेत्रसे निकलकर उस विमलतर प्रकाशमें प्रवेश करता है जहाँ भी बहुत कुछ मिलावट, अनिश्चितता और संघर्षकी अवस्था तो रहती है पर तो भी जहाँसे विश्वसत्ताके सत्यका मार्ग ही उद्भासित होता है, माया और अविद्याके तममिश्रित प्रकाशका दीर्घकालीन सहवास नहीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनुष्यकी सामान्य चेतनाकी सीमाके ठीक उस ओर चेतनाका जो स्वरूप है उसका, उसके मुख्य अंगों और सम्भावनाओंसहित, सामान्यरूपसे, इसलिये वर्णन किया गया कि यही वह स्थान है जहाँ साधकोंको इस प्रकारके अनुभव हुआ करते हैं। परन्तु भिन्न-भिन्न प्रकारके साधक भिन्न-भिन्न प्रकारसे यहाँ पेश आते हैं और कभी एक प्रकारकी सम्भावनाओंकी ओर झुकते हैं तो कभी दूसरे प्रकारकी सम्भावनाओंकी ओर। जिस प्रसंगसे यह चर्चा यहाँ की जा रही है उस प्रसंगमें, साधकका इस क्षेत्रमें जो प्रवेश हुआ वह विश्वचैतन्यको अवतारित कराने अथवा बलात् उसमें प्रवेश करनेके प्रयत्नसे हुआ प्रतीत होता है—इस बातको चाहे जिस ढंगसे कहा जाय अथवा स्वयं प्रयत्न करनेवालेको अपने इस प्रयत्नका बोध हो या न हो अथवा बोध भी हो तो चाहे इस रूपमें हो या न हो, इससे कुछ नहीं आता-जाता, साररूपसे बात जो कुछ है वह यही है। जिस क्षेत्रमें, इस प्रसंगमें, साधकने प्रवेश किया था वह अधिमानसक्षेत्र नहीं था, क्योंकि सीधे अधिमानसक्षेत्रमें पहुँचना एक असम्भव बात है। अधिमानस है तो विश्वचैतन्यके अखिल कर्मके पीछे और ऊपर परन्तु आरम्भमें उसके साथ अप्रत्यक्ष सम्बन्ध ही हो सकता है; वहाँसे जो चीजें आती हैं वे मध्यवर्त्ती क्षेत्रोंमेंसे होकर वृहत्तर मनःक्षेत्रमें, प्राणक्षेत्रमें, सूक्ष्म भौतिक क्षेत्रमें आती हैं और आते-आते बहुत परिवर्त्तित और क्षीण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो जाती हैं; यहाँतक कि यहाँ आनेपर उनमें वैसी पूर्ण शक्ति और सत्य नहीं रह जाता जैसा कि अधिमानसके अपने क्षेत्रमें रहता है। अधिकांश गतियाँ तो अधिमानससे नहीं बल्कि नीचेके उच्चतर मानससे आती हैं। ये अनुभव जिन कल्पनाओंसे बिधे हुए हैं और जिनके बलपर उनके सत्य होनेका दावा किया गया-सा प्रतीत होता है वे कल्पनाएँ अधिमानसकी नहीं हैं बल्कि उच्चतर मानसकी हैं और कहीं-कहीं संबुद्ध मानसकी; परन्तु उनमें भी निम्न मानस और प्राणके क्षेत्रोंकी सूचनाएँ मिली हुई हैं और प्रयोगावस्था-में बुरी तरहसे क्षीण हुई हैं अथवा बहुत-सी जगह इनका प्रयोग अस्थानमें ही हुआ है। पर इससे भी कुछ नहीं बिगड़ता था क्योंकि सामान्यतः ऐसा होता ही है और इसमें-से होकर ही आगेके ऐसे स्वच्छतर वातावरणमें पहुँचना होता है जहाँ सब बातें अधिक सुव्यवस्थित हैं और सुदृढ़ आधारपर स्थित हैं। परन्तु यहाँ जिस क्रियाकी बात है उसमें शीघ्रता और उत्सुकता, आत्मसम्मान और आत्मविश्वासकी अति हो गयी है, अपरिपक्व अवस्थाको ही निश्चय मान लिया गया है, और भरोसा किया गया है और किसीका नहीं बल्कि अपने ही मनके या ऐसे "भगवान्" के परिचालनके ऊपर जो अत्यल्प ज्ञानकी अवस्थामें भावित या प्रतीत होते हैं। भगवान्‌के सम्बन्धमें साधककी भावना और अनुभूति मूलतः, वास्तविक हो तो भी, साधना-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की इस अवस्थामें कभी पूर्ण और विशुद्ध नहीं होती; उसमें नाना प्रकारके मन और प्राणोंके अध्यारोप मिले रहते हैं और भगवदादेशके साथ सब तरहकी ऐसी बातें हिली-मिली रहती और भगवदादेशका अंग समझी जाती हैं जो आती हैं भगवान्‌से सर्वथा भिन्न किन्हीं अन्य स्थानोंसे ही। इस अवस्थामें भगवान् प्रायः परदेके अंदर नेपथ्यसे ही कार्य करते हैं, फिर भी यदि यह मान लिया जाय कि भगवान्‌का प्रत्यक्ष आदेश भी होता है तो भी यह आदेश केवल कभी-कभी है और शेष सब कुछ प्रकृतिके गुणोंका खेल ही होता है, जिसमें प्रमाद और स्खलन तथा अज्ञानका संमिश्रण अबाधितरूपसे होता रहता है और ऐसा इसलिये होने दिया जाता है कि जिसमें जगत्-शक्तियोंके द्वारा साधक परीक्षित हो और वह अनुभवसे सीखे, अपूर्णतासे होकर पूर्णताकी ओर उन्नत हो—यदि उसमें योग्यता हो, सीखनेकी इच्छा हो तो अपनी भूलों और गलतियोंको आँख खोलकर देखे, उनसे सीखे और लाभ उठावे, जिसमें विशुद्धतर सत्य, ज्योति और ज्ञानकी ओर आगे बढ़ सके।

इस प्रकारकी मनोवस्थाका यह परिणाम होता है कि इस संमिश्र और संशय-सङ्कुल क्षेत्रमें जो कुछ भी प्रतीत होता है उसे साधक कुछ ऐसा मानने लगता है मानो यही परम सत्य और विशुद्ध भगवत्संकल्प है; यहाँ जो कल्पनाएँ या सूचनाएँ सतत हुआ करती हैं उन्हें साधक 'इदमित्थं'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समझता है और उन्हें इस प्रकार प्रकट करता है मानो समग्र और अबाधित सत्य ये ही कल्पनाएँ या सूचनाएँ हों। इस अवस्थामें चित्तकी ऐसी धारणा हो जाती है कि हम व्यक्तित्वके अतीत हो गये, अहंकारसे मुक्त हो गये, यद्यपि वास्तविक अवस्था यह रहती है कि उसकी मनोवृत्तिका सारा रुख, उसका वैखरीद्वारा प्रकाश और भाव, ये सभी बातें अति प्रचण्ड अहंमन्यतासे भरी होती हैं और फिर भी इन बातोंको साधक यों ठीक समझ लेता है कि वह समझता है कि हम तो भगवान्‌के हाथके यन्त्र हैं और इसलिये हम जो कुछ सोचते और करते हैं वह यन्त्रके नाते, भगवत्प्रेरणासे ही सोचते और करते हैं। ऐसी-ऐसी कल्पनाएँ झोंकी जाती हैं जो मन-बुद्धिके लिये तो ठीक हो सकती हैं, पर अध्यात्मदृष्टिमें जिनकी कोई सत्ता नहीं; परन्तु फिर भी वे ऐसे ढंगसे कही जाती हैं मानो वे अध्यात्मके ही ऐकान्तिक सत्य हों। उदाहरणार्थ, समताको लीजिये जो उस दृष्टिसे एक मनोधर्म है—वह यौगिक समता नहीं जो बिलकुल दूसरी चीज है—अथवा पवित्रात्मारूपसे सर्वतन्त्र स्वतन्त्र हो रहनेका जो दावा किया जाता है उसे देखिये, किसीको गुरु माननेसे इनकार करना या भगवान् और मानुषी तनुका आश्रय किये हुए भगवान्‌में भेद मानना, इत्यादि। ये सब बातें ऐसी हैं जिनपर मन और प्राण अड़े रह सकते हैं और इन्हें सिद्धान्तका रूप दे सकते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं, और वे इन्हीं सिद्धान्तोंको धार्मिक जीवनमें और आध्यात्मिक जीवनमें भी बलात् ले आनेका प्रयत्न कर सकते हैं, पर ये बातें स्वरूपतः आध्यात्मिक नहीं हैं और न आध्यात्मिक हो सकती हैं। प्राणके क्षेत्रोंसे भी सूचनाएँ आने लगती हैं—चमत्कृतिजनक मायिक या विलक्षण कल्पित चित्रोंका ताँता-सा लग जाता है, विविध गूढ़ार्थव्यञ्जन, अन्तर्ज्ञानाभास और आगे होनेवाले अनुग्रहोंके आश्वासन, ये सब बातें हुआ करती हैं जो मनको विमूढ़ कर देती हैं और प्रायः ऐसे ढंगपर साधकको उतारती हैं कि साधकको यह सब प्रिय लगता है और उसका अहंकार और अहंमन्यत्व बेतरह बढ़ जाता है; परन्तु प्राणक्षेत्रसे होनेवाली इस तरहकी ये सब बातें किसी सच्चे साधन-सोपानकी आध्यात्मिक या किसी अन्य अन्तर्जगत्की वास्तविक सत्ताओंपर अवलम्बित नहीं होतीं। इस क्षेत्रमें इस तरहकी बातोंकी भरमार होती है और यदि इन्हें मौका दिया जाता है तो साधकके ऊपर ये चारों ओरसे घिर आती हैं; परन्तु यदि साधकका पक्का इरादा परमको ही प्राप्त करना है तो उसे चाहिये कि वह इन चीजोंको केवल देखता चले और आगे बढ़ता चले। यह बात नहीं है कि इन बातोंमें कुछ भी सत्यांश नहीं है, पर बात यह है कि एक सत्यके पीछे यहाँ नौ असत्य सत्यका रूप धारण करके आया करते हैं और केवल वही पुरुष बिना लुढ़के या बिना इस गोरखधन्धेमें फँसे अपना रास्ता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निकाल सकता है जो अन्तर्जगत्की पथवीथियोंपर चलनेका अभ्यासी हो और जिसे दीर्घकालके निरन्तर अभ्यासके अनुभवसे वैसा चातुर्य प्राप्त हुआ हो। इस मध्यवर्ती क्षेत्रमें ऐसा होना सम्भव है कि चित्तकी सब वृत्तियाँ, इन्द्रियोंसे होनेवाले सब कर्म और मुखसे निकलनेवाले सब शब्द इस क्षेत्रके प्रमादोंसे इस तरह पूर्ण हो जायँ कि फिर इस रास्तेपर और आगे चलना भगवान्से और योगसे बहुत दूर चले जाना ही होता है।

यहाँ अब भी साधकको यह स्वतन्त्रता है कि वह चाहे तो इन अनुभवोंसे प्राप्त होनेवाले बहुत कुछ मिलावटी परिचालनको ही मानता चला जाय या सच्चे मार्गनिर्देशको ग्रहण करे। हर कोई, जो योगके अनुभवक्षेत्रमें प्रवेश करता है, अपने ही मार्गका स्वतन्त्रतापूर्वक अनुसरण कर सकता है; पर यह योगमार्ग चाहे जिसके अनुसरण करनेकी चीज नहीं है, यह केवल उन्हींके लिये है जो इसके लक्ष्यका अनुसन्धान करना स्वीकार करते हैं और निर्दिष्ट मार्गपर चलते हैं जिस मार्गपर सुनिश्चित पथप्रदर्शनका होना अनिवार्य है। इस मार्गपर अन्ततक चले चलना तो क्या, कुछ दूर भी, विना किसी सत्साहाय्य या सत्प्रभावको स्वीकार किये अपने आन्तरिक बल और ज्ञानके भरोसे, यदि कोई समझता है कि, हम चल सकेंगे तो उसका यह समझना बिलकुल व्यर्थ है। दीर्घकालसे जिन योगोंका अभ्यास होता चला आया है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन सामान्य योगमार्गोंका अवलम्बन भी बिना गुरुकी सहायताके ठीक तरहसे नहीं बनता। फिर यह योग तो ऐसा है कि इसमें ज्यों-ज्यों आगे बढ़िये त्यों-त्यों ऐसे देश मिलेंगे जिनमें अबतक किसीने पैर नहीं रखा था और ऐसे-ऐसे क्षेत्र मिलेंगे जिन्हें अबतक किसीने जाना भी नहीं था; ऐसे इस योगमें गुरुकी सहायताके बिना काम चले, यह तो नितान्त असम्भव है। यहाँ जो कर्म करनेका विधान किया जाता है वह कर्म भी चाहे जिस योगमार्गके चाहे जिस साधकके करनेका कर्म नहीं है, न यह 'निर्विशेष' ब्रह्मका ही कर्म है—जो ब्रह्म कोई क्रियात्मक शक्ति नहीं बल्कि जो विश्वकी सभी क्रियाओंका एक-सा उदासीन आधारमात्र है। इस योगमें कर्मका जो विधान है वह उन्हीं लोगोंके लिये साधनाका एक क्षेत्र है जिन्हें और किसी नहीं बल्कि इसी योगके कठिन और जटिल मार्गको तै करना है। यहाँ सब कर्म स्वीकृति, साधना और शरणागतिकी भावनासे करना होता है, वैयक्तिक माँगों और शर्तोंके साथ नहीं बल्कि सावधान और सचेत रहकर निर्दिष्ट नियन्त्रण और परिचालनकी अधीनता स्वीकार करके। अन्य किसी भावनासे किया हुआ कर्म वातावरणमें अनाध्यात्मिक अस्तव्यस्तता, विप्लव और उत्पात मचानेका कारण होता है। आस्थापूर्वक किये हुए कर्ममें भी प्रायः अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं, अनेक प्रमाद होते हैं और अनेक प्रकारके स्खलन भी होते हैं। कारण, इस योगमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस जगत्की पहेली

साधकोंको धीरगतिसे आगे ले जाना होता है और कर्मका कुछ क्षेत्र उनके अपने प्रयासके लिये भी छोड़ देना होता है जिसमें मन-प्राणके स्वाभाविक अज्ञानसे, स्वानुभवको बढ़ाते हुए साधक बाहर निकलें और उदारभाव और विशुद्ध संबुद्ध ज्ञानको प्राप्त हों। पर यदि अज्ञानकी सीमा पार करते ही जो क्षेत्र मिलता है वहाँ पहुँचनेपर कोई पथप्रदर्शक न मिले तो साधक भटकता रहेगा और सदा इस बातका भय बना रहेगा कि योगकी मूल भित्ति ही छूट जाय और साधक उस स्थितिसे ही च्युत हो जाय कि जिस स्थितिमें ही योगमूलक कर्म किया जा सकता है। इस मध्यवर्त्ती क्षेत्रसे होकर जानेका जो मार्ग है वह बड़ा विकट है। इस मार्गसे हर किसीको जाना ही पड़ता हो, ऐसी बात नहीं है; क्योंकि बहुतेरे इससे अधिक संकुचित पर अधिक सुनिश्चित मार्गसे पार हो जाते हैं। मध्यवर्त्ती क्षेत्रके विस्तृत मार्गकी यह विशेषता है कि इस मार्गसे होकर जानेमें बहुत विस्तृत और सुसमृद्ध सर्जन होनेकी सम्भावना रहती है; पर यदि यहाँके विघ्नोंसे टकराकर कोई नष्ट-भ्रष्ट हो गया तो उसका उठना बड़ा कठिन होता है, बड़ा कष्टसाध्य होता है, बहुत समय और बड़े संघर्ष और प्रयाससे ही साध्य होता है।

६ नवम्बर १९३२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समष्टि-सत्य और समष्टि-अज्ञान

कोई अज्ञान ऐसा नहीं है जो समष्टिके अज्ञानका अंश न हो, व्यष्टिमें केवल इसकी आकृति और गति मर्यादित हुई रहती है और समष्टिमें यह अज्ञान उस विश्वचैतन्यका सम्पूर्ण कार्य है जो परम सत्यसे पृथक् होकर उस निम्नगा प्रकृतिमें क्रियाशील हो रहा है जिसमें सत्य विपर्यस्त, क्षयग्रस्त, असत् और प्रमादसे मिश्रित और आच्छादित हुआ करता है। समष्टि-सत्य समष्टि-चैतन्यकी बाह्य पदार्थोंको देखनेकी वह ज्ञान-दृष्टि है जिसमें पदार्थोंका यथातथ्य स्वरूप और भगवान्के साथ उनका वास्तविक सम्बन्ध तथा उनका पारस्परिक सम्बन्ध बोध होता है।

यौगिक समता और मानसिक समता

यौगिक समता, अन्तरात्माकी वह समता, वह सम-वर्त्तिता है जिसकी बुनियाद सर्वत्र एक आत्मा, सर्वत्र एक भगवान्के होनेकी वह बुद्धि है जो नामरूपात्मक जगत्के नानात्व, तारतम्य और वैषम्यके होते हुए भी सर्वत्र उसी एकको देखा करती है। समताका जो मनोगत तत्त्व है वह इन पार्थक्यों, भेदों और असमानताओंको देखकर भी न देखने या उन्हें नष्ट करनेमें प्रयत्नवान् होता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है, इस प्रकार प्रवृत्त होता है मानो सब कोई बराबर ही हों या ऐसा यत्न करता है कि जिससे सब कोई बराबर हो जायँ। रामकृष्ण परमहंसके भतीजे हरीशकी-सी यह बात है जो रामकृष्णसे स्पर्श पाते ही चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा कि 'रामकृष्ण, तुम ब्रह्म हो और मैं भी ब्रह्म हूँ; तुममें-हममें कोई अन्तर नहीं है।' आखिर रामकृष्णको, जब उन्होंने देखा कि इसका प्रलाप किसी तरह बंद नहीं होता है तब, अपनी शक्ति उससे खींच लेनी पड़ी। अथवा यह बात उस शिष्यकी-सी समझिये जो महावतका कहना न मानकर हाथीके सामने यह कहता हुआ अकड़कर खड़ा रहा कि 'मैं ब्रह्म हूँ।' आखिर हाथीने उसे अपनी सूँड़से पकड़कर उठाया और एक किनारे रख दिया। जब उसने अपने गुरुके पास जाकर इसकी शिकायत की तब गुरुने कहा— 'हाँ, तुम ब्रह्म तो हो पर तुमने महावत-ब्रह्मकी बात क्यों नहीं मानी? इसीलिये हाथी-ब्रह्मको तुम्हें उठाकर एक किनारे रख देना पड़ा जिसमें तुम कुशलसे रहो।' व्यक्त जगत्में सत्यके दो पहलू होते हैं, दोनोंमेंसे किसी एककी भी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मौलिक भेद

इस शिक्षामें (अन्य शिक्षाओंकी अपेक्षा) जो मुख्य विशेषता है वह यह है कि एक क्रियात्मक (Dynamic) भागवत सत्य है (जिसका नाम विज्ञान है) और वह सत्य अज्ञानके इस वर्त्तमान जगत्में अवतरित हो सकता है, और एक नवीन सत्य-चैतन्यका सर्जन कर जीवनको भागवत चैतन्यका जीवन बना सकता है। प्राचीन योग सब मन-बुद्धिसे सीधे निरपेक्ष परब्रह्मकी ओर चलते हैं और सारी क्रियात्मक सत्ताको अविद्या, माया या लीला मानते हैं; उन योगोंका यह प्रतिपादन है कि जहाँ तुम निश्चल निरपेक्ष ब्रह्मको प्राप्त हुए तहाँ फिर उस विश्व-ब्रह्माण्डका तुम्हारे लिये अभाव ही हो जाता है।

उच्चतर और निम्नतर सत्य

"यदि विज्ञान-सत्य ही सत्य है और बाकी सब मिथ्या, तो फिर विज्ञानके नीचे जो अधिमानस है वह विज्ञानकी प्राप्तिका मार्ग कैसे हो सकता है ?"

मैंने यह तो नहीं कहा है कि विज्ञानसत्यके अतिरिक्त बाकी सब मिथ्या है। मैंने यह कहा है कि विज्ञानके नीचे कहीं भी पूर्ण सत्य नहीं है। विज्ञानसत्य जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संपूर्ण और सुसमन्वित है, अधिमानसमें आकर कई अंशोंमें बँट जाता है, एक सत्यके कई सत्य हो जाते हैं जो एक दूसरेके मुकाबले अपनी-अपनी पूर्णताके साधनमें प्रवृत्त होते हैं, अपनी-अपनी सृष्टि निर्माण करना चाहते हैं या विभिन्न पृथक्-पृथक् सत्यों और सत्योंकी शक्तियोंके संघातसे बने हुए जगतोंमें अपनी पृथक् सत्ताके साथ रहना या अपना हिस्सा प्राप्त करना चाहते हैं। अधिमानससे और नीचे उतरनेपर सत्यका यह विभाजन इतना स्पष्ट हो जाता है कि उसमें प्रमाद, झूठ, अविद्या और अन्तमें स्थूल पार्थिव रूपका तमसाच्छन्न जड़त्व भी आ जाता है। यह जगत् जड़त्वसे, अचेतनासे ही इस रूपमें निकल आया है और इसने अपने अंदरसे मन-बुद्धिको विकसित किया है, यह मन-बुद्धि अविद्याका एक यन्त्र है और बहुविध बन्धन, संघर्ष, वैकल्य और प्रमादके बीचमेंसे रास्ता निकालकर परम सत्यके समीप पहुँचना चाहती है। अधिमानसको फिरसे पा लेना यदि किसीसे पूरे तौरपर बन पड़े (जो देहमें ही बद्ध-पुरुषोंके लिये सुगम नहीं) तो यह विज्ञान-सत्यके द्वारपर, उसमें प्रवेश करनेकी प्रत्याशासे खड़े होना ही तो है।

७ नवम्बर १९३२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रद्धाका प्रश्न

इन दो धारणाओंका मेल कैसे बैठे ?—

(१) सब प्रकारकी प्रवृत्तियों और घटनाओंके पीछे भगवान्का ही संकल्प रहता है।

(२) भगवान्का संकल्प व्यक्त जगत्में विकृत हुआ है।

श्रद्धाके दो प्रकार हैं—

एक वह श्रद्धा है जो समत्वकी साधिका है और दूसरी वह श्रद्धा जो भगवत्-सिद्धिकी साधिका है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस जगत्‌की पहेली

ये दो श्रद्धाएँ भगवान्‌के दो विभिन्न स्वरूपोंकी अनुवर्तिनी हैं।

भगवान् विश्वके परे परम पुरुष हैं और विश्वमें विश्वपुरुष या विश्वात्मा हैं।

सिद्धिका संकल्प परमपुरुषका संकल्प है।

विश्वात्माका कार्य देश-काल-वर्तमानके अनुसार सृष्टिचक्र चलाना है। यह विश्वात्माकी ही इच्छाशक्ति है जो इस जगत्‌की प्रत्येक घटना और प्रत्येक गतिमें व्यक्त हो रही है।

विश्वात्माकी यह इच्छाशक्ति हम लोगोंके सामान्य बोधमें ऐसी नहीं प्रतीत होती जो अपनी इच्छासे स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करती हो; इसका कार्य इन सब जीवों या प्राणियोंके द्वारा, जगत्‌की शक्तियोंके घात-प्रतिघातके द्वारा, इन शक्तियोंके नियम और परिणामोंके द्वारा होता है—इसका जो वास्तविक स्वरूप है अर्थात् यह जो एक स्वतन्त्र शक्ति है और सामान्य गुणकर्मविपाकके ऊपर उसकी परिचालिका शक्ति है, उसकी प्रतीति तो तभी होती है जब हम अपने-आपको उसकी ओर उन्मुख करते और अपने सामान्य बोध या चेतनासे ऊपर निकल आते हैं।

तब हम यह भी देख सकते हैं कि इन गुण-कर्मोंकी क्रीडामें भी और इनके विकृत होते हुए भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह विश्व-शक्ति परिणामतः परम पुरुष श्रीभगवान्के संकल्पकी सिद्धिकी ओर ही अग्रसर हो रही है।

विज्ञान-सत्यके अवतरणका सिद्ध होना परम पुरुषका ही संकल्प है और उसको हमें साधना है। जिस परिस्थिति-मेंसे होकर हमें यह कार्य करना है वह परिस्थिति है अपरा चेतनाकी, जिसमें हमलोगोंकी अज्ञता, दुर्बलता और प्रमादशीलतासे तथा गुण-कर्मोंके परस्पर संघर्षसे वस्तुओंकी विकृति हुआ करती है। इसीलिये श्रद्धा और समताका होना अनिवार्य है।

हम लोगोंको ऐसी श्रद्धा रखनी होगी कि हम लोग अज्ञ, प्रमादशील और दुर्बल हैं तो भी, और असुरात्मा हमारे ऊपर आक्रमण किया करते हैं तो भी, तथा अभी आपाततः विफलता देख पड़ती है तो भी, श्रीभगवान्-का संकल्प हमें, प्रत्येक घटनाके द्वारा, अन्तमें होनेवाली संकल्पसिद्धिकी ओर ही लिये जा रहा है। इस श्रद्धासे हमें समत्व प्राप्त होगा; इस श्रद्धाका यह स्वरूप है कि जो कुछ भी हो सो स्वीकार है—अवश्य ही इस रूपसे नहीं कि जो कुछ है बस वही है, बल्कि इस रूपसे कि प्राप्त-अवस्थासे होकर ही आगे बढ़ना है। ऐसी समता जब स्थापित हो लेती है तब उससे बल पाकर एक दूसरे प्रकारकी श्रद्धा भी आकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जम सकती है जो फिर विज्ञान-चैतन्यसे प्राप्त होनेवाली किसी शक्तिसे संयुक्त होकर क्रियाशील हो वर्तमान देशकाल-का अतिक्रम कर भविष्यका निर्धारण कर सकती है और परम पुरुष श्रीभगवान्‌के संकल्पकी सिद्धिका अवतरण करानेमें सहायक हो सकती है।

विश्वपुरुषकी ओर प्रवाहित होनेवाली जो श्रद्धा है उसकी कार्य-शक्ति गुणकर्मविपाकसे प्रस्तुत परिस्थितिकी आवश्यकताओंसे बँधी रहती है।

इस प्रकारके सब बन्धनोंसे सर्वथा विमुक्त होनेके लिये परम पुरुष श्रीभगवान्‌के ही समीप पहुँचना होता है।

२४ जून १९३१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीभगवान्‌का त्रिविध स्वरूप

परमपुरुष, समष्टि (विश्व) पुरुष और व्यष्टिपुरुषका भेद कोई मेरा आविष्कार नहीं है, न यह ज्ञान भारतवर्ष या एशियाकी ही कोई खास चीज है—प्रत्युत यूरोपकी भी यह एक सर्वमान्य शिक्षा है जो कैथोलिक सम्प्रदायमें गुप्तज्ञान-परम्परारूपसे प्रचलित है, और यही वहाँ त्रिमूर्ति अर्थात्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस जगत्की पहेली

पिता, पुत्र और पवित्रात्मा (होली घोस्ट) का प्रामाणिक अर्थ माना जाता है तथा यूरोपकी योगपथानुगम्य अनुभूतियों-में इसकी प्रसिद्धि भी है। सभी ऐसे आध्यात्मिक सम्प्रदायोंमें जो परमेश्वरकी सर्वत्र सत्ता मानते हैं, यह ज्ञान बीजरूपसे है—भारतवर्षके वेदान्तानुभवमें है और इस्लामके योगमार्गमें भी है (केवल सूफियोंमें ही नहीं अन्य सम्प्रदायोंमें भी)—मुसलमान तो केवल दो या तीन ही नहीं बल्कि भगवान्के कई स्तर मानते हैं जिन्हें पार करनेपर परमकी प्राप्ति होती है। अब यह जो त्रिविधताकी बात है इसके सम्बन्धमें यह जानना चाहिये कि व्यष्टि, दिक्कालावच्छिन्न समष्टि, और वह चीज जो इस समष्टिव्यवस्थान या किसी समष्टिव्यवस्थानके परे है, इन तीनोंमें अवश्य ही अन्तर है। एक है विश्व-चैतन्य जिसकी बहुतोंको अनुभूति होती है, जिसकी व्याप्ति और क्रिया व्यष्टिचैतन्यसे सर्वथा भिन्न है; अब इस विश्व-चैतन्यके परे यदि कोई और चैतन्य है जो अनन्त और वस्तुगत्या सनातन है, केवल कालके अंदर व्याप्त नहीं, तो वह चैतन्य इन दो प्रकारके चैतन्योंसे अवश्य ही भिन्न होगा। और यदि भगवान् इन तीनोंमें हैं या अपने-आपको प्रकट करते हैं तो क्या यह विचारमें नहीं आता कि इन तीनोंमें वे अपने स्वरूप और अपनी कार्यपद्धतिको इतना विभिन्न रखते होंगे कि यदि हम सम्पूर्ण अनुभूत सत्यको यथातथ्य-रूपसे देखना चाहते हों, सबको एकमें ही मिलाकर कुछ-को-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुछ कल्पित करना न चाहते हों, अथवा किसी अनिर्देश्यकी अविचल अनुभूतिमें ही आबद्ध न रहना चाहते हों, तो हमें यह मानना ही पड़ेगा कि भगवान्के तीन स्वरूप हैं ?

भगवत्स्वरूपके ये जो त्रिविध अनुभव सम्भावित हैं इनके प्रति जिसकी जैसी भावना या धारणा होती है तदनुसार उसके योगसाधनमें बड़ा बलाबल हुआ करता है। यदि हम ऐसे भगवान्की उपलब्धि करें जो व्यष्टिगत अहं आत्मा नहीं है फिर भी अन्तःस्थित होकर हमारी सम्पूर्ण व्यष्टि-सत्ताको चला रहा है और जिसे हम आवरणको हटाकर बाहर ला सकते हैं, अथवा यदि हम उन भगवान्की भावनाको अपने अंग-प्रत्यंगमें प्रतिष्ठित कर लें तो, यह सब भी है भगवान्की उपलब्धि ही, पर परिसीमित है। यदि हमें, मान लीजिये कि समष्टि जगत्के जगदात्माका अनुभव हुआ और उसमें हमने अहमात्माको मिला दिया तो यह है तो बहुत बड़ा व्यापक साक्षात्कार, पर इससे हम विश्वशक्तिके ही एक स्रोत बन जाते हैं और हमारे लिये फिर व्यष्टिगत अहमात्मारूपसे या व्यष्टिगत चैतन्यकी पूर्ण भागवत परिणतिके रूपसे कुछ नहीं रह जाता। यदि हम केवल परम पुरुष (पुरुषोत्तम) की ही खोजमें छूट पड़ें तो हम अपने-आपको और जगत्को भी एकमेवाद्वितीय जो परम है उसीकी प्राप्तिमें खो देते हैं। परन्तु यदि हमारा लक्ष्य इनमेंसे कोई एक ही न हो बल्कि भगवान्को पाना और भगवान्को जगत्में प्रकट करना और इसके लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस जगत्की पहेली

विज्ञान-सत्यकी-सी किसी ऐसी शक्तिको, जो अबतक यहाँ व्यक्त न हुई हो, यहाँ अवतारित कराना हमारा लक्ष्य हो तो इन तीनोंका सामञ्जस्य होना आवश्यक ही है। हमें उस शक्तिको जब ले आना है तब कहाँसे ले आवेंगे, यह प्रश्न है, क्योंकि अभीतक वह विश्वके व्यवस्थानमें व्यक्त नहीं है; अर्थात् अव्यक्त परमसे ही उसे लाना होगा और इसलिये अव्यक्त परमतक पहुँचना और उसे प्राप्त करना होगा। हमें उसे विश्वके व्यवस्थानमें ले आना है और यदि यह बात है तो, हमें विश्वात्मा विश्वेश भगवान्को प्राप्त करना होगा और विश्वात्मा तथा विश्वशक्तियोंसे युक्त-चैतन्य होना होगा। परन्तु इसे हमें इस जगत्में रूपान्वित करना है—अन्यथा यह एक प्रभावमात्र रह जायगा, कोई ऐसा पदार्थ नहीं होगा जो इस भौतिक जगत्में संस्थापित हुआ हो; और यह बात व्यष्टिमें स्थित भगवत्स्वरूपके द्वारा ही हो सकती है।

आध्यात्मिक अनुभूतिकी क्रियाशक्तिके ये तत्त्व हैं और इन्हें हमें स्वीकार करना होगा यदि हमें भागवत कर्म करना है।

१२ जून १९३२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुछ आध्यात्मिक विकल्प

तुम्हारे पत्रमें जो प्रश्न उपस्थित किया गया है वह शब्दोंसे बेतरह कसा हुआ-सा प्रतीत होता है और उसमें इस बातका पूरा ध्यान नहीं रखा गया है कि विश्वमें होनेवाली घटनाएँ और इसके गुणकर्म ऐसे हैं जो चाहे जिधर मुड़ सकते हैं। तुम्हारा प्रश्न, इस कारण, कुछ वैसा ही लगता है जैसा कोई सायंसके बिलकुल हालकी परिकल्पनाओंके बलपर यह पूछे कि यदि यह सम्पूर्ण जगत् और इसमें जो कुछ है वह सब प्रोटनों और इलेक्ट्रनोंसे ही बना हुआ है और ये सब प्रोटन और इलेक्ट्रन परस्पर एक-से ही हैं (भेद है तो केवल उनके विभिन्न पुञ्जोंके अन्तर्गत उनकी संख्यामें, और ऐसे पुञ्ज-भेदसे उनके ऊपर इतना बड़ा या कोई भी गुणभेद होनेका क्या कारण है ?) तो उनके कार्यके परिणाममें तारतम्य और जाति और शक्ति तथा सभी प्रकारका इतना बड़ा वैषम्य कैसे हो जाता है ? पर हमलोग ऐसा क्यों मान लें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कि हृत्पुरुषरूपमें जो बीज या स्फुलिंग हैं ये एक ही समय, एक-सी ही अवस्थामें, एक-सी ही शक्ति और स्वभावसे युक्त होकर एक साथ ही अपने मूल स्थानसे किसी दौड़की होड़ लगाकर निकल पड़े हों। माना कि श्रीभगवान् ही सबके मूल हैं और परमात्मा सबमें सर्वत्र समवस्थित हैं; परन्तु यह मान बैठनेका क्या कारण है कि व्यक्त होनेकी इस लीलामें भगवान् जो अनन्त हैं, अनन्त प्रकारसे अपने-आपको नहीं प्रकट कर रहे हैं; यह प्राकट्य विभिन्न प्रकार-का न होकर असंख्य रूपोंमें एक-सा ही क्यों हो ? इनमें-से कितने ही बीज अन्य बीजोंके पहले ही छूट पड़े होंगे और उनके पीछे उनका दीर्घकालीन विकास होगा, और इनमेंसे कितने नवजात और कच्चे और अधपके ही होंगे, क्या ऐसा नहीं हो सकता ? अब, जो बीज एक साथ चल पड़े उनमें भी ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि कुछकी चाल बहुत तेज हो और कुछ अलसाते हुए चलते हों, बड़ी कठिनाईसे आगे बढ़ते हों या चक्कर काटते रहते हों ? और फिर विकासकी एक खास चाल है, विकासकी एक विशेष अवस्थामें ही पशु-प्रान्त अतीत होकर मानवक्रम आरम्भ होता है। वह मानव-क्रम क्या है जो एक बहुत बड़ी क्रान्ति या उलट-पलटका द्योतक है ? पशु-प्रान्तकी सीमातक प्राण और शरीर ही परिणत होते रहते हैं—मानव-सृष्टिके उपक्रमके लिये क्या यह आवश्यक नहीं है कि मनोमय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरुषका इसलिये अवतरण हो कि वह आकर प्राण और शरीरका विकास अपने हाथमें ले ? और क्या यह भी नहीं हो सकता कि जो मनोमय पुरुष इस प्रकार उतर आते हैं वे सब एक ही शक्ति और क़दके न हों, और फिर, वे एक-सी ही प्राणचेतना और शरीरचेतनाको अपने कर्मका उपादान न बनावें ? फिर ऐसी भी एक मान्यता है कि इस वर्त्तमान नामरूपात्मक जगत्के ऊपर एक देवराज्य है, इस देवराज्यके देवता इस जगत्में उतर आते हैं जिसका परिणाम स्पष्ट ही इस प्रकारका महान् तारतम्य और वैषम्यादि उत्पन्न करनेके रूपमें ही होता होगा। ये देवता मानव-प्रकृतिमें जन्मके द्वारा व्यक्त होकर जगत्के इस खेलमें उतर आते और इसमें अदल-बदलतक करते हैं। इस तरहकी कितनी ही बातें हैं और इसलिये यह प्रश्न गणितकी-सी किसी रीतिसे कसकर नहीं उपस्थित किया जा सकता।

ऐसे प्रश्नोंमें, विशेषकर जहाँ बुद्धिको चकरानेवाले परस्परविरोधी रूप सामने हैं, सबसे बड़ी कठिनाई तो प्रश्नको ठीक तरहसे उपस्थित न करनेके कारण ही उत्पन्न होती है। उदाहरणार्थ, पुनर्जन्म और कर्मके सम्बन्धमें जैसी लोक-धारणा है उसको देखो—इस धारणाकी बुनियाद महज मन-बुद्धिकी यह मान्यता है कि प्रकृतिके सब कर्म नैतिक ही होते हैं और सबके साथ समानरूपसे कांटेतौल न्याय-नीतिका बर्ताव हो, इसी हिसाबसे हुआ करते हैं—पाई-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाईका हिसाब, किसको क्या पुरस्कार और क्या दण्ड दिया जाय अथवा किस कर्मका क्या फल हो इसका पूरा-पूरा गणित रहता है और यह सब है 'जसको तस' के सम्बन्धमें मनुष्यकी जो कल्पना है उसीकी बुनियादपर ! परन्तु प्रकृति न्यायनीतिबद्ध नहीं है, वह अपना काम बनानेके लिये नैतिक, नीतिविरुद्ध और अनैतिक सभी गुणों और गुणकर्मोंसे बिना किसी तारतम्यके अधाधुन्ध काम किया करती है। प्रकृति बाह्यतः अपना कार्य करा लेने अथवा जीवनके खेलकी विलक्षण विविधताके उपयुक्त परिस्थिति निर्माण करनेके सिवाय और किसी बातकी परवा करती नहीं दीखती। प्रकृतिका जो अन्तःस्वरूप है अर्थात् चिद्रूपा आत्मशक्तिका, उस पहलूसे प्रकृतिका कार्य तदधीन जो जीव हैं उनका क्रमशः अनुभूतिके द्वारा आध्यात्मिक विकास कराना है—और इस विकाससाधनमें जीवोंकी अपनी-अपनी इच्छाका भी सम्बन्ध रहता ही है। ये सब भले आदमी बड़े सोच और चक्करमें पड़ जाते हैं कि भला यह क्या बात है जो हमारे-जैसे नेक आदमियोंके यहाँ नेकी करते हुए भी बदी होती है—इस प्रकारकी बदकिस्मती और आफतें घेरे रहती हैं जिनका कोई कारण समझमें नहीं आता। पर ये आफतें क्या, सचमुच ही, उनके ऊपर किसी ऐसी शक्तिसे आती हैं जो उनके बाहरकी शक्ति हो या यह कर्मका कोई ऐसा चक्कर है जो यन्त्रवत् घूमा करता है ? क्या यह सम्भव नहीं कि स्वयं जीव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ही—बाह्य मन नहीं, स्वयं अन्तःस्थित आत्मा ही—इन सब चीजों-को, अपना विकास करानेके क्रमका एक आवश्यक अंग जान-कर स्वीकार और ग्रहण करता हो जिसमें कि वह यथावश्यक अनुभवकी प्राप्तिके द्वारा तेजीके साथ आगे बढ़े, इन आफतोंमेंसे चीरकर अपना रास्ता निकाले, ऐसा करनेमें चाहे इससे बाह्य जीवन और बाह्य शरीरका बहुत बड़ा ह्रास भी होता हो तो कोई परवा नहीं ? क्या यह बात तो नहीं है कि ये सब कठिनाइयाँ, विघ्न-बाधाएँ और आपदाएँ विकासोन्मुख जीव-के लिये—अन्तःस्थित आत्माके लिये वे साधन ही हों जिनसे जीवका विकास होता, उसकी शक्ति बढ़ती, अनुभव विस्तृत होता, आध्यात्मिक विजयका अभ्यास होता है ? हो सकता है कि इन सब बातोंकी यही विधि बैठायी गयी हो और यह केवल पुण्यका फल और पापका दण्ड दिलानेवाले, पाई-पाई पुण्य और पापका हिसाब लगानेवाले विधानका ही सवाल न हो।

तुम्हारे मित्रने, इस पत्रमें, पशुहत्याके सम्बन्धमें जो प्रश्न उपस्थित किया है, उसके सम्बन्धमें भी यही बात समझनी चाहिये। प्रश्नकी बुनियाद वही अपरिवर्त्तनीय नैतिक पाप-पुण्य-विचार है जिसे लोग सभी बातोंपर घटाया करते हैं—प्रस्तुत प्रश्न भी यही है कि पशुहत्या करना क्या किसी भी हालतमें ठीक हो सकता है, क्या यह न्याय है कि तुम्हारे देखते कोई पशु यन्त्रणाएँ सहता रहे और वह भी उस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अवस्थामें जब तुम उसे जानसे मारकर उन यन्त्रणाओंसे मुक्त कर सकते हो ? इस तरहसे उपस्थित किये हुए प्रश्नका कोई निस्सन्दिग्ध उत्तर नहीं हो सकता, क्योंकि उत्तर गृहीत तत्त्वोंके आधारपर होगा, पर यहाँ विचारमें प्रवृत्त बुद्धिके सामने कोई ऐसे स्वीकृत तत्त्व नहीं है। वास्तवमें, और भी बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनसे लोग, ऐसे कठिन प्रसंगमें, इस तुरत-फुरत काम बनानेवाले, दयाके रास्तेसे जी छुड़ानेकी ओर ही झुक पड़ते हैं—प्राणोंकी दुर्बलतासे ऐसी यन्त्रणाओंको देख या सुन न सकना, हकनाहककी हलाकानी, परेशानी और असुविधा—ये सब ऐसी ही बातें हैं जिनसे यह कल्पना बलवती हो उठती है कि इस असह्य दुःखको भोगनेके बजाय पशु स्वयं ही उससे छूटनेके लिये मरना ही चाहता होगा। पर पशु वास्तवमें क्या चाहता है—क्या यह नहीं हो सकता कि इस दारुण दुःखके रहते भी पशु जीना ही चाहता हो, तनकी ममतासे बिछुड़ना न चाहता हो ? अथवा क्या यह नहीं हो सकता कि जीवने स्वयं ही इन दुःखादिकोंको इसलिये वरण किया हो कि विकासका क्रम शीघ्र पूरा होकर जीवनकी उच्चतर अवस्था प्राप्त हो ? और यदि ऐसा हो तो उसके जीवनका अन्त करनेवाली यह दया उसके विकास-साधक कर्ममें बाधक भी तो हो सकती है। असलमें ठीक निर्णय प्रत्येक अवस्थामें भिन्न-भिन्न हो सकता है और ऐसा निर्णय देना उस ज्ञानपर निर्भर करता है जो मनुष्यकी बुद्धिको प्राप्त नहीं है—और यह भी जोर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देकर कहा जा सकता है कि जबतक मनुष्यको वह ज्ञान प्राप्त नहीं है तबतक उसे किसीका प्राण लेनेका कोई अधिकार नहीं है। इसी सत्यकी अस्पष्ट-सी प्रतीतिके कारण ही धर्म और सदाचारमें अहिंसाधर्म विकसित हुआ—और फिर वह अहिंसाधर्म भी एक मानसिक नियम ही होकर रहा जिसका व्यवहारमें प्रयोग होना असम्भव हो गया है। और सम्भवतः इन सब बातोंका यही तात्पर्य निकलता है कि अभी जैसी स्थिति है उसमें हमलोगोंको प्रत्येक प्रसंगमें तत्तत् प्रसंग-के अनुसार, अपनी दृष्टिमें जो बात सर्वोत्तम जँचे वही करना चाहिये; पर यह भी समझ लेना चाहिये कि इन प्रश्नोंका ठीक निर्णय तभी हो सकता है जब हम उस महत्तर प्रकाशकी ओर, उस बृहत्तर चैतन्यकी ओर आगे बढ़ें जिसमें मानव-बुद्धिके द्वारा उपस्थित होनेवाले ये प्रश्न इस रूपमें उठेंगे ही नहीं, क्योंकि तब हमें वह दृष्टि प्राप्त होगी जिस दृष्टिमें संसारका कुछ और ही रूप देख पड़ेगा और निर्णय-निर्देश करनेवाली शक्ति भी कोई ऐसी शक्ति होगी जो हम लोगोंको अभीकी इस अवस्थामें प्राप्त नहीं है। बौद्धिक या नैतिक नियम 'अभावे शालिचूर्णं वा' जैसा है और मनुष्योंको बड़ी अनिश्चितताके साथ, लुढकते-पुढकते इसका उपयोग तबतक करना ही पड़ता है जबतक आत्मज्योतिके प्रकाशमें सब वस्तुओंको पूर्णरूपमें देखनेकी सामर्थ्य उन्हें नहीं प्राप्त होती।

२९ जून १९३२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुनर्जन्म और व्यक्तित्व

पुनर्जन्मके सम्बन्धमें जो सामान्य भ्रान्त लोकधारणा है, उसे तुम आश्रय न दो। लोगोंकी धारणा यह है कि अहोबल पण्डितने ही जगेसर मिसिरके रूपमें पुनः जन्म लिया है, बिल्कुल वही आदमी हैं, वही व्यक्तित्व है, वही आचरण है, वैसी ही विद्या-बुद्धि और वैसा ही पराक्रम है; अन्तर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

केवल इतना ही है कि पूर्वजन्ममें वे सिरपर एक बड़ा भारी पग्गड़ बाँधते थे और अब दुपल्ली टोपी देते हैं, पहले संस्कृतमें भाषण करते थे और अब ठेठ हिन्दी बोलते हैं। परन्तु यह बात नहीं है। उसी व्यक्तित्व या आचरण-का, कल्पारम्भसे कल्पान्ततक बार-बार पुनरावर्त्तन हो, भला इसका प्रयोजन ही क्या हो सकता है ? जीव जन्म लेता है अनुभवके लिये, वृद्धिके लिये, विकासके लिये जिसमें कि अन्तमें वह इस योग्य हो जाय कि पृथिवीतकमें भगवत्तत्त्वको ले आ सके। यह कारणपुरुष है जो जन्म लेता है, कोई बाहरी व्यक्तित्व नहीं—व्यक्तित्व तो केवल एक साँचा है जिसे वह अपने उसी एक जीवनके अनुभवोंको आकृति देनेके लिये बनाया करता है। दूसरे जन्ममें वह अपने लिये दूसरा व्यक्तित्व, दूसरा पात्रत्व, दूसरे प्रकारका जीवन और कर्मक्षेत्र निर्माण करेगा। मान लीजिये कि वीरकवि वर्जिलका पुनर्जन्म हुआ, तो यह सम्भव है कि दो-एक जन्म वे कविता ही लिखें पर अब वे कोई महाकाव्य तो निश्चय ही नहीं लिखेंगे बल्कि छोटी-छोटी सुन्दर भावमय ललित गीतिकाएँ लिख सकते हैं जो वे लिखना चाहते थे पर उस जमानेमें रोममें नहीं लिख सके। फिर किसी दूसरे जन्ममें यह हो सकता है कि वे कवि ही न हों। बल्कि दार्शनिक और योगी होकर परम सत्यकी प्राप्ति और अभिव्यक्तिमें लगें, क्योंकि यह भी तो उनके उस जीवनमें उनकी चिद्भावनाकी एक धारा थी जो रुकी ही रह गयी। उसके पूर्व सम्भव है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कि वे कोई योद्धा या शासक रहे हों और एइनीज या आगस्टसके-से पराक्रम उन्होंने किये हों और बादके जन्ममें उस रूपसे उनके गीत गाये हों। तात्पर्य इस तरहसे यह जीव अपने विभिन्न अंगोंका विकाससाधन किया करता है, नया चरित्र और नया व्यक्तित्व निर्माण करता है, वृद्धिको प्राप्त होता, विकसित होता इन सब जगत्‌के अनुभवोंसे होकर आगे बढ़ता है।

यह विकासधर्मी जीव ज्यों-यों अधिकाधिक विकासको प्राप्त होता है और अधिकाधिक समृद्ध और विविध बनता जाता है त्यों-त्यों वह अपने इन विविध व्यक्तित्वोंको मानो सञ्चित करता जाता है। ये व्यक्तित्व कभी तो कर्ममें प्रवृत्त वृत्तियोंके पीछे छिपे रहते हैं और अपना कोई रंग, कोई वैशिष्ट्य, कोई सामर्थ्य कभी-कभी जहाँ-तहाँ झलका देते हैं—अथवा कहीं ये सामने भी आ जाते हैं और तब बहुगुणव्यक्तित्व प्रकट होता है जिसमें बहुमुखी चरित्र अथवा बहुमुखी और बहुमुखी ही क्यों, कभी-कभी तो सर्वतोमुखी सामर्थ्य-सा देख पड़ता है। पर इस प्रकारसे जब कोई पूर्वव्यक्तित्व या पूर्वसामर्थ्य पूर्णतया बाहर निकल आता है तब उसका हेतु पूर्वमें किये हुए कार्यका ही पुनरावर्तन नहीं होता बल्कि उसी सामर्थ्यको नये आकार-प्रकारमें ढालना होता है जिसमें जीवके नव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विकसित जीवनके साथ उसका सामञ्जस्य बन आवे, पूर्व-कृतिकी केवल पुनरावृत्ति ही नहीं। इसलिये ऐसी अपेक्षा न करनी चाहिये कि जो पहले योद्धा और कवि थे वे फिरसे वैसे ही योद्धा और कवि होंगे। इन बाह्य लक्षणोंमेंसे कोई लक्षण फिरसे प्रकट हो सकते हैं पर बहुत कुछ बदलकर और नये जुटावमें नये सिरेसे ढलकर। उनका रुख अब दूसरा होगा, जिस दिशामें उनका प्रवाह बहेगा वह दिशा पहलेसे भिन्न होगी और उनके द्वारा वह कार्य होगा जो पहले नहीं हुआ था।

एक और बात है। पुनर्जन्ममें बाह्य व्यक्तित्व, अथवा चरित्र सर्वोपरि मुख्य बात नहीं है—मुख्यता है हृत्पुरुषकी, जो प्रकृतिके विकासके पीछे रहता और उसके साथ विकसित होता है। यह हृत्पुरुष जब इस शरीरको छोड़कर जाता है, और फिर रास्तेमें मनोमय और प्राणमय कोषको भी त्याग-कर अपने विश्राम-धाममें पहुँचता है तब यहाँतकके सब अनुभवोंका सारतत्त्व अपने संग लिये रहता है—बाह्य भौतिक घटनाओंको नहीं, प्राणके व्यापारोंको नहीं, मन-बुद्धि-की कल्पनाओंको नहीं, बाह्य व्यक्तित्वके रूपसे प्रकट होने-वाले सामर्थ्य या चरित्रको नहीं, बल्कि उस सारतत्त्वको लिये रहता है जिसे वह इन सबसे बटोर लेता है। इस सार-तत्त्वको हम वह दिव्य तत्त्व कह सकते हैं जिसके लिये इन सबकी योजना थी। यही सारतत्त्व उसका चिरस्थायी अंग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होकर रहता है और यही वह चीज है जो श्रीभगवान्‌की ओर आगे बढ़नेमें उसकी सहायता करती है। यही कारण है कि प्रायः पूर्वजन्मोंकी बाह्य घटनाओं और अवस्थाओंकी स्मृति नहीं बनी रहती—क्योंकि इस प्रकारकी स्मृति बनी रहनेके लिये यह आवश्यक है कि मन, प्राण और सूक्ष्मान्नतकके अप्रतिहत सातत्यकी ओर सुदृढ़ विकास हो; क्योंकि यद्यपि यह सब कुछ एक प्रकारकी बीजरूपा स्मृतिमें बना ही रहता है, पर यह सामान्यतः बाहर प्रकट नहीं होता। योद्धाके दिव्य भव्य तेजमें जो सार दिव्य तत्त्व था, जो उसकी राजभक्तिमें, उसकी उदाराशयतामें, उसके महान् साहसमें व्यक्त हुआ; कविकी सुसमञ्जस मनोभावनामें और उदार प्राणतामें जो दिव्य सारतत्त्व था और जो उस रूपमें व्यक्त हुआ, वह दिव्य सारतत्त्व है और वह नये रूपमें प्रकट हो सकता है, अथवा यदि जीवन भगवान्‌में लग जाय तो यह सारतत्त्व भगवत्प्राप्ति या भगवत्प्रीत्यर्थ कर्मका साधनबल हो जा सकता है।

१७ जून १९३३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस जगत्‌की पहेली

इस बातको कोई अस्वीकार नहीं कर सकता, न कोई आध्यात्मिक अनुभव इसे अमान्य करता है कि यह जगत् सुखस्वरूप और सन्तोषप्रद नहीं है; इसपर अपूर्णता, दुःख और बुराईकी बड़ी गहरी छाप लगी हुई है। यही प्रतीति ही वास्तवमें, आध्यात्मिक प्रवृत्तिका, एक प्रकारसे, मूल कारण हुआ करती है। ऐसे लोग तो बहुत थोड़े ही होते हैं जिन्हें इस समस्त दृश्यमान जगत्पर पड़ी हुई मृत्युच्छायाको देखनेसे होनेवाले भय, विह्वलता और पराभूतता, व्यथा और विरक्तिसे विवश हुए बिना ही, इससे किसी ऊँचे सत्यकी अनुभूति अपने-आप ही होती हो। परन्तु फिर भी यह प्रश्न तो है ही कि इस नामरूपात्मक जगत्‌का क्या यही वास्तविक स्वरूप है जैसा कि कहा जाता है अथवा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस जगत्‌की पहेली

कम-से-कम जबतक यह भौतिक जगत् है तबतक उसका क्या यही स्वरूप रहेगा अर्थात् क्या यही समझना होगा कि नामरूपसे अभिव्यक्त होने या सर्जन करनेका संकल्प ही सब पापोंका मूल है और इसलिये जन्मसे या नामरूपाभिव्यक्तिसे किनारा कसना ही मुक्तिका एकमात्र उपाय है ? जिन लोगोंको ऐसा या ऐसा ही कुछ प्रतीत होता है—और इन्हीं-की संख्या अधिक रही है—उनके लिये इस जंजालसे बाहर निकलनेके बने-बनाये साधन स्पष्ट निर्दिष्ट और प्रसिद्ध हैं—बिलकुल सीधा कटा-छँटा रास्ता है जो सीधे मोक्षमें पहुँचा देता है । पर यह भी तो सम्भव है कि यह जगत् ऐसा न हो, हमारे अज्ञान अथवा अधूरे ज्ञानके कारण हमें ऐसा प्रतीत होता हो—जगत्‌की यह अपूर्णता, यह बुराई और यह सारा दुःख एक प्रतिरुद्ध अवस्था या शोक-संकुल मध्यवर्त्ती मार्गमात्र हो, नामरूपात्मक जगत्‌की यह असली हालत नहीं हो, प्रकृतिमें जीव-जन्मका यह वास्तविक रूप नहीं हो। और यदि यही बात हो तो सबसे बड़ी बुद्धिमानी इस जगत्‌से भागनेमें नहीं, बल्कि यहीं विजय प्राप्त कर लेनेकी प्रवृत्तिमें है, इस जगत्‌के पीछे जो संकल्पशक्ति है उसका स्वेच्छापूर्वक साथ करनेमें है, सिद्धिके उस आध्यात्मिक द्वारका उद्घाटन करनेमें है जिसके उद्घाटित होनेसे भागवत ज्योति, ज्ञानशक्ति और आनन्दके पूर्णतया नीचे उतर आनेका खुला हुआ रास्ता बन जायगा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सभी प्रकारके आध्यात्मिक अनुभवसे यह बात सिद्ध है कि जिस नामरूपात्मक जगत्‌में हम लोग रहते हैं और जिस बद्ध चैतन्यकी तंग चौहद्दीके अंदर हम लोग भटकते और लुढकते-पुढकते हुए चलते हैं उस जगत्‌की क्षणभंगुरता और उस सीमित-चैतन्यके ऊपर एक कूटस्थ अचल ध्रुव सत्य स्थित है जिसके ये लक्षण हैं कि वह अनन्त है, स्वयम्भू है, नित्य मुक्त है, निरपेक्ष ज्योतिः स्वरूप और परमानन्दस्वरूप है। तो अब यह जो कुछ परे है और यह जो कुछ यहाँ है, इनके बीचकी खाड़ीपर क्या कोई सेतु नहीं बाँधा जा सकता अथवा क्या ये दोनों सदासे सदाके लिये परस्पर विरुद्ध ही हैं और कालकर्मको पीछे छोड़कर इस खाड़ीको एक छलाँगमें पार करके ही कोई उस सनातन ध्रुव सत्यको पा सकता है ? अनुभवकी एक लीक यहीं जाकर समाप्त हुई-सी प्रतीत होती है, बौद्धसम्प्रदाय इसी लीकपर चलकर जहाँ पहुँच सकता है ठीक वहीं पहुँचा। अद्वैत वेदान्तका एक पक्ष भी इस लीकपर चला पर उसने इसी लीकको नहीं पीटा। यह पक्ष जगत्‌का भगवान्‌के साथ एक प्रकारका सम्बन्ध तो मानता है, पर फिर भी आखिरकार, भगवान् और जगत्‌को अनुक्रमसे सत्य और मिथ्या कहकर एक-दूसरेके विरुद्ध ही रखता है। परन्तु एक और ऐसा असन्दिग्ध अनुभव भी है कि भगवान् यहाँके प्रत्येक पदार्थमें हैं, प्रत्येक पदार्थके ऊपर और पीछे भी हैं और जब हम इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस जगत्की पहेली

जगत्के बाह्यरूपसे निवृत्त होकर उसके वास्तविक स्वरूपको प्राप्त होते हैं तब यह भी अनुभूत होता है कि सब कुछ उन्हींमें है, सब कुछ वे ही हैं। यह एक बड़े मार्केकी और बड़ी उद्बोधक बात है कि ब्रह्मवित् पुरुष इस जगत्में विचरता और सब कर्म करता हुआ भी इसके सब आघातोंको झेलता हुआ भी प्रभुकी किसी पूर्ण शान्ति, प्रकाश और परमानन्दमें निवास कर सकता है। अर्थात् यह एक ऐसी बात है जो उस एक-दूसरेको बिलकुल अलग करनेवाले परस्परके विरोधसे भिन्न है—इसमें कोई रहस्य है, कोई ऐसी बात है जिसमें यह गुंजायश मालूम होती है कि इस समस्याको हल करनेके लिये इतना हताश होकर ऐसा उग्र उपाय सोचनेकी कोई आवश्यकता न रहेगी—इससे, एक अधिक सरल और कम विरोधी रास्ता निकल आवेगा। यह आध्यात्मिक सम्भावना किसी चीज़का निर्देश करती है जो इसके परे है और जो हमारे इस पतित जीवनके अन्धकारमें एक दिव्य आशाकी किरणका सञ्चार कर देती है।

और अब सबसे पहले यह प्रश्न उठता है कि क्या यह जगत् सदासे किसी एक ही अपरिवर्त्तनीय दृश्यका पुनरावर्त्तन है अथवा इसमें विकसित होनेकी कोई आन्तरिक प्रेरणा, कोई विकासोन्मुख तत्त्व, कहीं कोई ऐसा ऊर्ध्व-गामी सोपान है जो अधोमूल, बाह्यतः अचेतनरूपसे उत्तरोत्तर अधिकाधिक विकसित चेतनरूपको प्राप्त होता है,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रत्येक विकाससे और अधिक ऊपरकी ओर जो चला गया है और अन्तमें किसी ऐसी ऊँची-से-ऊँची उँचाईमें जा मिला है कि जिसका हम लोगोंको सामान्यतः अभी कोई पता नहीं है ? यदि ऐसा हो तो उस उत्तरोत्तर उत्थानका क्या आशय है, उसका क्या मूलतत्त्व है और उससे न्यायतः क्या सिद्धान्त निकलता है ? जगत्में जो कुछ देखनेमें आता है उससे यही बात सूचित होती है कि इस प्रकारका उत्थानक्रम वास्तवमें है—केवल भौतिक विकास-क्रम नहीं बल्कि आध्यात्मिक विकास-क्रम भी । इस आध्यात्मिक विकास-क्रमके विषयमें भी आध्यात्मिक अनुभूतिकी एक ऐसी परम्परा प्राप्त है जिससे यह पता लगता है कि यह जो अचेतन सत्ता है जिससे सारा उपक्रम होता है, यह बाह्यतः ही अचेतन है । कारण, इस अचेतनमें चैतन्य अपनी अनन्त कर्त्तुमकर्त्तुमन्यथाकर्त्तुं शक्तिके साथ निहित है, कोई परिसीमित चेतना नहीं बल्कि विश्व-चैतन्य और अनन्त चैतन्य, योगमायासमावृत, स्वेन मायया स्वात्मनि आबद्ध साक्षात् भगवान् जड़में आबद्ध हैं, पर आबद्ध हैं अपनी अन्तस्तलमें निहित प्रत्येक शक्तिके साथ । इस आपात् अचेतनसे यह प्रत्येक शक्ति उसकी बारी आनेपर प्रकट होती है, पहले संघटित जड़ प्रकट होता है जिसमें अन्तःस्थित आत्मा छिपा हुआ है, फिर वनस्पतियोंमें प्राण प्रकट होता है और पशुओंमें विकासोन्मुख मन और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तब मन स्वयं विकसित होकर मनुष्यमें सुव्यवस्थित और सुसंघटित होता है । यह विकासक्रम, आध्यात्मिक विकास —क्या यह विकासक्रम यहाँ आकर रुक जाता है, इस अधूरी मनोमय सत्तामें आकर जिसे मनुष्य कहते हैं ? इसका रहस्य क्या बस इतना ही है कि मनुष्य बार-बार जन्म लेकर जिस तरहसे हो यह जाने कि जन्म लेना व्यर्थ है और अपना आप ही त्याग कर दे और कूद पड़े किसी मूल अज-अक्षर कैवल्यमें या किसी शून्यमें ? कम-से-कम इस बातकी संभावना तो है, एक ऐसा स्थल तो है जहाँ इस बातका निश्चय हो जाता है कि हम जिसे मन या मन-बुद्धि कहते हैं उससे महतो महीयान् कोई और चैतन्य है और इस विकास सोपानसे यदि हम और ऊपर चढ़ चलें तो हमें वह स्थल मिलेगा जहाँ इस भौतिक अचेतना, प्राणमय और मनोमय अविद्याकी पकड़ छूट जाती है; एक चित्तत्त्व व्यक्त होनेमें समर्थ होता है और वह व्यक्त होकर इस आबद्ध भगवत्तत्त्वको अंशतया और अपूर्णतया नहीं बल्कि आमूल और पूर्णतया मुक्त कर देता है । इस दृष्टिमें विकासकी प्रत्येक उन्नत अवस्था चैतन्यकी परा और परतरा शक्तिके अवतरणसे ही साधित होती हुई प्रतीत होती है; ऊर्ध्वसे उतरनेवाली ये शक्तियाँ नीचे उतरकर जागतिक जीवनको ऊपर उठाती हैं, एक नवीन स्तर निर्माण करती हैं; पर ऊर्ध्वतम शक्तियोंका अवतरण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभीतक नहीं हुआ है, उनका अवतरण जब होगा तब उस अवतरणसे जागतिक जीवनकी पहेली समझमें आयगी और तब केवल अन्तरात्मा हीकेलिये नहीं बल्कि स्वयं प्रकृतिके लिये भी मोक्षद्वार खुल जायगा। यह वह सत्य है जिसके स्वरूपकी सहसा दमकनेवाली द्युतियोंको अधिकाधिक पूर्ण मात्रामें उस ऋषिपरम्पराने देखा है जिसे तन्त्रोंमें वीर-साधक या दिव्य-साधक कहा गया है और यह सम्भव है कि उस स्वरूपकी पूर्ण अभिव्यक्ति और अनुभूति अब होनेवाली है। इसलिये संसारपर अबतक संघर्ष और सन्ताप और अन्धकारका चाहे जितना दुःसह भार रहा हो, फिर भी यदि इसका यह महत्फल प्राप्त होनेको है तो अबतक जो कुछ हुआ उसे, उस उज्ज्वल भविष्यको प्राप्त करनेका समुत्साह रखनेवाले धीर वीर पुरुष, कोई बहुत बड़ी क़ीमत नहीं समझेंगे। कम-से-कम, अन्धकारका जो परदा पड़ा था वह इससे उठता है, एक भागवत प्रकाश जगत्‌पर छाया हुआ प्रत्यक्ष दीख पड़ता है, जो किसी दूरस्थित अप्राप्य ज्योतिकी जगमगाहटमात्र ही नहीं है।

निस्सन्देह यह प्रश्न फिर भी रहता ही है कि यह जो दुःसह दुःखभार अबतक वहन किया गया और अभीतक वहन किया जा रहा है इसकी—ऐसे इस अबुद्ध असंस्कृत उपक्रमकी, इस दीर्घ और संकट-संकुल मार्गक्रमणकी— आवश्यकता ही क्या थी, इतना बड़ा और कष्टमय मूल्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माँगनेका क्या काम था, इन सारे अशुभ और दुःखका क्या प्रयोजन था। इस अज्ञानमें कैसे गिरे और क्यों गिरे, ये दो सवाल हैं। इनमेंसे 'कैसे' के जवाबमें तो सभी आध्यात्मिक अनुभूतियोंका सारतः एक ही मत है। अर्थात् एक ही अखण्ड सत्ता जो शाश्वत सत्य है उससे विभक्त होनेसे, पृथक् होनेसे, इस पार्थक्य तत्त्वके कारण, ऐसा हुआ; यह ऐसा यों हुआ कि अहंकार अपने-आपको ही लेकर संसारमें चला, भगवान्के साथ अपना एकत्व और सबके साथ अपनी एकताको भुलाकर अपनी ही माया-ममता और प्रभुता स्थापित करने लगा; सब शक्तियोंका सामञ्जस्य करनेवाली एक जो परमाशक्ति, परमज्ञान, परा ज्योति है उसके बजाय सत्यकी प्रत्येक भावना, प्रत्येक शक्ति, प्रत्येक स्वरूप, इन अनन्त सम्भावनाओंकी महाराशिमें यथाशक्य, अपनी-अपनी पृथक् इच्छाके अनुसार, और फिर अन्ततोगत्वा एक-दूसरेको दबाकर, एक-दूसरेके साथ लड़-भिड़कर भी, अपने-आपको ही रूपान्वित करे, यही व्यवस्था चली। पार्थक्य, अहंकार, अपूर्ण चेतना और पृथक्कृत अहंभावका अँधेरेमें टटोलना और माथा खपाना, ये बातें हैं जगत्के अज्ञान और दुःखका उपादानकारण। जहाँ एक बार ये चेतनाएँ अपने पूर्ण स्वरूप अखण्ड अखिल चैतन्यसे पृथक् हुईं तहाँ फिर इनका अज्ञानमें आकर गिरना अनिवार्य ही ठहरा और इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अज्ञानका अन्तिम परिणाम हुआ अचेतना जडत्व। एक तमसाच्छन्न विशाल अचेतनसे यह पार्थिव जगत् उत्पन्न हुआ और उसमेंसे जीव उत्पन्न हुआ जो विकासक्रमसे चैतन्यको प्राप्त होनेका प्रयत्न कर रहा है; प्रच्छन्न ज्योति इसे अपनी ओर ऊपर खींच रही है और यह ऊपर चढ़ रहा है, पर फिर भी अभी इसकी आँखें बन्द हैं, अन्धेकी तरह ही यह उस गुप्त भगवत्तत्त्वकी ओर जा रहा है जहाँसे यह निकला था।

परन्तु यह सब ऐसा हुआ ही क्यों? इस प्रश्नको उठाने और इसके उत्तर देनेका जो सामान्य तरीका है अर्थात् मनुष्य स्वभावका अपना तरीका जो सदाचार-विषयक अपनी कल्पनाको ही लिये चलता और उसके अनुकूल न पड़नेवाली हर बातको अब्रह्मण्य कहकर धिक्कारता और 'हा' हा हन्त! पुकारता है, ऐसे तरीकेको तो पहले ही त्याग देना होगा। कारण, यह बात ऐसी नहीं है, जैसा कि कुछ सम्प्रदाय मानते हैं कि इस पतनका कारण कोई स्वेच्छाचारी ईश्वर है जो स्वयं विश्वके परे रहते हैं और इस पतनसे सर्वथा अलग रहते हुए जिसने अपनी मनमानी-घरजानी चलाकर इन प्राणियोंको ऐसे निर्माणकर इनके ऊपर यह अशुभ और दुःख इस तरह जबरदस्ती लाद दिया हो। जिस भगवान्‌को हम जानते हैं वे अनन्त हैं, वे अनन्त रूपोंसे प्रकट हो रहे हैं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उनके इस अनन्त प्राकट्यमें ये बातें आ गयी हैं—ये भगवान् ही हैं जो यहाँ हैं, हमारे पीछे हैं, सम्पूर्ण अभिव्यक्त जगत्‌में व्याप्त हैं, अपना सर्वव्यापक एकत्व बनाये हुए इस जगत्‌के आश्रय हैं; भगवान् ही हमारे अंदर रहते हुए स्वयं ही पतनका सारा भार और इसके अन्धकारमय परिणामको धारे हुए हैं। हाँ, वे ऊपर हैं और जैसे ऊपर अपनी पूर्ण ज्योति परमानन्द और पराशान्तिस्वरूपमें हैं वैसे ही यहाँ नीचे भी हैं; उनकी ज्योति, आनन्द और शान्ति यहाँ भी गुप्तरूपसे सबको धारण किये हुए हैं; हमारे अपने अंदर एक आत्मा है, एक केन्द्रीभूत सत्ता है जो इन सब बहिर्भूत व्यक्तित्वोंसे महान् है और जो परम परमेश्वरके समान ही, इन बहिर्भूत व्यक्तित्वोंको प्राप्त दैव या भाग्यसे, अभिभूत नहीं होती। यदि हम अपने अंदरके इस भगवदंशको ढूँढ़कर प्राप्त कर लें, यदि हम अपने-आपको यही आत्मा जानें जो भगवान्‌के ही स्वरूप और भाववाला है, तो यही हमारा मुक्तिद्वार है और संसारकी इन विषमताओंके बीचमें रहते हुए भी हम अपने इस आत्माके अंदर प्रकाशस्वरूप, आनन्दस्वरूप और मुक्तस्वरूप रह सकते हैं। इतना तो प्राचीन आध्यात्मिक अनुभूतिके प्रमाणसे ही सिद्ध है।

पर फिर भी इस विषमताका हेतु और मूल क्या है—यह पार्थक्य और अहंकार, यह कष्टसाध्य विकासवाला जगत् क्यों उत्पन्न हुआ ? श्रीभगवान्‌के दिव्य मंगलमय,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आनन्दमय और शान्तिमय स्वरूपमें यह अमंगल (अशुभ) और दुःख आकर प्रविष्ट ही क्यों हुआ ? मानव बुद्धिको उसीकी अपनी भूमिकापर यह बात समझाना बड़ा कठिन है, क्योंकि जिस चैतन्यमें इस कर्मप्रवाहका उद्गमस्थान है और जहाँपर यह पारबौद्धिक ज्ञानदृष्टिमें सर्वथा स्वतः प्रमाणसे समुचित है, वह चैतन्य समष्टि-चैतन्य है, कोई व्यष्टिभूत मानवबुद्धि नहीं; उसका देखना महाकाशमें देखना है, उसकी दृष्टि भिन्न है, ज्ञानानुभूति भिन्न है, मानव बुद्धि और प्रतीतिसे भिन्न प्रकारकी चेतना उसमें है। मनुष्यकी मन-बुद्धिको समझानेके लिये यों कहा जा सकता है कि अनन्त भगवान् स्वयं भले ही इन सब उथल-पुथल मचानेवाली विषमताओंसे मुक्त हों पर जब नामरूपात्मक जगत्‌का सृष्टिक्रम चला तब उसके साथ संकल्प-विकल्पात्मक अनन्तविध संभावनाएँ भी चलीं और इन अनन्त सम्भावनाओंमें, जिन्हें रूपान्वित करना इस नामरूपात्मक जगन्निर्माणका कार्य है, एक सम्भावना यह भी हुई कि स्वस्वरूपकी शक्ति, प्रकाश, शान्ति और आनन्दका निषेध, आपाततः दृढ़ निषेध, निर्माण हो और फिर इसका जो कुछ फल होना हो वह भी हो, इसपर यदि यह पूछा जाय कि ऐसी सम्भावना थी तो रहा करती; उसे स्वीकार करनेका क्या प्रयोजन था; तो इसका मानव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बुद्धिके लिये शक्य ऐसा उत्तर कि जो समष्टि-गत: सत्यसे अधिक-से-अधिक निकट हो, यही हो सकता है कि एकरूप भगवान्का अनेकरूप भगवान्के साथ जैसा सम्बन्ध है उसमें, या यों कहिये एकरूप भगवान् जब अनेकरूप हो चले तो इस संक्रमणमें एक स्थल ऐसा प्राप्त हुआ जहाँ यह अशुभ विकल्प अनिवार्य हो गया। ऐसा मालूम होता है कि जीवभूत आत्मा, जो विकासक्रमसे प्रकट होनेके लिये आत्मपदसे नीचे उतरता है, एक ऐसे अनिवार्य आकर्षणको प्राप्त होता है कि उससे यह अशुभ सम्भावना अनिवार्य हो जाती है—इस आकर्षणको इस जगत्में रहनेवाले मनुष्यों-की भाषामें, हम यों कह सकते हैं कि यह अज्ञातकी पुकार है, आपद्-विपद् और अपायमें घुसकर अद्भुत कर्म करनेका एक विलक्षण उत्साह है, असम्भवको सम्भव कर दिखानेकी बलवती इच्छा है, अमितको परिमित कर देनेकी प्रवृत्ति है, अपने-आप और अपने जीवनरूप उपादानसे अद्भुत-अपूर्वकी सृष्टि करनेका संकल्प है, परस्परविरोधी भावोंको लेकर उनका कठिन समन्वयसाधन करनेका विलक्षण आकर्षण है—इन बातोंके जो पारभौतिक रूप हैं, जो अति मानवचेतनामें हैं जो बुद्धिगम्य आनुमानिक रूपोंसे विलक्षण परे और महान् हैं, ये ही उस मोहके कारण हैं जिनसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जीव मूलरूपसे च्युत हुआ। ज्योतिःस्वरूप मूल सत्ताको आसन्न अवतरणकी अवस्थामें जो एक बात अज्ञात थी वह यही थी कि वह जाने इस गर्तकी कितनी गहराई है और इस अविद्या और अचेतनामें, भगवत्तत्त्वसे क्या-क्या हो सकता है। दूसरी ओर एकरूप भगवान्‌की व्यापक, करुणापूर्ण, अनुमत, स्वीकारोक्ति है एकरूप भगवान्‌का परमज्ञान जिसे यह पूरा पता है कि यह ऐसे ही होगा, यह विविध वैषम्य जो अभिव्यक्त हुआ है इसका क्रम पूरा करना होगा, इसका अभिव्यक्त होना एक अपरिमेय अनन्त ज्ञानका ही, एक प्रकारसे, एक अंश है, यह ज्ञान कि रात्रिके इस अन्धकारमें डुबकी लगाना जब अनिवार्य हुआ है तब इसीमेंसे एक अभिनव अभूतपूर्व दिवसका निकल आना भी सुनिश्चित है, और यही क्रम है जिससे परम सत्यकी एक विशेष अभिव्यक्ति साधित हो सकती है, परम सत्यके विरोधी भौतिकभाव ही क्रम-विकासकी यात्राका प्रस्थान विन्दु है, यह विषमता ही वह अवस्था है जिनकी मीमांसासे दिव्य भावका उदय होता है। स्वीकारोक्तिके इस स्वरमें उस महान् आत्मयज्ञका संकल्प भी समाया हुआ है जिससे स्वयं भगवान् ही इस अचैतन्यमें इसलिये उतर आते हैं कि अविद्या और इसके मलविक्षेपावरणोंका भार हरण कर लें, अवतार और विभूतिके नाते अवतरित होकर बीचमें दखल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दें और बलि और विजयके द्विविध चिह्नसे चिह्नित मार्गसे इसे पूर्ण सिद्धि ओर विमुक्तिकी ओर ले चलें। अनिर्वचनीय सत्यका यह बहुत ही रूपकात्मक निरूपण हुआ? हाँ, पर मानवबुद्धिको वह बात समझाना जो उसके परे है, रूपकोंके बिना कैसे बन सकता है? परम सत्यके जो परम भाव इन जागतिक घटनानुरूप रूपकोंके पीछे छिपे हुए हैं वे अपने दिव्यातिदिव्य वास्तव रूपमें तभी देखे जा सकते हैं और तभी इन सब पदार्थोंमें सारातिसार तत्त्वरूपसे वे सहज, स्वाभाविक और अन्तर्निहित स्वतःसिद्धिसे अनुभूत हो सकते हैं जब कोई इस परिसीमित बुद्धिके प्राचीरको लाँघकर पार कर जाय और उस समष्टि-चैतन्यकी अनुभूति और ज्ञानको प्राप्त हो जिसमें सब पदार्थोंका बोध तादात्म्यसे ही हुआ करता है। इस विशाल चैतन्यमें प्रविष्ट होनेसे ही कोई उसके आत्मसर्जनकी अपरिहार्यताको और उसके उद्देश्यको समझ सकता है।

यह नामरूपात्मक जगत्के सत्तत्त्वकी उस अनुभूतिका निरूपण है जो अनुभूति जीव-चैतन्यको अनाद्यनन्त सनातन सत् और कालके बीचकी सन्धिरेखापर हुआ करती है, जहाँ विकासक्रममें एक और अनेकके बीचका सम्बन्ध स्वयं निर्धारित है; संसारमें जो-जो कुछ होना है वह सब यहाँ कारणरूपसे तो निहित है, पर अभी कार्यरूपसे नहीं है। परन्तु जीवन्मुक्त पुरुष इसके भी ऊपर उठकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऐसी स्थितिमें पहुँच सकता है जहाँ सब बातें सुलझी हुई हैं, कोई पहेली नहीं है, और वहाँसे वह परम तादात्म्यके प्रकाशमें इस नामरूपात्मक जगत्‌को देखता है। वहाँ सब बातें स्वतःसिद्ध सत्तत्त्वमें पहलेसे सुनिश्चित हैं और उस निरपेक्ष चित्स्वरूप और निरपेक्ष आनन्दस्वरूपके सम्मुख स्वरूपतः ही विहित हैं जो चिदानन्दस्वरूप समस्त सृष्ट और असृष्टके पीछे आश्रयरूपसे विद्यमान है। वहाँ सत्-असत् दोनों ही अनिर्वचनीय सत्यके ज्ञानचक्षुसे देखे जाते हैं और दोनों ही वहाँ अपने मुक्त और समन्वित स्वरूपमें रहते हैं। पर वह ज्ञान मानवबुद्धिगम्य नहीं है; उसकी ज्योतिर्मयी भाषा अति दुर्बोध है, उसका प्रकाश भी इतना प्रखर है कि इस विश्वप्रहेलीके भार और अन्धकारसे अभ्यस्त और अभिग्रस्त जीवके लिये उसको यथातथ्य देख पाना या उसके रहस्यको ग्रहण करना असम्भव है। खैर, जो हो, इस तमसाच्छन्न और द्वन्द्वमय प्रदेशको पार करके जब हम आत्मस्वरूपको प्राप्त होते हैं तभी इस पहेलीका पूर्ण आशय समझमें आता है और तभी जीव इस गोरखधन्धेसे विमुक्त होता है। विमुक्तिकी उस परमावस्थाको प्राप्त होना ही इस गोरखधन्धेसे बाहर निकलनेका रास्ता और निःसंशयस्वरूप ज्ञानकी प्राप्तिका एकमात्र साधन है।

परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि वह मुक्ति और परागति कोई ऐसी ही अवस्था हो जिसमें जीवकी सत्ताका सर्वथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तिरोभास ही हो जाता हो, नामरूपात्मक जगत्से सदाके लिये सम्बन्धविच्छेद ही हो जाता हो। यह परमावस्था परम ज्ञानसे दीप्त सक्रिय मुक्ति और घनीभूत शक्तिका निर्माण कर सकती है जिससे जगत्की काया पलट जाय और विकसनकी प्रवृत्ति पूर्णताको प्राप्त हो। यह ऐसा उत्थान है जहाँसे कभी पतन नहीं होता पर ज्योति, शक्ति और आनन्दका क्षिप्र या स्वरक्षित अवतरण होता है।

जीवकी शक्तिमें जो कुछ अन्तःस्थित है वही व्यक्त होता है; पर कौन-सी चीज व्यक्त होगी, किस रूपमें होगी, उसमें शक्तियोंका किस विधि सामञ्जस्य रहेगा, विविध तत्त्व उसमें किस रूपसे व्यवस्थित रहेंगे ये बातें उस चैतन्यपर निर्भर करती हैं जो सृष्टि-शक्तिमें व्यावृत है, उस चिच्छक्तिपर निर्भर करती हैं जिसे परमभाव अपने अंदरसे प्राकट्यके लिये बाहर करता है। जीव-स्वभावमें ऐसी क्षमता है कि वह अपनी चिच्छक्तियोंका क्रम बाँध सकता और उन्हें नानाविध बना सकता है और तत्तत् क्रम और विधिके अनुसार अपना जगत् या आत्मप्राकट्यका परिमाण और परिव्याप्ति निर्द्धारित कर सकता है। व्यक्त सृष्टि जिस शक्तिके अन्तर्गत है उसके द्वारा सीमित है और उसी शक्तिके अनुसार इसकी दृष्टि और इसका जीवन होता है। इससे अधिक व्यापक दृष्टिसे देखना, इससे अधिक शक्तिमत्ताके साथ रहना,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपनी दुनियाको बदल देना इससे तभी बन सकता है जब यह अपने-आपको, इसके ऊपर जो महीयसी चिच्छक्ति है उसकी ओर उद्घाटित कर दे, उसकी ओर चले या उसे नीचे उतारे। यही तो हमारे इस जगत्में चेतनाके विकासक्रममें हो रहा है, इसी प्रयोजनके भारसे उद्यत होकर तो जड़ पार्थिव जगत्ने प्राणशक्ति और फिर मनःशक्ति उत्पंन्न की जिनसे सृष्टिको नये-नये रूप प्राप्त हुए, और अब यह मन-बुद्धिके परेकी किसी विज्ञानशक्तिको उत्पन्न करने या अपने अंदर अवतारित करानेमें यत्नवान् है। यही प्रयोजन वह सृष्टिकर्म है जो चेतनाके दो सर्वथा विभिन्न प्रकारके छोरोंके बीच हुआ करता है। एक छोरपर एक निगूढ, चैतन्य है जो अन्तःस्थित और ऊर्ध्वमें है जिसमें प्रकाश, शान्ति, शक्ति और आनन्दकी सारी क्षमताएँ अन्तर्भूत हैं और जो वहाँ सदासे ही व्यक्त हैं और यहाँ व्यक्त होनेका अवसर ढूँढ़ रही हैं। दूसरी तरफ, बाहरकी ओर और नीचे वह चैतन्य है जो चैतन्यके आपात् विरोधी भावोंसे, अचेतना, जड़ता, तामसी विवशता और दुःखार्हतासे, चलता है और उत्तरोत्तर अधिकाधिक ऊर्ध्वसे आनेवाली शक्तियोंको ग्रहण कर विकसित होता है, ये शक्तियाँ इसके द्वारा इसके अभिव्यक्तिकी सदा ही अधिकाधिक उन्नत सृष्टि कराया करती हैं, इस प्रकारसे होनेवाली प्रत्येक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नव-सृष्टि अन्तःस्थित क्षमताको कुछ-न-कुछ बाहर ले ही आती है, और इस तरह ऊर्ध्वस्थित प्रतीक्षमाण पूर्ण तत्त्वका अवतरण अधिकाधिक सम्भव होता है। यह बाह्य व्यक्तित्व जिसे हमलोग अपना 'आपा' कहते हैं, जबतक चैतन्यकी अधःशक्तियोंमें ही केन्द्रित है, तबतक उसके लिये उसका अपना ही अस्तित्व, अपना ही जीवन और उस जीवनका उद्देश्य और प्रयोजन एक बेबूझ पहेली है, एक अभेद्य गोरखधन्धा है। यदि सत्यके रहस्यकी कोई बात इस बहिर्मुख मनःप्रधान मनुष्यको बतायी भी जाय तो उसे वह ठीक तरहसे ग्रहण नहीं कर पाता और शायद कुछ-का-कुछ समझ लेता, उसका दुरुपयोग करता और उसका विरुद्धगामी होता है। इस अवस्थामें जिस दण्डका आश्रय लेकर वह इस लोकमें चलता है वह दण्ड किसी स्वानुभूत निर्धूम ज्ञानज्योतिकी अपेक्षा श्रद्धाग्निका ही, अधिक करके, बना हुआ होता है। इस अवस्थाकी सीमाके परे ज्ञानकी किसी उच्च भूमिकामें जब वह पहुँचता है (जो भूमिका उसके लिये अभी तो परचैतन्य ही है) तभी वह अपनी असमर्थता और अज्ञानके बाहर निकल सकता है। उसके पूर्ण विमोक्ष और पूर्ण बोधका तभी उदय होगा जब वह सीमोल्लङ्घन कर अभिनव परचैतन्य-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सत्ताके प्रकाशमें प्रवेश करेगा । यही वह परमपद है जो योगी-यती-तपसियोंका अभीप्सित गन्तव्य स्थान था।

परन्तु इतनेसे ही, इस जगत्में, इस सृष्टिमें कोई परिवर्त्तन नहीं होगा, किसी मुक्त पुरुषके इस संसारसे छूट जानेसे इस संसारमें किसी प्रकारका कोई परिवर्त्तन नहीं होता। परन्तु यदि इस सीमोल्लङ्घनसे न केवल आरोहण बल्कि अवरोहणका भी काम लिया जाय तो यह सीमा जो अभी एक दीवार-सी, एक आड़-सी बीचमें खड़ी है सो परम सत्की उन महती चित्-शक्तियोंके नीचे उतर आनेका रास्ता बन जाय जो अभी इस सीमाके ऊपर ही हैं। ऐसा होना पृथ्वीपर एक नवनिर्माण होना है, उन परा शक्तियोंका नीचे अवतरण होना है जो यहाँकी स्थितिको ही उलट देंगी; क्योंकि इन शक्तियोंके उतर आनेसे तमसाच्छन्न पार्थिव अचेतनासे निकलकर मन-बुद्धि के अर्द्ध प्रकाशकी ओर जानेवाली वर्तमान सृष्टिके स्थान-में, आत्मस्वरूपसिद्ध विज्ञानमयी प्रभाके पूर्ण प्रवाहसे युक्त उन्नतसृष्टिका नवनिर्माण होगा । बस, ऐसे ही समुपलब्ध आत्मस्वरूपके पूर्ण प्रवाहमें ही जीव यह जान सकता है कि इस अन्धकार और इसकी इन दुःखादि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अवस्थाओंमें उसके उतर आनेका क्या आशय और क्या तात्कालिक प्रयोजन था और साथ ही इनका (इस अन्धकार और इसकी इन आनुषङ्गिक अवस्थाओंका) सतेज रूपान्तर करके इन्हें भगवद्रूपमें परिणत कर सकता है, मायावृत या बाह्यतः विकृत भगवत्तत्त्वके रूपमें नहीं बल्कि साक्षात् श्रीभगवान्‌के रूपमें ।

जून १९३३

श्री हरिवंश प्रसाद उपाध्याय वास्कोटा
बडानाथ
23 August 1913
सं. १९७० भाद्र शुक्ल ३ बुधवार

मू० १००।—
१८३६९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu